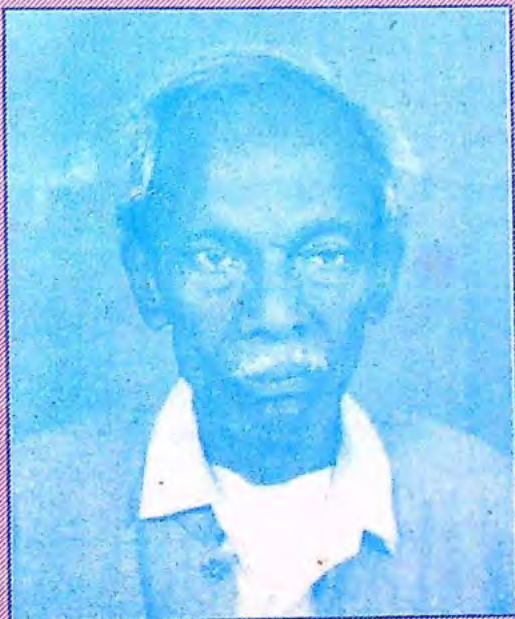


# ସ୍ମୃତି ଅର୍ଘ୍ୟ



## ଆବିର୍ଭାବ

୧୭.୭.୧୯୭୫

## ଡିଭୋରାଜ

₹ ୫.୨୦୦

## ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ପ୍ରତିନିଧାଏ

କ୍ଷୁଦ୍ର, କଟକ

ଏକଟି ଆମର ପୁଲ ବନ୍ଧିବ  
ଏଠି ପୁଲ ପୁଟେ ପୋଡ଼ାକୁ ବେ

ଏକାଦି ପ୍ରତ୍ୟକ୍

ଅଙ୍କ) ଯୋଗ

## ଶିକ୍ଷା ଓ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ

ସ୍ୱେଚ୍ଛା କର୍ମସଂଘ

ଶ୍ରୀମତୀ ସୁଶୀଳା

959 960

ପ୍ରମେୟ ପ୍ରମେୟ

ବସେ ପୁଲୁଲୁପୁ

## ଉତ୍ତର ଧର୍ମ

ସକାଳେ ଆସେ

ସଂକଳ୍ପେ ଆସେ

ପ୍ରଲେ ପ୍ରଲେ ଓ

ମାଧୁ କାଟକା ବେ

ଉଟି ଥାଏ ସଠି କ

ଅନନ୍ତ ଅନନ୍ତ କଥାରେ ଯାଏ

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045 1046 1047 1048 1049 1050 1051 1052 1053 1054 1055 1056 1057 1058 1059 1060 1061 1062 1063 1064 1065 1066 10

ଓଡ଼ିଶା ଗାଁ ବର୍ଷ

ଉତ୍କଳରେ ଥିବେ

ସଂକଳରେ ପାଠ

4000

ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଜଣେ

ଏ ପରେ ମଞ୍ଚ

ହାତୀ ବଢ଼ିଲା

964 965

1000 1000 1000

69153 691 9

ଶ୍ରୀମତୀ ଶର୍ମିଷ୍ଠା ଦେବୀ

ପାଠ ପଢ଼ାବୁଦ୍ଧି ଓ ମାନବ ଶକ୍ତି



“ଝିଅ ଜନମ ପର ଘରକୁ ନୁହେଁ,  
ପୁଅ ଜନମ ପର ଘରକୁ !”

ସେଇଥି ପାଇଁ ତ’ ନାଟ୍ୟ ଜଗତରେ  
ଚହଳ ପକାଇ ଗହଳି କରୁଛି

ଅରୁଣ ସାହୁ ନିବେଦିତ :

ଘର ଜୋଇଁଆ

ରଚନା ଓ ନିର୍ଦ୍ଦେଶନା - ଅନନ୍ତ ଓଝା

ପ୍ରସ୍ତୁତି : ଯାତ୍ରା ଟାଇଗର, ତାରିଣୀ ଗଣନାଟ୍ୟ

ସମ୍ପର୍କ

ସାବିତ୍ରୀ ପିକ୍ଚର୍ସ

ଅରୁଣୋଦୟ ନଗର, କଟକ - ୧୨

ଫୋନ - (୦୬୭୧) ୨୩୩୪୪୯୪

# ସ୍ମୃତି ଅର୍ଘ୍ୟ



ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିଅର୍ପଣ

କୁସୁପୁର, କଟକ-୭୫୪ ୨୮୫

# ସ୍ମୃତି ଅର୍ଘ୍ୟ

ସମ୍ପାଦକ

ଡକ୍ଟର ବସନ୍ତ କିଶୋର ସାହୁ

ସହ-ସମ୍ପାଦକ

ଡକ୍ଟର ଇନ୍ଦ୍ରପ୍ରଭା ସାମଲ

ଶ୍ରୀ ସଦାନନ୍ଦ ସାହୁ

ଶ୍ରୀ ସୁକୁମାର ସାମଲ

ପ୍ରକାଶକ

ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ନ୍ୟାସ

କୁସୁପୁର, କଟକ

ଅକ୍ଷର ଓ ମୁଦ୍ରଣ

ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ଅଫ୍‌ସେଟ ପ୍ରିସ୍‌ସ

ସେମିଲିଗୁଡା, କୋରାପୁଟ

ଫୋନ - (୦୬୮୫୩) ୨୨୫୮୬୦

ବୌଦ୍ଧିକ ସହଯୋଗ

କୋଡିଏ ଟଙ୍କା



## SMRUTI ARGHYA

Editor

Dr. Basanta Ki. Sahoo

Asst. Editor

Dr. Induprava Samal

Sri Sadananda Sahoo

Sri Sukumar Samal

Publisher

Nanda Kishore Samal

Smruti Nyasa

Kusupur, Cuttack

D.T.P. & Printing

Purnima Offset Printers

Semiliguda

Ph - (06853)225860

Courtsy Help

Rs. 20.00



## ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନିଧାସ

ବର୍ଷା ନିଲୟନ, କୁସୁପୁର, କଟକ-୭୫୪ ୨୮୫

ଫୋନ - ୦୬୭୧-୨୭୭୮୭୨୫

ମୋବାଇଲ-୯୪୩୭୨୩୭୩୭୦

ଉପଦେଷ୍ଟା

ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବ୍ରଜନାଥ ରଥ

ଡକ୍ଟର ମହେଶ୍ୱର ମହାନ୍ତି

ଡାକ୍ତର ଅକ୍ଷୟ କୁମାର ଜେନା

ଶ୍ରୀ ଅରୁଣ କୁମାର ପଣ୍ଡା

ଡକ୍ଟର ସତ୍ୟାନନ୍ଦ ସ୍ୱାଇଁ

ଡାକ୍ତର ବସନ୍ତ କିଶୋର ଜେନା

ଡକ୍ଟର ବିଜୟାନନ୍ଦ ସିଂହ

ସଭାପତି

ଶ୍ରୀ ପ୍ରଦୀପ୍ତ କିଶୋର ସାମଲ

କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ସଭାପତି

ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବଳରାମ ସାହୁ

ଉପ-ସଭାପତି

ଡକ୍ଟର କୈଳାସଚନ୍ଦ୍ର ବେହେରା

ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ସୂର୍ଯ୍ୟମଣି ସାମନ୍ତରାୟ

ସାଧାରଣ ସଂପାଦକ

ଶ୍ରୀ ସଦାନନ୍ଦ ସାହୁ

ସଂପାଦକ (ପ୍ରକାଶନ)

ଡକ୍ଟର ବସନ୍ତ କିଶୋର ସାହୁ

ଡକ୍ଟର ଇନ୍ଦୁପ୍ରଭା ସାମଲ

ସଂପାଦକ (କଳା, ପ୍ରଚାର ଓ ପ୍ରସାର)

ଶ୍ରୀ ଅରୁଣ କୁମାର ସାହୁ

ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀବନ୍ତ ଜେନା

ସହ ସଂପାଦକ

ଶ୍ରୀ କୈଳାସଚନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି

ଶ୍ରୀ ଶାରଦା ପ୍ରସନ୍ନ ମହାନ୍ତି

କୋଷାଧ୍ୟକ୍ଷ

ଶ୍ରୀ ସୁକୁମାର ସାମଲ

ସୋ

ଗା

ସୋ

ଗ

ଶ୍ରୀ ସଦାନନ୍ଦ ସାହୁ, ସାଧାରଣ ସଂପାଦକ

ମହମ୍ମଦିଆ ବଜାର, ମେନ୍‌ରୋଡ, କଟକ-୭୫୩ ୦୦୨

ଫୋନ - ୦୬୭୧-୨୭୦୭୨୭୧

ଡଃ ବସନ୍ତ କିଶୋର ସାହୁ,

ଘର ନଂ - ଏ/୧୧, ସୁନାବେଡା, କୋରାପୁଟ-୭୬୩ ୦୦୨

ଫୋନ : (୦୬୮୫୩) ୨୨୨୦୭୮, e-mail: basanta25@sancharnet.in

ଶ୍ରୀମତୀ ମମତା ସାମଲ, ବର୍ଷାନିଲୟନ

କୁସୁପୁର, କଟକ-୭୫୪ ୨୮୫

ଫୋନ - ୦୬୭୧-୨୭୭୮୭୨୫, ମୋ - ୯୪୩୭୨୩୭୩୭୦

## “ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନ୍ୟାସ” ଲକ୍ଷ୍ୟ ଓ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ

- ୧ ॥ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ସମସ୍ତ କୃତିକୁ - ନନ୍ଦକିଶୋର ରଚନାବଳୀ ନାମରେ ପ୍ରକାଶ କରିବା ।
- ୨ ॥ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ପୂର୍ବ ପ୍ରକାଶିତ ଦୁର୍ଦ୍ଦଶାପ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ସମୂହର ପୁନଃ ପ୍ରକାଶ କରିବା ।
- ୩ ॥ ଓଡ଼ିଆ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟକୁ ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଅବଦାନ ଶୀର୍ଷକ ଗବେଷଣା ନବନ୍ଦର ପ୍ରକାଶ କରିବା ।
- ୪ ॥ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ କୃତିର ମୂଲ୍ୟାଙ୍କନ ପାଇଁ ଗବେଷକ ନିଯୁକ୍ତି ଓ ତଥ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିବା ।
- ୫ ॥ ପ୍ରତି ବର୍ଷ ଜନ୍ମ ଜୟନ୍ତୀରେ ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସାହିତ୍ୟ ସମୀକ୍ଷା ପୁସ୍ତକ ପ୍ରକାଶ କରିବା ।
- ୬ ॥ ପ୍ରତି ବର୍ଷ ଶ୍ରାବ୍ଦ ବାର୍ଷିକରେ ଭକ୍ତି ଅର୍ଘ୍ୟ ପ୍ରକାଶ କରିବା ।
- ୭ ॥ ପ୍ରତି ବର୍ଷ ଶ୍ରାବ୍ଦ ବାର୍ଷିକରେ - ପୂର୍ବ ବର୍ଷ ପ୍ରକାଶିତ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ପୁସ୍ତକକୁ ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ଶିଶୁ-ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦାନ କରିବା ।
- ୮ ॥ ପ୍ରତି ବର୍ଷ ଜନ୍ମ ଦିବସରେ ଜଣେ ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକଙ୍କୁ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦାନ କରିବା ।
- ୯ ॥ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ରଚନାକୁ ନେଇ କ୍ୟାସେଟ, ସିଡି, ଭି.ସିଡି ଓ ସିରିଏଲ ନିର୍ମାଣ ପାଇଁ ପଦକ୍ଷେପ ଗ୍ରହଣ କରିବା ।
- ୧୦ ॥ ଛାତ୍ର ଛାତ୍ରୀ, ପାଠକ/ପାଠିକାମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କୁ ପରିଚିତ କରାଇବା ପାଇଁ ଉପଯୁକ୍ତ ବାତାବରଣ ସୃଷ୍ଟି କରିବା ।
- ୧୧ ॥ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ପ୍ରକାଶିତ କେତେକ ପୁସ୍ତକର ହିନ୍ଦୀ ଓ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଭାରତୀୟ ଭାଷାରେ ଅନୁବାଦ କରି ପ୍ରକାଶ କରିବା ।

ଏହି ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟକୁ ସଫଳ କରିବା ପାଇଁ ସମସ୍ତ ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ପ୍ରେମୀ ଆଗେଇ ଆସିବାକୁ ଅନୁରୋଧ । ଏ ଦିଗରେ ତାଙ୍କର ସମସ୍ତ ଶୁଭେଚ୍ଛା, ବନ୍ଧୁ ଓ ଛାତ୍ର ସହଯୋଗର ହାତ ବଢ଼ାଇଲେ ନିଶ୍ଚୟ ଆମେ ସଫଳ ହୋଇ ପାରିବା । ଶେଷରେ ସମସ୍ତଙ୍କର ସହଯୋଗ କାମନା କରି ରହୁଛୁ ।

**ଶ୍ରୀ ସଦାନନ୍ଦ ସାହୁ**

**ଶ୍ରୀ ସୁକୁମାର ସାମଲ**

**ଡକ୍ଟର ବସନ୍ତ କିଶୋର ସାହୁ**

## ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ନ୍ୟାସ ତରଫରୁ ପ୍ରଦତ୍ତ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ-୨୦୦୫

ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ନ୍ୟାସର ଅନେକ ଆଭିମୁଖ୍ୟ ମଧ୍ୟରୁ ଓଡ଼ିଶାର ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ସାହିତ୍ୟିକ, ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ ଓ ପ୍ରତିଭାବାନ କଳାକାରଙ୍କ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ-୨୦୦୫ ପ୍ରଦାନ କରିବାକୁ ସ୍ଥିର କରାଯାଇଅଛି । ଏହି ପରିପ୍ରେକ୍ଷାରେ ଗତ ବର୍ଷ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ରାଜ କିଶୋର ପାଢୀ ଏବଂ ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ପିତାମ୍ବର ଶରଣ ଛୁ ଏହି ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଥିଲା ।

ଏ ବର୍ଷର ୨ୟ ଶ୍ରାଦ୍ଧ ବାର୍ଷିକରେ ଅନେକଙ୍କ ମତ ଓ ଉପଦେଶକୁ ଗ୍ରହଣ କରି ସାଂପ୍ରତିକ ସମୟର ପ୍ରତିଭାବାନ ତଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ କବି ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବ୍ରଜନାଥ ରଥଙ୍କୁ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସାରସ୍ୱତ ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦାନ କରିବାକୁ ନିଷ୍ପତ୍ତି ନିଆଯାଇଛି । ସେହିପରି ଆମ ଅଞ୍ଚଳର ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ କଳାକାର, ସମାଜସେବୀ ଓ ନାଟ୍ୟ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ କୃଷ୍ଣଚନ୍ଦ୍ର ସାହୁଙ୍କୁ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ପ୍ରତିଭା ସମ୍ମାନ ଏବଂ ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଶରତ ଚନ୍ଦ୍ର ତ୍ରିପାଠୀଙ୍କୁ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦାନ କରାଯିବା ପାଇଁ ସ୍ଥିର ହୋଇଅଛି ।

“ଭକ୍ତି ଅର୍ଘ୍ୟ” ପ୍ରକାଶ ଅବସରରେ ସେହି ପ୍ରତିଭା ମାନଙ୍କ ପ୍ରତିଭାକୁ ଆମର ବାରବାର ପ୍ରଶଂସା ।

ଉତ୍କଳର ଆରାଧ୍ୟ ଦେବତା ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ଆପଣମାନଙ୍କୁ ଦୀର୍ଘ ନିରୋଗ ଓ ସାଧନାମୟ ଜୀବନ ପ୍ରଦାନ କରନ୍ତୁ । ଆପଣମାନଙ୍କ ଐକାନ୍ତିକ ନିଷ୍ଠା ଓ ନିରଳସ୍ୟ ସାଧନା ଦୀର୍ଘଜୀବି ହେଉ । ଏହା ହିଁ କାମନା ।

ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର କଟ୍ଟାସାହୁ



## ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନ୍ୟାସ

କୁସୁପୁର, କଟକ-୭୫୪ ୨୮୫

### କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ-୨୦୦୫

ବରେଣ୍ୟ କବି ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବ୍ରଜନାଥ ରଥ

ମହାଶୟ,

ଦୀର୍ଘ ଅର୍ଦ୍ଧ ଶତାବ୍ଦୀରୁ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ବ କାଳ ଧରି ସାହିତ୍ୟ ସାଧନା ଅବ୍ୟାହତ ରଖି ଆପଣ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟକୁ ସମୃଦ୍ଧ କରିଛନ୍ତି । ପ୍ରଗତିଶୀଳ ଓ ମାନବବାଦୀ ଚିନ୍ତାଧାରାର ଜଣେ ସଫଳ ସାହିତ୍ୟ ସ୍ରଷ୍ଟା ଭାବରେ ଆପଣ ସୁଖ୍ୟାତ । କାବ୍ୟ ଶିଳ୍ପୀ ଭାବରେ ଓଡ଼ିଆ କବିତା ରାଜ୍ୟରେ ଆପଣ ଯେପରି ନୂତନ ସ୍ୱାକ୍ଷର ଅଙ୍କନ କରିଛନ୍ତି, ସେହିପରି ଅନୁବାଦ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କର ଭୂମିକା ଅନନ୍ୟ । ସଂଗୀତ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ସୃଷ୍ଟି କରିଛନ୍ତି ଏକ ନୂତନ ପରମ୍ପରା ।

ଆପଣଙ୍କର ଏହି ସାରସ୍ୱତ ଅବଦାନକୁ ସ୍ମରଣ କରି ଆମେ ଆପଣଙ୍କୁ ‘କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ’ ପ୍ରଦାନ କରି ନିଜକୁ ଗୌରବାନ୍ୱିତ ମନେ କରୁଅଛୁ ।

ସଦାନନ୍ଦ ସାହୁ  
ସାଧାରଣ ସଂପାଦକ

ଡକ୍ଟର ବିଜୟାନନ୍ଦ ସିଂହ  
ଉପଦେଷ୍ଟା

ବଳରାମ ସାହୁ  
ସଭାପତି

ତାରିଖ : ୧୯।୦୫।୨୦୦୫





## ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନ୍ୟାସ

କୁସୁପୁର, କଟକ-୭୫୪ ୨୮୫

### କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ-୨୦୦୫

ନାଟ୍ୟ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ସମାଜସେବୀ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ କୃଷ୍ଣଚନ୍ଦ୍ର ସାହୁ

ମହାଶୟ,

ବିଶିଷ୍ଟ ସମାଜସେବୀ ଓ ନାଟ୍ୟ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଭାବରେ ଆପଣ ଆମ ଅଞ୍ଚଳରେ ସୁପରିଚିତ । ପଲ୍ଲୀର ବିକାଶ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କର ନିରନ୍ତର ପ୍ରବେଶର ତୁଳନା ନାହିଁ । ସାଧାରଣ ମଣିଷର ଜୀବନଧାରାରେ ନବଚେତନା ସୃଷ୍ଟି କରିବା ସହ ବିଭିନ୍ନ ସାରସ୍ୱତ ସଭା, ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ସମ୍ମେଳନ ଆୟୋଜନ କରି ଗ୍ରାମ୍ୟ ଜୀବନରେ ସୃଷ୍ଟି କରିଛନ୍ତି ଆପଣ ଏକ ନୂତନ ପରମ୍ପରା । ନାଟକ ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନର ଆଉ ଏକ ପରିଚୟ । ନାଟ୍ୟ ନିର୍ଦ୍ଦେଶନା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କର ଭୂମିକା ପ୍ରଶଂସନୀୟ ।

ଆପଣଙ୍କର ଏହି ସ୍ମରଣୀୟ ଅବଦାନକୁ ସ୍ୱୀକାର କରି ଆମେ ଆପଣଙ୍କୁ ‘କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ’ ପ୍ରଦାନ କରି ନିଜକୁ ଗୌରବାନ୍ୱିତ ମନେ କରୁଅଛୁ ।

ସଦାନନ୍ଦ ସାହୁ  
ସାଧାରଣ ସଂପାଦକ

ଡକ୍ଟର ବିଜୟାନନ୍ଦ ସିଂହ  
ଉପଦେଷ୍ଟା

ବଳରାମ ସାହୁ  
ସଭାପତି

ତାରିଖ ୧୯।୦୫।୨୦୦୫



## ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନିଧୀ

କୁସୁପୁର, କଟକ-୭୫୪ ୨୮୫

### କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ-୨୦୦୫

ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଶରତ ଚନ୍ଦ୍ର ତ୍ରିପାଠୀ

ମହାଶୟ,

ଓଡ଼ିଶାରେ ଶିକ୍ଷା ଓ ଶିକ୍ଷାୟତନର ବିକାଶ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କ ସମଗ୍ର ଜୀବନ ସମର୍ପିତ । ଜଣେ ଛାତ୍ର ବନ୍ଧଳ ଶିକ୍ଷକ ଭାବେ ଆପଣ ସୁପରିଚିତ । ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ ହୋଇ ଆପଣ ସୃଷ୍ଟି କରିଛନ୍ତି ଅନେକ କୃତି ଛାତ୍ର । ଆପଣ ସ୍ନେହ, ଶ୍ରଦ୍ଧା ଓ ଆତ୍ମୀୟତାରେ ଯେପରି ଛାତ୍ରମାନଙ୍କୁ ଆପଣେଇ ନିଅନ୍ତି ତା'ର ପଟାନ୍ତର ନାହିଁ ।

ଆପଣଙ୍କର ଏହି ମହନୀୟ ଅବଦାନକୁ ସ୍ମରଣ କରି ଆମେ ଆପଣଙ୍କୁ 'କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ' ପ୍ରଦାନ କରି ନିଜକୁ ଗୌରବାନ୍ବିତ ମନେ କରୁଅଛୁ ।

ସଦାନନ୍ଦ ସାହୁ  
ସାଧାରଣ ସଂପାଦକ

ଡକ୍ଟର ବିଜୟାନନ୍ଦ ସିଂହ  
ଉପଦେଷ୍ଟା

ବଳରାମ ସାହୁ  
ସଭାପତି

ତାରିଖ : ୧୯।୦୫।୨୦୦୫

# ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି

ଓଡ଼ିଆ ଭାଷା ସାହିତ୍ୟର ଅନେକ ପ୍ରତିଭା ଏହି ବର୍ଷକ ମଧ୍ୟରେ  
ଆମ ଠାରୁ ବିଦାୟ ନେଇଛନ୍ତି ।

ସେମାନେ ହେଲେ—

ସଚ୍ଚିଦାନନ୍ଦ ରାଉତରାୟ  
କିଶୋରୀ ଚରଣ ଦାସ  
ଗୁରୁପ୍ରସାଦ ମହାନ୍ତି  
ରାମନାଥ ପଣ୍ଡା  
ପୂର୍ଣ୍ଣାନନ୍ଦ ଦାନି  
ଚିତ୍ରାମଣି ବେହେରା

ତା ସହିତ କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଧର୍ମପତ୍ନୀ

ଶ୍ରୀମତୀ ରେବା ଦେବ

ଏବଂ ତାଙ୍କ ସହକର୍ମୀ

ଗୌରାଙ୍ଗ ଚରଣ ଧଳ ଏବଂ

ନାରାୟଣ ଚନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି ମଧ୍ୟ ଏ ମଧ୍ୟରେ ଆମ ଠାରୁ  
ବିଦାୟ ନେଇଛନ୍ତି ।

ସ୍ମୃତିନ୍ୟାସ ସମସ୍ତ ଦିବଂଗତ ଆତ୍ମା ପ୍ରତି ଗଭୀର ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି  
ଅର୍ପଣ କରୁଛି ।

କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ କମିଟି

ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନ୍ୟାସ

ଖୁବ୍ ଶୀଘ୍ର ପ୍ରକାଶ ପାଉଛି

ଖୁବ୍ ଶୀଘ୍ର ପ୍ରକାଶ ପାଉଛି

# ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ରଚନାବଳୀ-୧

ଆପଣଙ୍କର କପି ଆଜିହିଁ ସଂରକ୍ଷିତ କରନ୍ତୁ -

ଯୋଗାଯୋଗ ଠିକଣା

ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ପ୍ଲୁଟିନିଆସ,

ଶ୍ରୀ ସଦାନନ୍ଦ ସାହୁ, ସାଧାରଣ ସଂପାଦକ

ମହାନଦିଆ ବଜାର, ମେନ୍‌ରୋଡ଼, କଟକ-୭୫୩ ୦୦୨

ଫୋନ - ୦୬୭୧-୨୬୦୭୨୭୧

ଡଃ ବସନ୍ତ କିଶୋର ସାହୁ,

ଘର ନଂ - ଏ/୧୧, ସୁନାବେଡ଼ା, କୋରାପୁଟ-୭୬୩ ୦୦୨

ଫୋନ : (୦୬୮୫୩) ୨୨୨୦୭୮, e-mail: basanta25@sancharnet.in

ଶ୍ରୀମତୀ ମମତା ସାମଲ, ବର୍ଷାନିଳୟନ

କୁସୁପୁର, କଟକ-୭୫୪ ୨୮୫

ଫୋନ - ୦୬୭୧-୨୭୬୮୭୨୫, ମୋ - ୯୪୩୭୨୩୭୩୭୦



ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ପ୍ଲୁଟିନିଆସର

ସଦସ୍ୟ ହୋଇ

ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ସାହିତ୍ୟର ପ୍ରସାର, ପ୍ରଚାର ଓ ସଂରକ୍ଷଣ  
ଦିଗରେ ସହଯୋଗ କରନ୍ତୁ ।



ସଂପାଦକୀୟ...



ଯାହାଙ୍କ ପବିତ୍ର ସ୍ମୃତି ପାଇଁ ଆଜିର ଏହି ଆୟୋଜନ ଓ ‘ସ୍ମୃତି ଅର୍ଘ୍ୟ’ ପ୍ରକାଶ-  
ସେହି ଦିବ୍‌ଗତ ଆତ୍ମାଙ୍କୁ ମୋର ବାରବାର ପ୍ରଣାମ-ଆଉ ତାଙ୍କର ସୃଷ୍ଟିକୁ ମଧ୍ୟ । ସେ  
ଲେଖିଛନ୍ତି -

ଭାରି ଭଲ ଲାଗେ ମତେ ମୋ ଗାଁ                      ଆଳୁଅ ପବନ ତାର  
ଯେଉଁଠି ରହିଲେ ଯୁଆଡ଼େ ଗଲେ                      ମନେ ପଡ଼ିଯାଏ ମୋର ।

ଏହି ଦୁଇ ଧାଡ଼ି କବିତା ମଧ୍ୟରେ ଭାରି ରହିଛି ଚିରନ୍ତନ ସତ୍ୟ-ଗାଁ, ମାଟି, ପାଣି,  
ପବନ ପ୍ରତି ମମତା-ଜରୁମାଟି ପ୍ରତି ଅହେତୁକ ଆକର୍ଷଣ । କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ଏଠି  
ଯେଉଁ ଗାଁ କଥା କହିଛନ୍ତି-ସେହି ଗାଁ କୁସୁପୁର । ଓଡ଼ିଶାର ସାରସ୍ୱତ ପୀଠ-କବି, କଳାକାରଙ୍କର  
ପୀଠ । କେବଳ କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କୁ ନୁହେଁ, ତାଙ୍କର ପୂର୍ବସୂରୀ ପଲ୍ଲୀକବି ନନ୍ଦକିଶୋର  
ବଳ, ଶିଳ୍ପୀଗୁରୁ ବିନ୍ଦାଧର ବର୍ମା, ଔପନ୍ୟାସିକ ରାଜେନ୍ଦ୍ର ବର୍ମା, କବି ଜ୍ଞାନୀନ୍ଦ୍ର ବର୍ମା, ବିଦୃଷ୍ଟୀ  
ଲବଙ୍ଗଲତା ଦେବୀ, ସ୍ୱାଧୀନତା ସଂଗ୍ରାମୀ ତଥା ମାହାଜ୍ଞା ଗାନ୍ଧୀ ସଚ୍ଚିଦାନନ୍ଦ ଜେନା, ସାଂସଦ,  
ସାମ୍ବାଦିକ ତଥା ସଂପାଦକ ପ୍ରତ୍ୟୁମ୍ନ କିଶୋର ବଳ ଆଦି ଅନେକ ପ୍ରତିଭାଧର ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କୁ ଜନ୍ମ  
ଦେଇଛି । ସମସ୍ତେ ନିଜ ନିଜ କ୍ଷେତ୍ରରେ ପ୍ରତିଭା ଅର୍ଜନ କରି ନିଜକୁ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ କରିବା ସହିତ  
‘କୁସୁପୁର’ ଗାଁ କୁ ଧନ୍ୟ କରିଛନ୍ତି ।

ପରିବର୍ତ୍ତିତ ପରିସ୍ଥିତିରେ କୁସୁପୁରର ପରିବେଶ ଆଜି ବଦଳି ଗଲାଣି-ଆଜି  
ସ୍ୱରୂପା ବିରୂପା ଆଉ କୁକୁ କୁକୁ ଗୀତ ଗାଉନାହିଁ-କେବେଠୁ ତାର ମୁହାଣ ପୋତି ହୋଇ  
ଗଲାଣି । ଚିର ସବୁଜମାମୟ ଘୁମଫ ବହୁଡ଼ିଆ ଆଉ ଲଳିତଗିରି ପାହାଡ଼ର ସେ ସବୁଜ ସୁଷମା  
ଆଜି ନାହିଁ-ଗାଁର ନୁଆଁଣିଆ ବାଳଘର ଆଜି ଦ୍ୱିତଳ ପ୍ରସାଦରେ ପରିଣତ ହୋଇଛି । ଜଟିଆ  
କୁଦ, ପିଙ୍ଗୁଜେଇ ବନ୍ଧ, ନଇ ପଠା ଆଜି ବିପର୍ଯ୍ୟୟ ଓ ଛନ୍ଦଭିନ ହୋଇଛି-ମାତ୍ର କାଳର  
କଷ୍ଟଟି ପଥରରେ ଏ ମାଟିର ସନ୍ତାନମାନେ ଯେଉଁ ପ୍ରତିଭାର ବିକାଶ ଘଟାଇଛନ୍ତି-ସେ ସବୁକୁ  
ମହାକାଳ ଧୋଇ ପାରି ନାହିଁ-ଧୋଇ ମଧ୍ୟ ପାରିବ ନାହିଁ । ସେମାନେ ସମସ୍ତେ ହୋଇଛନ୍ତି  
କାଳଜୟୀ । ସେମାନଙ୍କ ସୃଷ୍ଟି ଅଛି ଆମ ଭିତରେ-ଆମ ଆତ୍ମାରେ ଓ ପ୍ରାଣରେ । ସେ ସବୁକୁ  
ସ୍ମରଣ କଲେ କୁସୁପୁର ମାଟିର ଐଶ୍ୱରିକ ସଭା ପ୍ରତି ବିଶ୍ୱାସ ଆସେ । ଅନେକ ସମୟରେ

ସାହିତ୍ୟିକ ବଂଧୁମାନଙ୍କ ତୁଣ୍ଡରେ କୁସୁପୁର ଗାଁର ପ୍ରଶଂସା ଶୁଣିଲେ ଛାତି କୁଣ୍ଢେମୋଟ ହୋଇଯାଏ - ଜନ୍ମମାଟି କୁସୁପୁରର ମାଟିକୁ ବାରବାର ମୁଣ୍ଡେରେ ମାରିବାକୁ ମନ ହୁଏ ।

ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ଓଡ଼ିଆ ସାହିତ୍ୟର ଏକ ସ୍ମରଣୀୟ ପ୍ରତିଭା । ଜଣେ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ଭାବରେ ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡେମୀ ତାଙ୍କୁ ପୁରସ୍କୃତ କରିଥିଲେ ହେଁ, ସେ ଜଣେ ସଫଳ ଗୀତିକାର, ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ କବି ଓ ନାଟ୍ୟକାର ଥିଲେ । ତାଙ୍କ ସୃଷ୍ଟିର ପ୍ରକୃତ ମୂଲ୍ୟାୟନ ଓ ଗବେଷଣା ନହେଲା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସେ ଆମ ନିକଟରେ କେବଳ ତାଙ୍କ ‘ଆମ ଘର’ କବିତା ପାଇଁ ସ୍ମରଣୀୟ ହୋଇ ରହିବେ । ତାଙ୍କ ସାହିତ୍ୟ ସାଧନା ଦୀର୍ଘ ଚାରି ଦଶନ୍ଧି ଧରି ଅବ୍ୟାହତ ରହିଥିଲା । ମାତ୍ର, ଉପଯୁକ୍ତ ମୂଲ୍ୟାୟନ ହୋଇ ନଥିବାରୁ ତାଙ୍କ ପ୍ରତିଭାକୁ ଆମେ ଠିକ୍ ଭାବେ ଚିହ୍ନି ପାରି ନାହୁଁ । ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନିଧାସ - ‘ନନ୍ଦକିଶୋର ସାହିତ୍ୟ ସମୀକ୍ଷା’ ଓ ରଚନାବଳୀ ପ୍ରକାଶ ପାଇଁ ସଂକଳ୍ପବଦ୍ଧ । ଏହା ସଫଳ ହେଲେ କିଛିଟା ତଥ୍ୟ ଲୋକଲୋଚନକୁ ଆସି ପାରିବ । ବର୍ତ୍ତମାନ ସୁଦ୍ଧା ‘ଓଡ଼ିଆ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟକୁ ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଅବଦାନ’ ଶୀର୍ଷକରେ ଡକ୍ଟର ଜ୍ୟୋତିର୍ମୟୀ ରାଜଗୁରୁ ଗବେଷଣା କରି ସଫଳ ହୋଇଛନ୍ତି । ଗବେଷଣା ନିବନ୍ଧଟି ମଧ୍ୟ ପ୍ରକାଶ ପାଇନାହିଁ । ଏହା ପ୍ରକାଶ ପାଇଲେ ନନ୍ଦକିଶୋରଙ୍କ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟର ବ୍ୟାପ୍ତି ଓ ବୈଚିତ୍ର୍ୟ ଜଣାପଡ଼ିବ ।

‘ଭକ୍ତିଅର୍ଘ୍ୟ’ ପ୍ରକାଶ ପାଇଁ ଅନେକ ଉପାଦେୟ ଲେଖା ଆମର ହସ୍ତଗତ ହୋଇଥିଲେ ହେଁ ସମୟର ସ୍ୱଳ୍ପତା ଦୃଷ୍ଟିରୁ ସେ ସମସ୍ତ ଏଥିରେ ପଡ଼ିଯିବ ହୋଇ ପାରିନାହିଁ । ସେ ସବୁକୁ ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ସ୍ଥାନ ଦେବୁ ବୋଲି ଆଶା ରଖୁଛୁ । ଆଶା ଲେଖକ ବଂଧୁମାନେ ଆମକୁ କ୍ଷମା ପ୍ରଦାନ କରିବେ ।

‘ଭକ୍ତିଅର୍ଘ୍ୟ’ର ପ୍ରକାଶ ସୀମିତ ସମୟ ମଧ୍ୟରେ କରାଯାଇଛି । ଆମ ଅଜ୍ଞାତରେ କିଛି ନା କିଛି ମୁଦ୍ରଣକଳିତ ତ୍ରୁଟି ଏଥିରେ ନିଶ୍ଚୟ ରହିଥିବ-ସେଥିପାଇଁ ସହୃଦୟ ପାଠକ ଗଣ ଆମକୁ ଉଦାର ଚିତ୍ତରେ କ୍ଷମା ପ୍ରଦାନ କରିବେ ବୋଲି ଆଶା । ପୂର୍ଣ୍ଣମା ଅପ୍‌ସେଟ ପ୍ରେସର ମାଲିକ ତଥା କର୍ମଚାରୀଙ୍କ ଅନୁଷ୍ଠ ସହଯୋଗ ହେତୁ ପୁସ୍ତକଟି ଯଥା ସମୟରେ ପ୍ରକାଶ ପାଇ ପାରିଛି । ସେଥିପାଇଁ ସଂସ୍କାର ସମସ୍ତଙ୍କୁ ସାଧୁବାଦ ଜଣାଉଛି ।

‘ଭକ୍ତିଅର୍ଘ୍ୟ’ ପ୍ରକାଶ ପାଇଁ ଯେଉଁ ବଦାନ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତି ଓ ଅନୁଷ୍ଠାନମାନେ ସେମାନଙ୍କର ବିଜ୍ଞାପନ ପ୍ରଦାନ କରି ଆମକୁ ଅନୁଗୃହୀତ କରିଛନ୍ତି ଏହି ଅବସରରେ ସେମାନଙ୍କୁ ମୁଁ ସାଧୁବାଦ ଜଣାଉଛି ।

ଶେଷରେ ପୁଣି ଥରେ ସେହି ଦିବ୍ୟଗୀତ ଆମ୍ଭଙ୍କୁ ନମସ୍କାର ଜଣାଇ ରହୁଛି ।

ସଂପାଦକ କଳ୍ୟାଣଚରଣ

## ସାଧାରଣ ସଂସାଦକଙ୍କ କଲିମରୁ ...



ମାନନୀୟ ସଭାପତି ମହୋଦୟ, ସମ୍ମାନନୀୟ ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ବିଶିଷ୍ଟ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ନନ୍ଦୀୟା ବିହାରୀ ମହାନ୍ତି ମହୋଦୟ, ସମ୍ମାନିତ ଅତିଥି ବିଶିଷ୍ଟ ସାହିତ୍ୟିକ ପ୍ରଫେସର ଡକ୍ଟର ବୈଷ୍ଣବ ଚରଣ ସାମଲ ମହୋଦୟ, ମୁଖ୍ୟବକ୍ତା ବିପ୍ଳବୀ କବି ଡକ୍ଟର ହୁସେନ ରବି ଗାନ୍ଧୀ ମହୋଦୟ, ଆଜିର ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧିତ ଓ ସମ୍ମାନିତ ଅତିଥି ବୃନ୍ଦ, କୁସୁପୁର ଗ୍ରାମର ସଜ୍ଜନ ମଣ୍ଡଳୀ ତଥା ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ପ୍ରେମୀ ସାହିତ୍ୟିକ, କବି, ସମାଲୋଚକ ତଥା ସାହିତ୍ୟପ୍ରେମୀ ବନ୍ଧୁ ଗଣ ।

ପ୍ରଥମେ ମୁଁ ଆପଣମାନଙ୍କୁ ଅଭିନନ୍ଦନ ଜଣାଉଛି-ଆମର ପ୍ରିୟ ଶିକ୍ଷକ ଓଡ଼ିଶାର ଜନପ୍ରିୟ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ତଥା କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ୨ୟ ବାର୍ଷିକ ଶ୍ରାଦ୍ଧ ଦିବସରେ ଆମେ ସମସ୍ତେ ଏକତ୍ରିତ ହୋଇପାରି ଥିବାରୁ । ଏହା ନିଶ୍ଚିତ ଆମ ପାଇଁ ଗର୍ବ ଓ ଗୌରବର ବିଷୟ । ଆମର ପୂଜ୍ୟ ଗୁରୁ ଆମ ଠାରୁ ଦୀର୍ଘ ୩ ବର୍ଷ ହେଲା ବିଦାୟ ନେଲେଣି । ତାଙ୍କର ପାର୍ଥିବ ଶରୀର ଆମ ନିକଟରେ ନଥିଲେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କର ମନ, ପ୍ରାଣ ଓ ଆତ୍ମା ଆମ ନିକଟରେ ସର୍ବଦା ବିଦ୍ୟମାନ ହୋଇ ରହିଛି-ସେଥିପାଇଁ ଏ ଉତ୍ସବର ଆୟୋଜନ-କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସ୍ମୃତିନ୍ୟାସର ପରିକଳ୍ପନା ।

ଗତ ବର୍ଷ ଏହି ଉତ୍ସବ ବାଲିଚନ୍ଦ୍ରପୁର ହାଇସ୍କୁଲ ପ୍ରାଙ୍ଗଣରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲା । ଉକ୍ତ ଉତ୍ସବରେ ବିଶିଷ୍ଟ ସାହିତ୍ୟିକ ଡକ୍ଟର ମହେଶ୍ୱର ମହାନ୍ତି, ତାଃ ନିତ୍ୟାନନ୍ଦ ସ୍ୱାଇଁ, ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ କବି ଶ୍ରୀ ବ୍ରଜନାଥ ରଥ ଯୋଗ ଦେଇ କବିଙ୍କର ଗୁଣଗାନ କରିଥିଲେ । ଗତବର୍ଷ ଏହି ଉତ୍ସବରେ କବି ରାଜକିଶୋର ପାଢ଼ୀ ଓ ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ ଶ୍ରୀ ପୀତାମ୍ବର ଶରଣଙ୍କୁ କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ-୨୦୦୪ ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଥିଲା । କିନ୍ତୁ, ଦୁଃଖ ଓ ପରିତାପର ବିଷୟ ଯେ ଗତବର୍ଷ ଉତ୍ସବରେ ଯିଏ ସମସ୍ତଙ୍କର ସମ୍ମାନର କେନ୍ଦ୍ରବିନ୍ଦୁ ଥିଲେ, ସେହି କବି ପଢ଼ୀ ଏ ବର୍ଷ ଉତ୍ସବ ବେଳକୁ ଆଉ ନାହାନ୍ତି । ସେଥିପାଇଁ ଆମେ ସମସ୍ତେ ଦୁଃଖିତ । ଏହି ଅବସରରେ ତାଙ୍କ ଅମର ଆତ୍ମାର ସଦ୍‌ଗତି କାମନା କରୁଛୁ ।

ଏ ବର୍ଷର କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ-୨୦୦୪ ପ୍ରଦାନ କରାଯିବା ପାଇଁ ଯେଉଁମାନଙ୍କୁ ମନୋନୀତ କରାଯାଇଛି ସେମାନେ ହେଲେ - ବିଶିଷ୍ଟ କବି ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବ୍ରଜନାଥ ରଥ, ସମାଜସେବୀ ତଥା ନାଟ୍ୟ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ କୃଷ୍ଣଚନ୍ଦ୍ର ସାହୁ ଏବଂ ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଶରତଚନ୍ଦ୍ର ତ୍ରିପାଠୀ । ଏହି ଅବସରରେ ମୁଁ ସେହି ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ବ୍ୟକ୍ତି ବିଶେଷଙ୍କୁ ଅଭିନନ୍ଦନ ଜ୍ଞାପନ କରିବା ସହିତ ତାଙ୍କ କୃତି, ସୃଷ୍ଟି ଓ କାର୍ଯ୍ୟର ଅଧିକ ଉନ୍ନତି କାମନା କରୁଅଛି ।

ସବୁ ବର୍ଷ ପରି କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ଜନ୍ମ ଜୟନ୍ତୀ ଆସନ୍ତା ଜୁନ ୧୨ ତାରିଖରେ ପାଳନ କରାଯିବା ପାଇଁ ଆୟୋଜନ କରାଯାଉଅଛି । ଏହି ଉତ୍ସବରେ କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଅପ୍ରକାଶିତ ରଚନାଗୁଡ଼ିକୁ ନେଇ ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ରଚନାବଳୀ-୧ ପ୍ରକାଶ କରାଯିବା ପାଇଁ ସବୁ ପ୍ରକାର ଉଦ୍ୟମ କରାଯାଉଛି । ଆପଣମାନଙ୍କର ଅଳ୍ପସ୍ୱ ସାହାଯ୍ୟ, ସହଯୋଗ ଓ ଶୁଭେଚ୍ଛା ମିଳିଲେ ଆମେ ନିଶ୍ଚୟ ଏଥିରେ ସଫଳ ହେବୁ ବୋଲି ମୁଁ ଆଶାବାଦୀ ।

କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ଥିଲେ ସମସ୍ତଙ୍କର ଆପଣାର କବି । ତାଙ୍କୁ ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡେମୀ ସମେତ ପ୍ରାୟ ୪୦ରୁ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ୱ ସଂସ୍ଥା ସମର୍ଥନ, ପୁରସ୍କୃତ ତଥା ସମ୍ମାନିତ କରି ତାଙ୍କ ପ୍ରତିଭାକୁ ଉପଯୁକ୍ତ ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିଛନ୍ତି । ସେଥିପାଇଁ ସ୍ମୃତିନ୍ୟାସ ଗର୍ବ ଅନୁଭବ କରେ । ମାତ୍ର ଦୁଃଖର ବିଷୟ ଯେ ଏ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାଙ୍କର ଜୀବନୀ କୌଣସି ଅନୁଷ୍ଠାନ ତରଫରୁ ପ୍ରକାଶ ପାଇ ନାହିଁ । ତାଙ୍କ ଜୀବନୀ ପ୍ରକାଶ ପାଇଲେ ଅନେକ ତଥ୍ୟ ଗବେଷକମାନଙ୍କୁ ମିଳି ପାରିବ ବୋଲି ଆମେ ଆଶା ପ୍ରକଟ କରୁଛୁ । ଆଜି ଆମର ସୌଭାଗ୍ୟ ଯେ ଆମ ଗହଣରେ ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡେମୀର ଉପ-ସଭାପତି ଡକ୍ଟର ହୁସେନ ରବି ଗାନ୍ଧୀ ଉପସ୍ଥିତ ଅଛନ୍ତି । ତାଙ୍କ ନିକଟରେ ଆମେ ନିବେଦନ କରୁଛୁ ଯେ ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡେମୀ ତରଫରୁ କବିଙ୍କର ଜୀବନୀ ପ୍ରକାଶ କରାଗଲେ ଆମେ ଅନୁଗୃହୀତ ହେବୁ । ଏହା ଫଳରେ କବିଙ୍କର ପରିଚୟ ଅଧିକ ବ୍ୟାପ୍ତ ଓ ପ୍ରସାରିତ ହୋଇପାରିବ । ଆଶା ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଗାନ୍ଧୀ ମହୋଦୟ ଏ ଦିଗରେ ଆଶୁ ପଦକ୍ଷେପ ଗ୍ରହଣ କରି ଆମକୁ ଖୁସି କରାଇବେ ।

ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନ୍ୟାସ ଏକ କ୍ଷୁଦ୍ର ଅନୁଷ୍ଠାନ । ଆପଣମାନଙ୍କୁ ଆତିଥେୟତା ପ୍ରଦାନ କରିବାରେ ଯଦି କିଛି ତ୍ରୁଟି ରହିଥାଏ, ତେବେ ଆପଣମାନେ ଆମକୁ ସହୃଦୟତାର ସହିତ କ୍ଷମା କରିବେ । ଆପଣମାନଙ୍କର ସଦ୍‌ବିଚ୍ଛା, ଶୁଭେଚ୍ଛା ଆମମାନଙ୍କୁ କିଛି କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ପାଇଁ ନିଶ୍ଚୟ ପ୍ରେରଣା ଯୋଗାଇବ ।

ଶେଷରେ ମଞ୍ଚାସୀନ ଅତିଥି ଓ ମୋ ସମ୍ମୁଖରେ ଥିବା କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ପ୍ରତିଭାର ପ୍ରଶଂସକ, ସହଯୋଗୀ ବଂଧୁ ଓ ଅନୁଷ୍ଠାନମାନଙ୍କୁ କୃତଜ୍ଞତା ଜଣାଇ ରହୁଛି ।

॥ଉଡ଼ି॥

ଆପଣମାନଙ୍କର ପ୍ରତିଭାମୁଗ୍ଧ

**ଶ୍ରୀ ସଦାନନ୍ଦ ସାହୁ**

ସାଧାରଣ ସମ୍ପାଦକ

ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନ୍ୟାସ

କୁସୁପୁର, କଟକ





## କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ଉତ୍ସବ

ସ୍ଥାନ : ନନ୍ଦ କିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର, କୁସୁପୁର

୧୯ ମେ ୨୦୦୫

ସାରସ୍ୱତ ସମାବେଶ

କାର୍ଯ୍ୟସୂଚୀ

ସକାଳ ୯ଘଣ୍ଟା

କବିଙ୍କ ସ୍ମୃତିପୀଠରେ ଶ୍ରଦ୍ଧାସୁମନ ଅର୍ପଣ

ସକାଳ ୧୦ଘଣ୍ଟା

କବିତା ପାଠୋତ୍ସବ ଓ କବି ସମ୍ମିଳନୀ

ଅପରାହ୍ନ ୩ଘଣ୍ଟା

ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ଦ୍ୱାରା କବିଙ୍କ ରଚିତ କବିତା ଆବୃତ୍ତି

ସଂଧ୍ୟା ୫.୩୦ମି

ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ ଉତ୍ସବ

ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି

ଶ୍ରୀ ନବୀୟା ବିହାରୀ ମହାନ୍ତି,

ବିଶିଷ୍ଟ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରଫୁଲ୍ଲ

ସମ୍ମାନିତ ଅତିଥି

ପ୍ରଫେସର ଡଃ. ବୈଷ୍ଣବ ଚରଣ ସାମଲ

ମୁଖ୍ୟ ବକ୍ତା

ଡଃ. ହୁସେନ ରବିରାହୀ

ଉପ ସଭାପତି, ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡେମୀ

ସଭାପତି

ଶ୍ରୀ ବଳରାମ ସାହୁ,

କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ସଭାପତି

କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନିଧୀ

ସ୍ୱାଗତ ସମ୍ବୋଧନ

ଅଧ୍ୟାପକ ଡଃ. ବିଜୟାନନ୍ଦ ସିଂହ,

ଉପଦେଷ୍ଟା, କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନିଧୀ

ଧନ୍ୟବାଦ ଅର୍ପଣ

ଅଧ୍ୟାପକ ଡଃ. ବସନ୍ତ କିଶୋର ସାହୁ

ସମ୍ପାଦକ (ପ୍ରକାଶନ କମିଟି)

କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ସ୍ମୃତିନିଧୀ

# ସୂଚୀପତ୍ର

କ୍ର.ନ.	ବିଷୟ	ଲେଖକ	ପୃଷ୍ଠା
୧।	କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ଏକ ଆଂଶିକ ଅଧ୍ୟୟନ	ରାଜ କିଶୋର ପାଢୀ	୧
୨।	ଶ୍ରୀକାଞ୍ଚଳି	କ୍ଷୀରୋଦ ଚନ୍ଦ୍ର ପୋଥାଳ	୫
୩।	ଶିଶୁ ପ୍ରାଣର କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର	ଦୟାନିଧି ବେହେରା	୭
୪।	ନନ୍ଦ କିଶୋର ଶିଶୁ ଜିଜ୍ଞାସା	ଡଃ ଜହ୍ନପ୍ରଭା ସାମଲ	୮
୫।	ବଉଳ ଫୁଲର ବାସରେ ବାସରେ	ବିଶ୍ୱେଶ୍ୱର ମହାନ୍ତି	୧୦
୬।	ମୋର ଗୁରୁଦେବ	ଶରତ ଚନ୍ଦ୍ର କର	୧୧
୭।	ସେଇ କବି ଅକ୍ଷୟ ଅମର	ରବୀନ୍ଦ୍ର ନାଥ ସାହୁ	୧୬
୮।	ସାରସ୍ୱତ ସାଧକ ନନ୍ଦ କିଶୋର	ଡଃ କୈଳାସ ଚନ୍ଦ୍ର ବେହେରା	୧୭
୯।	ଘାସ ପରି ନିବିଡ଼	ଡକ୍ଟର ଲାବଣ୍ୟ ଚନ୍ଦ୍ର ସାହୁ	୨୨
୧୦।	ମହକ	ପ୍ରଭାତ କୁମାର କର	୨୩
୧୧।	କହିତ ନୁହଁଇ ଭାରତୀରେ	ଗୋବିନ୍ଦ ଚନ୍ଦ୍ର ମହାପାତ୍ର	୨୪
୧୨।	ସାରସ୍ୱତ ଓ ଶୈକ୍ଷିକ ସାଧନା ପଥରେ ଯୁଗଯାତ୍ରୀ ନନ୍ଦ କିଶୋର	ପ୍ରଫେସର ଜଗନ୍ନାଥ ମହାନ୍ତି	୨୫
୧୩।	ଷୋକକଳାର ନାୟକ ନନ୍ଦ କିଶୋର	ନବୀୟା ବିହାରୀ ମହାନ୍ତି	୨୮
୧୪।	ଶର ପ୍ରଣାମ	ପ୍ରଫୁଲ୍ଲ କୁମାର ସାହୁ	୩୦
୧୫।	ସ୍ମୃତିରେ ସ୍ମୃତିର ନନ୍ଦ କିଶୋର	ବୀରେନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି	୩୧
୧୬।	ବାଟ ଭାଙ୍ଗି ପେରିଯିବା ବେଳେ	ନିରଞ୍ଜନ ଜେନା	୩୩
୧୭।	ଆପଣ ଭାଗ୍ୟବାନ	ସୂର୍ଯ୍ୟମଣି ସାମନ୍ତରାୟ	୩୫
୧୮।	କୋଉ ଦିନ ସତେ ଆସିବ କୁହ	ଡକ୍ଟର ସୁନାମଣି ରାଉତ	୩୧
୧୯।	ସର୍ବେ ଚଳିବେ କାଳ ବଳେ ଯଶ ରହିବ ମହୀ ତଳେ	କୈଳାସ ଚନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି	୪୧
୨୦।	ବିରୂପା କୁଳରେ ବିଷୁବ ବିହାର	ମହାଦେବ ମହାନ୍ତି	୪୪
୨୧।	ଗୁରୁ ପ୍ରଣାମ	ନିକୁଞ୍ଜ ଜେନା	୪୬
୨୨।	ଅନନ୍ୟ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର	ଶାନ୍ତିନୁ କୁମାର ସାହୁ	୪୯
୨୩।	ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟରେ ଜଣେ ପଲ୍ଲୀ କବି	ଡଃ ମହେଶ୍ୱର ମହାନ୍ତି	୫୦
24.	Nanda Sir-Humble & Humane	Capt. D.K. Mohanty	54
୨୫।	ଅପାଶୋରା ମୁହୂର୍ତ୍ତ	ଏକାଦଶୀ ସେଠୀ	୫୭
26.	A Person who would touch once heart	Sanghamitra Jena	58
27.	The Pied Pier of Orissa	Jachindra Rout	59



# କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ

## ଏକ ଆଂଶିକ ଅଧ୍ୟୟନ

ରାଜ କିଶୋର ପାଢ଼ୀ

ବେଳେବେଳେ ଗୋଟିଏ କବିତା କିମ୍ବା ଗୋଟିଏ କାହାଣୀ ଜଣେ ଜଣେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ପାଠକ ପାଖରେ ଚିର ସ୍ମରଣୀୟ କରିଦିଏ । ଅଜସ୍ର ଲେଖାକୁ ପଛରେ ପକେଇ ସେଇ ଲେଖାଟି ତାକୁ ଅମର କରିବାରେ ସମର୍ଥ ହୁଏ । ଅନ୍ୟ ଲେଖା ସବୁ ସଫଳ ହେଲେ ବି ପାଠକ ମନରେ ସମାନ ପ୍ରଭାବ ପକେଇ ପାରନ୍ତି ନାହିଁ । ସେମିତି ଉଦାହରଣ ହେଲା ଗୋଦାବରୀଶଙ୍କ ‘କାଳିକାଈ’, ମାନସିଂହଙ୍କ ‘ମହାନଦୀରେ ଜ୍ୟୋତ୍ସ୍ନା ବିହାର’ କିମ୍ବା ଗୋଦାବରୀଶ ମହାପାତ୍ରଙ୍କ ‘ଊଠ କଙ୍କାଳ’ ପ୍ରଭୃତି । ସେଭଳି ସୃଷ୍ଟିରେ ଥିବା ବିଶେଷ ପ୍ରକାର ଆବେଦନ ତାକୁ ଅନନ୍ୟ କରିଦିଏ ।

ସେଇମିତି ପ୍ରାଥମିକ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ପଢ଼ା ହେଉଥିବା କବିତାଟିଏ ‘ଆମ ଘର’, ସେଠି ମାଆ, ‘କାଈ ରଗଡେ ଶାଗ ଖରଡେ’, ‘ପରଜାପତି ତରକାଅତି’ର ଦୃଶ୍ୟଟିଏ ଭାସିଯାଏ । ଅନେକ ଦିନ ତଳେ ଯେତେବେଳେ ପ୍ରଥମେ କବିତାଟି ଦୃଷ୍ଟିକୁ ଆସେ ଏକ ମୁଗ୍ଧ ଅନୁଭବରେ ଉପଭୋଗ କରେ ସେଇଟିକୁ, ସେଠୁ ଖୋଜେ ପ୍ରସ୍ତାବ । ବହିରେ ମିଳନ୍ତି ନାହିଁ । ଯେଉଁମାନେ ପିଲାଙ୍କ ଲାଗି ଲେଖୁଛନ୍ତି ସେଇମାନଙ୍କୁ ମନେ ମନେ ଖୋଜେ ଓ ଠିକ୍ ଧରି ହୋଇଯାଏ ଇଏ କାହାର ଲେଖନୀ ପ୍ରସୂତ । ପରେ ମୋର ଅନୁମାନ ଓ ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ଠିକ୍ ବୋଲି ଜାଣେ । ଶୈଳୀ ଠାରୁ ପ୍ରସ୍ତାବ ପୃଥକ୍ ହେବେ କେମିତି ! ତେଣୁ ଲେଖକଙ୍କ ନାଆଁ ନଜାଣି ମଧ୍ୟ ଲେଖାରୁ ତାଙ୍କୁ ଜାଣି ହୁଏ ।

ସେଇ ଗ୍ରାମୀଣ ପରିବେଶ ଓ ଜୀବନ ବୋଧର ନିଖୁଣ ଓ ନିପୁଣ ଆଲେଖ୍ୟ । କାହା ଲେଖନୀର କୁହୁକ ସ୍ପର୍ଶ ଥିବ ସେଥିରେ ! ସେଇ ପଲ୍ଲୀ ପ୍ରାଣତା କେଉଁଠୁ ମିଳିବ ! ହୁଏତ ଖୋଜିଖୋଜି ପଲ୍ଲୀକବି ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କ ଗାଆଁ କୁସୁପୁର ଯାଏ ଯିବାକୁ ହେବ । ସମାନ ଆତ୍ମୀୟତାର ଆଉ ଜଣେ ପ୍ରସ୍ତାବ ମିଳିଯିବେ ସେଇ ବିରୂପା କୁଳରେ । ଏକା ନାମ, ଖାଲି ସାଙ୍ଗିଆ, ସାମଲ । କେଉଁ ପତ୍ର ପତ୍ରିକାରେ କବିତାଟିଏ କି ତାଙ୍କର ବହିଟିଏ ହେଉ, ପଢ଼ି ବସିଲେ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ସ୍ବାତନ୍ତ୍ର୍ୟ ବାରି ହୋଇ ପଡ଼େ । ସରଳ ଓ ସ୍ବାଭାବିକ ଢଙ୍ଗରେ କବିତାର କୁହୁକ ଓ କୁହୁତାନ ସେ ସୃଷ୍ଟି କରିପାରନ୍ତି, କିଛି ଆତମର, ଶବ୍ଦ କସରତ୍, ଉପକ୍ରମ, ଆଭରଣ କି ଅଳଙ୍କରଣ ନାହିଁ । ତଥାପି ସୁନ୍ଦର ସିଧା ଓ ସହଜ । ଯେମିତି ମଫସଲୀ ଝିଅଟିଏ କି ଲାଜକୁଳୀ ଲତାଟିଏ । କେଉଁ ରାଜୋଦ୍ୟାନର ସଯନ୍ତ୍ର ପାଳିତ ଗୋଲାପ ନୁହେଁ । ପ୍ରାକୃତିକ ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ ପରି ଅବଧାରିତ ଓ ଆଲୁକାୟିତ ।

ହେଲ ଯିମିତି, ‘ମୁଁ କହିବି କଥାଟିଏ’, ଭିତରେ ପଥର ଥିଲି ମୁଁ ଗୋଡ଼ି ପାଲଟିଲି, ଆଜି ମୁଁ ପାଲଟି ଯାଇଛି ବାଲି କବିତାଂଶ ପ୍ରକୃତିର ଅବଲୀଳାକୁ ସିଧା ଓ ସରଳ ଭାବରେ ଉପସ୍ଥାପନ କରୁଛି ଓ ପ୍ରକୃତି ପର୍ଯ୍ୟବେକ୍ଷଣରୁ ଇଶ୍ବରଙ୍କ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବାଟ ଫିଟି ଯାଇଛି । ସେଇ ବହିର ‘ଆମେ କିଆଁ ତାକୁ ଛୁଇଁବା ନାହିଁ ମା, କଣ ହୋଇଛି ତାର’ ? ଭଳି ପ୍ରଶ୍ନ ଭିତରେ କବି ଆମ ସମାଜ ଜୀବନର ଚିତ୍ରଟିଏ ଶିଶୁଟି ମୁହଁରେ ଅରୁଣା ପ୍ରଶ୍ନ ପତାରି ଆଜି ଦିଅନ୍ତି । ଏପରିକି କବିତାର ନାମ କରଣରେ ବିଶେଷତ୍ବ ଦେଖାଯାଏ । ‘ଫୁଲଟିଏ ଫୁଟିଥିଲି ମୁହିଁ’, ‘କଣେ ଥିଲେ ରଜା’, ‘ଗୁଣ୍ଡୁଟି ମୁଷା ପିଠିରେ ଗାର’, ‘ବାଡ଼ିରେ ସଜନା ପିଢାରେ ପୋଇ’ ନବଜାତ ଶିଶୁଟି ପାଇଁ ପିତାମାତାଙ୍କର ସ୍ବତଃସ୍ପୃହ ଉଜାରିତ ନାଆଁଟିଏ ପରି ଲାଗେ । ଭାବିଚିନ୍ତି ନାଆଁରେ କିଛି ଚମତ୍କାରିତା କି ବିଶିଷ୍ଟତା ଆଣିବାର ଟିକିଏ ହେଲେ ପ୍ରୟତ୍ନ ନାହିଁ ।

ତାଙ୍କର ପଦଟିଏ କବିତା ‘ଚଙ୍କା ସୁନାଧନ ଏଇଠି ରହିବ ସାଙ୍ଗରେ ଯିବେନି କେହି, ଧରମ କରମ ଯେତେ ଭଲକାମ ପାଖେ ପାଖେ ଥିବ ରହି’ ପଢ଼ିଲେ ପଲ୍ଲୀ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କ କବିତାର କିଛି ଉଦାସ ରାଗିଣୀ ଓ ଯଶୋବନ୍ତ ଦାସଙ୍କ ଗୋବିନ୍ଦ ଚନ୍ଦ୍ର ଆଖ୍ୟାନ ମନେ ପଡ଼ିଯାଏ । ଗ୍ରାମ ଜୀବନରେ ସୁଖ ଦୁଃଖ, ଛୋଟ ଛୋଟ ମାମୁଲି ଜିନିଷର ମହତ୍ବ ଉପସ୍ଥାପନ ତାଙ୍କ କବିତାର ଏକ ବଡ଼ ବିଭବ ଭାବରେ ଗ୍ରହଣ କରାଯାଇପାରେ । ନଈ ବଢ଼ି କି ବରଷା କାଳରେ ଗାଆଁରେ ଭାରି ଅସୁବିଧା ହୁଏ । ଘମ, ଘଷିତାଳି ଓ ଶୁଖିଲା ପତର ଗାଆଁର ସାଧାରଣ ମଣିଷଙ୍କର ଉପକାର ଓ ପ୍ରୟୋଜନରେ ଆସେ । ତାକୁ ନେଇ କବିତା ଲେଖି ଗାଉଁଲୀ ଜୀବନର ପରିଚୟକୁ ଶିଶୁ ପାଖରେ କବି ନିବିଡ଼ କରିଦିଅନ୍ତି ।

‘ମୁଁ କହିବି କଥାଟିଏ, ତୁ କହିବୁ ହୁଁ’, ବହିଟି ଭିତରେ କେଉଁଠି ହେଲେ ଶବ୍ଦର କଠିନତା କି ଆଟୋପ ନାହିଁ । ଘଷି ମାଜି କିଛି ଚକ୍ ଚକ୍ କରାଯାଇନି । ନିରାଡ଼ମ୍ବର କଥନ ଭଙ୍ଗାଟିଏ ସବୁଠି ଛଳ ଛଳ ହେଉଛି । ବହିର ନାଆଁକୁ ନେଇ ରଚିତ କବିତାଟିରେ ଏକାକ୍ଷରୀ ଶବ୍ଦ ହୁଁ କୁଁ ପୁଁ ପୁଁ ଇତ୍ୟାଦିରେ ପଦ ପକେଇ ଶିଶୁର ପରିଚିତ ଶବ୍ଦ ଭଣ୍ଡାରରେ ପ୍ରୟୋଗରେ ସାଙ୍ଗାତିକତା ସୃଷ୍ଟି କରାଯାଇ ପାରିଛି ।

କବି ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କ ଅନ୍ୟ ଏକ ପୁସ୍ତକ, ‘ମତେ ଯେତେବେଳେ ଦଶ ବରଷ’ । ମୋଟ ତେରଟି କବିତାକୁ ନେଇ ବହିଟି ସୃଷ୍ଟି । ଦଶ ବରଷର ପାଠ ପଢୁଆ ପିଲାଟିଏ । ସେ ପୁଣି ବିଲରେ, ଘରେ ରୋଷେଇ ଶାଳରେ, ଗୁହାଳେ, ଫୁଲ ବଗିଚାରେ, ପଡ଼ିଶା ଘରେ, ନଈ ଘାଟରେ, ତୋଟାରେ, ସଡ଼କରେ, ଖେଳ ପଡ଼ିଆରେ ଗାଧୁଆ ତୁଠରେ, ନଈକୂଳେ ଓ ହାଟ ବଜାରରେ ଉପସ୍ଥିତ । ସବୁଠି ସେ ତାର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ଓ ଅକର୍ତ୍ତବ୍ୟ ବିଷୟରେ ସଚେତନ । କାମରେ ତାର ଆଗ୍ରହ । ସେ ଶ୍ରମ ବିମୁଖ ନୁହେଁ । କାମ କରିବାକୁ ଭଲ ଲାଗେ । ‘ପାଠ ବେଳେ ପାଠ ପଢ଼େ ମୁଁ ଘରେ, ଦରକାର ବେଳେ ଖଟେ ବିଲରେ ।’ ଘରେ ସେ ମାଆଙ୍କୁ କାମରେ ସାହାଯ୍ୟ କରେ । ବଗିଚାରେ କାମ କରେ । ପଡ଼ିଶା ଘରେ ସାହାଯ୍ୟ ଓ ସେବା

କରେ। ଗୁହାଳେ ଗୋସେବା କରେ। ସବୁଠି ଭବିଷ୍ୟତରେ ଭଲ ମଣିଷ ହେବାର ଆଗ୍ରହଟିଏ ଛପି ରହିଥାଏ। ଯିମିତି ‘ଗାଧୁଆ ତୁଠରେ ଗାଧୁଆ ତୁଠରେ ଜାଗା ଅଳପ ବିଳମ୍ବ କରିବା ନାହିଁ, ବଞ୍ଚକ ସାରିବା ଗାଧୁଆ କାମ ଅନ୍ୟକୁ ସୁବିଧା ଦେଇ’ କିମ୍ବା ହାଟ ବଜାରରେ। ‘ସଉଦା କିଣିବା ପଇସା ଦେଇ ବାକି ମାଗି ମାନ ହାରିବା ନାହିଁ।

ଜଣେ ଦଶ ବରଷର ଶିଶୁ ତା ଅନୁଭୂତି ଓ ଆଗ୍ରହକୁ ଗାଆଁରେ ତେରଟି ସ୍ଥାନରେ ପ୍ରକାଶ କରିଚାଲିଛି। ସବୁଠି ସୁବିଧା ଅସୁବିଧା ଅଛି। ତାରି ଭିତରେ ମିଳିମିଶି ଚଳିବାକୁ ସେ ଆପଣେଇ ନେଇଛି ଓ ଭଲ ମଣିଷଟିଏ ହବାକୁ ଚାହିଁଛି। ତା ପାଇଁ ସବୁଠି ଯେପରି କିଛି ସୁଯୋଗ ଅଛି। ସେଇ ଦଶ ବରଷର ଶିଶୁଟି ପରି ଦୁଃଖ, ଅଭାବ ଓ ସାଧାରଣ ପରିବେଶ ଭିତରେ ବହୁଥିବା ଅସଂଖ୍ୟ ଶିଶୁ ଲାଗି ବହିଷ୍କୃତ ଆତ୍ମ କାହାଣୀ କଥନ ପରି ଉପଭୋଗ୍ୟ ଓ ପ୍ରେରଣା ଦାୟକ ହୋଇଛି।

ଯେତେ ଦୁଃଖ ଥିଲେ ବି ସବୁ ସାହିତ୍ୟର ଅସଲ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ହେଲା ଆନନ୍ଦ। ଶିଶୁମାନଙ୍କ ପାଇଁ ସାହିତ୍ୟର କଥା ଉଠିଲେ ସେଇ ଆନନ୍ଦ ହସ ଖୁସି ଓ ମଜା ମଉଜର କଥା ଉଠିବା ସ୍ୱାଭାବିକ। ପିଲାଙ୍କ ମୁହଁରେ ହସ ଫୁଟେଇବା ଆମର ଲକ୍ଷ୍ୟ। ସେଇମାନଙ୍କ ହସରେ ଧରାଟି ହସି ଉଠିବ। ସେଇଥି ପାଇଁ କବିଙ୍କର ବହିଷ୍କୃତ, ‘ହସି ହସେଇବା ଧରା।’ ଆଠଟି କବିତାର ସମାବେଶ ଏ ବହିରେ। ନୂଆ ଆଶା, ସ୍ୱପ୍ନ, ଓ ନୂଆ ଯୁଗ ପାଇଁ କଳ୍ପନାର ନକସାଟିଏ ପ୍ରଥମେ କବି ଆଙ୍କନ୍ତି ପିଲାଙ୍କ ମନରେ। ବଡ଼ ହବାର ସମ୍ଭାବନାମୟ ଦିନଗୁଡ଼ିକ ଯେତେ ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ହେଉ ପଛକେ ସେଇ ଗାଆଁର ପଲ୍ଲୀ କବିଙ୍କ ପରି କବିଙ୍କର ଗାଆଁ ପ୍ରତି ମମତା ଓ ଆକର୍ଷଣ ଅତି ନିବିଡ଼। ଖୁବ୍ ନିବିଷ୍ଟ ଭାବରେ ସେ ଭଲ ପାଆନ୍ତି ଗାଆଁର ଆଳୁଅ, ପବନ, ଚିକି ଗଡ଼ିଆ, କଳମ ନଟି, ନୀଳ ପାହାଡ଼, ଝୁମୁକି ଝାଟି, ବିଲ, ତୋଟା, କିଆ ଗୋହରୀ, ଜୁଜୁକୁଳା, ବଉଳ, ବିଲୁଆ ଡାକ ଓ ବିରୂପା ନଈ, ଗାଆଁର ଏଇ ପରିବେଶ କବି ପ୍ରାଣକୁ ଆଛନ୍ନ କରିରଖିଛି। କେବଳ ଗୋଟିଏ ଦୁଇଟି କବିତାରେ ନୁହେଁ ଅନେକ କବିତାରେ ଆମେ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରୁ ଏଇ ସହଜାତ ମାନସିକତାଟିକୁ। ସେ ଯେପରି ବାରମ୍ବାର ଟାଣି ହେଇ ଫେରିଯାଏ ସେଇ ପ୍ରିୟ ପଲ୍ଲୀର ପଲ୍ଲବମୟ ଛାୟା ଶୀତଳ କୋଳକୁ।

“ଭାରି ଭଲ ଲାଗେ ମତେ ମୋ ଗାଆଁ ଆଳୁଅ ପବନ ତାର

ଯେଉଁଠି ରହିଲେ ଯୁଆଡ଼େ ଗଲେ ମନେପଡ଼ିଯାଏ ମୋର।”

ଏପରି କବିତା ଭିତରେ ଏକ ଚିରନ୍ତନ ଶିଶୁ ମନ ଦେଖୁ ହୁଏ। ସେଇଥି ପାଇଁ ସେ ଘଟଣା ବିହୀନ, ନିରୁଦ୍‌ବିଗ୍ନ, ଚିରାଚରିତ ଗାଆଁରେ ସବୁ ଆମ ପାଇଁ ନୂଆ ଦେଖନ୍ତି ଓ କୌତୁକ ବି ଅନୁଭବ କରନ୍ତି। ସେଇଥି ପାଇଁ ଏଣୁରି ଅନ୍ୟ ପିଠାକୁ ପଚାରି ପାରେ ‘ବୁଢ଼ାଟି ମାନତ ହେଲଣି, ହଳଦୀ ପତର ଲୁଗା ପିନ୍ଧିଛନ୍ତି ହେକି ହେକି କେହି କହନ୍ତି?’ ସେଇପରି ରାଧୁ ମଳିକ ପରି ସାଧାସିଧା ପରୋପକାରୀ ଗାଉଁଲୀ ମଣିଷ ପିଲାଙ୍କ ପାଇଁ

ଆଦର୍ଶ ହୋଇଉଠେ ।

ଗୋଟିଏ ପରେ ଗୋଟିଏ ବହି ସେଇ ଲେଖନୀରୁ ବାହାରେ ଆସେ ପିଲାଙ୍କ ପାଇଁ । ପୁରୁଣା ଗାଆଁକୁ ନେଇ ଓ ତାର ଜନଜୀବନକୁ ନେଇ । ସବୁ ଲେଖାରେ ସହଜ ସାଧାସିଧା ଭାଷା ନିଜ ବିଭବରେ ମଣ୍ଡିତ । କୌଣସି କୃତ୍ରିମତା ନଥାଇ ମାମୁଲି ଚିତ୍ରଣ ଗାଆଁର ମାଟି ଘରେ ଝୋଟିପରି ଉକୁଟି ଉଠେ । ଯିମିତି ‘ସିଏ ମୁଁ ତମେ’ ପୁସ୍ତକର ଏଇ ଅଂଶଟି – ‘ଚାଷୀ, ସବୁବେଳେ ଥାଏ ଖୁସି, ସକାଳୁ ଉଠି ପଞ୍ଜାଳ ଖାଏ ହେଉ ପଛକେ ବାସି । ଚାଷୀ, ଗୋଡ଼ରେ ତେଲ ଘଷି, ସେକ ଦିଏ ତା ପାଦ ଦୋଟି ଚୁଲୀ ମୁଣ୍ଡରେ ବସି ।’

କିନ୍ତୁ ଏଣେ ଗାଆଁ ବଦଳୁଛି, ଏ କଥା କବି ଜାଣୁଛନ୍ତି, ଗଛ ଲତା ତୋଟା ଉକୁଡୁଛି । ସବୁରି ବରଷ ତଳେ ଗାଆଁରେ ଯେଉଁ ଦୃଶ୍ୟ ସେ ଦେଖୁଥିଲେ ସେ ଅବସ୍ଥା ନାହିଁ । କୋଳି, ଝଙ୍କା ବର, ଗାଆଁକୁ ବାଘ ଆସିବା, ବର ମୂଳେ ପାଣିଦବା, ଘିଅ ଦୁଧ ପ୍ରଚୁର ମିଳିବା କି ସ୍ନେହ ଶ୍ରବାର ଡୋରରେ ସମସ୍ତେ ବନ୍ଧା ହବାର ଅବସ୍ଥା ନାହିଁ । ପକ୍ଷୀଟିଏ ଶରବିନ୍ଦ ହେଲେ ପିଲାଙ୍କୁ ପଶୁପକ୍ଷୀଙ୍କୁ ଶ୍ରଦ୍ଧା କରିବାକୁ, ତାଙ୍କ ଦୁଃଖରେ ଦୁଃଖୀ ହବାକୁ କବିତାରେ କ୍ଷେତ୍ର ପ୍ରସ୍ତୁତ ହୋଇଛି । ସ୍ନେହଶ୍ରଦ୍ଧା, ସହାନୁଭୂତି ଓ ମମତା ବୋଧ ଯେ ମୌଳିକ ପିଲାଙ୍କ ମନରେ ପଲ୍ଲବିତ ହୋଇପାରିବ । ସେଇଥି ପାଇଁ ସିଏ ମୁଁ ତମେ ଏକାଠି ରହିବାର ଆହ୍ୱାନ ତାଙ୍କ କବିତାର ଶେଷ କଥା ହୋଇଛି ।

ଏଇ ଆହ୍ୱାନ ଭିତରେ ନଇ ପାହାଡ଼ ଗଛଲତା ପଶୁପକ୍ଷୀ, ସ୍ନେହ ଶ୍ରଦ୍ଧା, ପରୋପକାର ଛଳନା ବିହୀନ ସ୍ୱାଭାବିକ ଜୀବନର ନୈସର୍ଗିକ ଚିତ୍ର ଆଙ୍କିବାରେ କବି ସଦା ତତ୍ପର । ଜଣେ ଶିକ୍ଷକ ଓ ପଲ୍ଲୀ କବିଙ୍କ ଉତ୍ତର ସୂରୀ ଭାବରେ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ପଲ୍ଲୀ ପ୍ରକୃତି ଜୀବନ ଓ ଶିଶୁ ପ୍ରାଣତାକୁ ଆଧାର କରି ବିରୂପା କୁଳରେ କବିତାର ମୋହନ ମୂରଲୀ ମଧୁର ସ୍ୱରରେ ବଜାଇ ଚାଲିଥିଲେ । ସେଇ ସ୍ୱର ଅଗଣିତ ଶିଶୁ ଚିତ୍ତକୁ ଅଧିକରୁ ଅଧିକ ଜୟ କରି ଚାଲିଥିଲା ଅନେକ ବର୍ଷଧରି । ଦୁଇ ବର୍ଷ ହେବ ତାହା ସ୍ଥିର ହୋଇ ଯାଇଛି । ଆଜି କବି ନାହାନ୍ତି କିନ୍ତୁ ତାଙ୍କ ଲେଖା ତାଙ୍କର ଜୟଗାନ କରୁଛି । □□□

କୋତପୁର, ଯାଜପୁର-୭୫୫୦୦୮

ଆଜିହିଁ ସଂଗ୍ରହ କରନ୍ତୁ

ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କର ପ୍ରଥମ ପ୍ରକାଶିତ ପୁସ୍ତକର ନୂତନ ସଂସ୍କରଣ

**ଗୁଣ୍ଡୁଚିମୂଷାର ପିଠିରେ ଗାର**



## ଶ୍ରଦ୍ଧାଂଜଳି

ଶ୍ରୀ କ୍ଷୀରୋଦ ଚନ୍ଦ୍ର ପୋଥାଳ

ନନ୍ଦ କିଶୋର ବାବୁ ସାହିତ୍ୟ ସାଧନା କ୍ଷେତ୍ରରେ ମୋର ଅଗ୍ରଜ ପ୍ରତିମ ହେଲେବି ଆମ ଦୁହିଁଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ବଂଧୁତା ଥିଲା ଅତି ଘନିଷ୍ଠ, ନିହାତି ନିବିଡ଼ ।

ମାହାଜୀ ଅନ୍ତର୍ଗତ କୁସୁପୁରସ୍ଥ ନନ୍ଦକିଶୋର ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିରର ସେ ଥିଲେ ଶିକ୍ଷକ । ବୃତ୍ତିରେ ଶିକ୍ଷକ, ପ୍ରବୃତ୍ତିରେ ସାହିତ୍ୟିକ ।

ଅତୀତତା ସୁଦୀର୍ଘ ହୋଇଗଲେ ବି ସବୁ କଥା କାଲି ପରି ମନେ ପଡ଼ୁଛି । ୧୯୬୪ ମସିହାରୁ ୧୯୭୮ ଯାଏ ମୁଁ ଦୈନିକ ମାତୃଭୂମି କାର୍ଯ୍ୟାଳୟରେ ଯୋଗ ଦେଇ ସେଇଠାରେ ଅବସ୍ଥାନ କରୁଥାଏ । ନନ୍ଦକିଶୋର ବାବୁଙ୍କ ସହିତ ପ୍ରଥମ ଦେଖା ସେଇଠାରେ । ପରିଚୟ ହେଲା ପରେ ସ୍କୁଲ କାମରେ ହେଉ କି ବ୍ୟକ୍ତିଗତ କାମରେ ହେଉ ସେ କଟକ ଗଲେ ନିଶ୍ଚୟ ମୋ ପାଖକୁ ଆସନ୍ତି । ଘଣ୍ଟା ଘଣ୍ଟା ଧରି ଆକାଫ ଆଲୋଚନାରେ ଆମେ ଏମିତି ମସୃଗୁଳ ହୋଇଯାଉ ଯେ ଆମ ଉଭୟଙ୍କର ସମୟ ଜ୍ଞାନ ରହେ ନାହିଁ ।

ବିଭିନ୍ନ ପତ୍ରିକାରୁ ତାଙ୍କ ଲେଖାଗୁଡ଼ିକ ପଢ଼ି ମୁଁ ଯେତିକି ବିମୁଗ୍ଧ ହୋଇଥାଏ, ସେ ମଧ୍ୟ ମୋ ଲେଖା ଗୁଡ଼ିକ ପଢ଼ି ସେତିକି ବିମୁଗ୍ଧ ହୋଇଥାନ୍ତି । ଆମ କଥୋପକଥନରୁ ଏଇଟା ବାରିହୋଇପଡ଼େ ।

କିନ୍ତୁ ନନ୍ଦ କିଶୋର ବାବୁଙ୍କ ମୁହଁରୁ କେବେ ଆମ୍ଭ ପ୍ରଶ୍ନି ମୁଁ ଶୁଣିଥିଲା ପରି ମୋର ମନେ ପଡ଼ୁ ନାହିଁ । ବରଂ ନିଜ ସୃଷ୍ଟି ଉପରେ ତାଙ୍କର ବିଶ୍ୱାସ ଓ ଭରସା ନଥିଲା ପରି ଜଣାପଡ଼େ । କାରଣ ସେ ପଚାରି ଦିଅନ୍ତି ‘ସତରେ କଣ କ୍ଷୀରୋଦ ବାବୁ, ମୋର ସେ କବିତାଟା ଆପଣଙ୍କୁ ଭଲ ଲାଗିଛି ?’

ଗୋଟିଏ ମଜା କଥା ମନେ ପଡ଼ୁଛି । ସେତେବେଳକୁ ତାଙ୍କ ରଚିତ ଆମଘର କବିତାଟି ୨ୟ ଶ୍ରେଣୀର ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକରେ ସ୍ଥାନୀତ ହୋଇ ସର୍ବତ୍ର ଉଚ୍ଚ ପ୍ରଶଂସିତ ହୋଇ ସାରିଥାଏ । ଦିନେ ନନ୍ଦ କିଶୋର ବାବୁ କହିଲେ – “କ୍ଷୀରୋଦ ବାବୁ ଆମଘର କବିତାକୁ କଣ ସମସ୍ତେ ପ୍ରଶଂସା କରୁଛନ୍ତି ? ଆଉ କେହି କେହି ସେଇଟା ମୋର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ କୃତି ବୋଲି କହୁଛନ୍ତି ! ଆପଣଙ୍କୁ ସେ କବିତାଟି କେମିତି ଲାଗେ ?”

ତାଙ୍କ କଥା ଶୁଣି, ମୁଁ ମନେ ମନେ ହସିଲି । ଭାବିଲି ଏତେ ପ୍ରଶଂସା ଶୁଣିଲା ପରେ ବି ନିଜ ସୃଷ୍ଟି ପ୍ରତି ଇଏ ଏବେ ବି ସନ୍ଦିହାନ । ଏଥୁରୁ ଜଣାଯାଏ, ନିଜ ସୃଷ୍ଟି ଉପରେ ଯାଙ୍କର ଭରସା ନାହିଁ !!

ତାଙ୍କ ପ୍ରଶ୍ନର ଉତ୍ତର ଦବାକୁ ଯାଇ କହିଲି – “କବିତାଟି ମତେ ବହୁତ ଭଲ

ଲାଗେ । କିନ୍ତୁ ଏଇଟି ଆପଣଙ୍କର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ କୃତି ନୁହେଁ ।” ସିଏ ସ୍ତବ୍ଧ ଚକିତ ନୟନରେ ମତେ ଅନେଇ ରହି, କହିଲେ “ଆପଣ କଣ ଆଜି ଗୋଟାଏ ନୂଆ କଥା କହୁଛନ୍ତି ?”

ମୁଁ କହିଲି- କ୍ଷୀରୋଦ ପୋଥାଳ ସବୁବେଳେ ନୂଆ କଥା କହେ । କିଏ କଣ କହିଲେ ବୋଲି ମୁଁ କଣ ସେଇଆ କହିବି ? ମୁଁ ମୋ କଥା କହିବି ।

ନନ୍ଦ କିଶୋର ବାବୁ ଆହୁରି ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହୋଇଯାଇ ପଚାରିଲେ ତା ହେଲେ କେଉଁ ଲେଖାଟି ମାର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ କୃତି ବୋଲି ଆପଣ କହିବାକୁ ଚାହାନ୍ତି ?

ମୁଁ କହିଲି ‘ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ କୃତି ଏ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାଙ୍କ ଲେଖନୀରୁ ବାହାରି ନାହିଁ ।’ ମୋ ପାଟିରୁ କଥା ନ ସରୁଣୁ ସିଏ ହସି ହସି ମତେ କୁଣ୍ଡେଇ ପକେଇଲେ । କହିଲେ - ‘ଯା ହେଉ, ଆଜି ଆପଣଙ୍କ ଠାରୁ ମୂଲ୍ୟବାନ କଥା ପଦେ ଶୁଣିଲି ।’

ତା ପରେ ମୁଁ କହିଲି - ଯେଉଁ ଦିନ ନଦୀ ସାଗରରେ ମିଶିଯିବ, ସେଇଦିନ ତାର ସ୍ରୋତ ମଛର ହୋଇଯିବ । ତେଣୁ ଜଣେ ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କୁ ତାର ସର୍ବ ଶ୍ରେଷ୍ଠ କୃତିକୁ ଚିହ୍ନେଇ ଦେଲେ, ସେ ଆଉ ସାଧନାରେ ଅଗ୍ରସର ନ ହୋଇ ଛାଣ୍ଟି ପାଳଟି ଯିବାର ସମ୍ଭାବନା ଯଥେଷ୍ଟ । ସୃଷ୍ଟି କରିଯିବା ଆମର କାମ । କିଏ ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ କୃତି ତାହାର ବିଚାର ଆଲୋଚନା କରିବା କିମ୍ବା ସେ ଆଡକୁ କାନ ଦେବା ଆମ ପକ୍ଷେ ଉଚିତ ନୁହେଁ । ଆମ କୃତିତ୍ବର ବିଚାର କରିବ ମହାକାଳ । ତାର ଚାଲୁଣୀରେ ଚଳେଇ ଦେଇ ଅସଲ ଜିନିଷଟିକୁ ସାଇତି ରଖୁଦେବ । ଆଉ ସେଇ ହେବ କାଳକ୍ରମୀ ଓ ଆମର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ କୃତି । ନିନ୍ଦା, ପ୍ରଶଂସା ଆଡକୁ କାନ ନ ଡେରି ଲେଖୁଯିବା ଆମର କାମ । ତେବେ ସାଧନା ପଥରେ ପ୍ରୋତ୍ସାହନ କିମ୍ବା ପ୍ରଶଂସା ଯେ ଅନାବଶ୍ୟକ, ସେ କଥା ମୁଁ କହୁ ନାହିଁ । ସେ ସବୁ ଅବଶ୍ୟ ସ୍ବାଗତଯୋଗ୍ୟ । କିନ୍ତୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହନ ଓ ପ୍ରଶଂସାକୁ କେବଳ ପାଥେୟ କରି ସାଧନା ପଥରେ ଆଗେଇ ଯିବା ଆମର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ । ଅନ୍ୟଥା ସେ ବିଷୟରେ ଏତେଟା ମୁଣ୍ଡ ଖେଳେଇବା ଦରକାର ନାହିଁ ।

ଏହିପରି ବହୁ ଆଳାପ ଆଲୋଚନା ଭିତରେ ଆମର ଘଣ୍ଟା ଘଣ୍ଟା ସମୟ ଅତିବାହିତ ହୋଇଛି । ସେ ସବୁ ସ୍ମୃତି ହୋଇ ରହିଯାଇଛି ମୋର ମାନସ ପତରେ ।

ବଂଧୁ ନନ୍ଦକିଶୋର ବାବୁ ଇହଜଗତରୁ ବିଦାୟ ନେବାର ୨ ବର୍ଷ ପୁରିବାକୁ ଯାଉଛି । ହେଲେ ଏବେ ବି ତାଙ୍କର ଚେହେରା ମୋ ଆଖିରେ ନାଚୁଛି, ତାଙ୍କର ସେଇ ଭାବ ଗମ୍ଭୀର ସ୍ବର ମୋ କାନ ପାଖରେ ପ୍ରତିଧ୍ବନିତ ହେଉଛି । ସମସ୍ତେ ତ ଦିନେ ଯିବା । କିଏ ଆଗେ, କିଏ ବା ପଛେ । କିନ୍ତୁ ନନ୍ଦ କିଶୋର ବାବୁଙ୍କ ପରି ସରଳ, ଅମାୟିକ, ମେଳାପି ମିଷ୍ଟଭାଷି ମଣିଷଟିଏ, ମୋ ଜୀବନରେ ଆଉ ମିଳିବେ ନାହିଁ ।

ମୋର ସେଇ ସତୀର୍ଥ ବଂଧୁ ନନ୍ଦ କିଶୋର ବାବୁଙ୍କ ପବିତ୍ର ଶ୍ରାବ ବାର୍ଷିକୀରେ ତାଙ୍କର ଦିବଂଗତ ଅମର ଆତ୍ମା ପ୍ରତି ହାର୍ଦ୍ଦିକ ଶ୍ରଦ୍ଧାଂଜଳି ଅର୍ପଣ କରୁଛି । □□□

କଙ୍କବଟ, ଗୋପପୁର, ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ କୋଇଲି, କଟକ - ୭୫୪୨୦୭,





## ଶିଶୁ ପ୍ରାଣର କବି ନନ୍ଦକିଶୋର

ଦୟାନିଧି ବେହେରା

କୁସୁପୁର ମାଟି କରିଲ ଧନ୍ୟ ନନ୍ଦ କିଶୋର  
ସାହତ୍ୟ ହୋଇଛି ବଳିଷ୍ଠ ପାଇ ତବ ସ୍ବାକ୍ଷର ।  
ଶିଶୁ ପ୍ରାଣ ଶିଶୁ କଲ୍ୟାଣ ପାଇଁ ତମରି କଥା  
ରୁଷୁଥିଲ ତମେ ସତରେ ଶିଶୁ ପ୍ରାଣର ବ୍ୟଥା ।  
ଆମ ଘର କଥା ଲେଖିଲ କିଏ ପାରିବ ଭୁଲି  
ପଢିଲେ ଲାଗଇ ଲେଖୁଛି ଜଣେ ନିଜର ବୋଲି ।  
ଉଡ଼ି ଉଡ଼ି ଆସି ପରଜାପତି ଫୁଲରେ ଝୁଲେ ।  
ପଢା ଘରେ ବସି ପିଲାଟି ପଢା ବହି ଯେ ଖୋଲେ ।  
ମାଆ ହାତ ଗଢା ପିଠାର ସମ ଅଛି କି ତୁଲ ?  
ଶିଶୁର ମନରେ ଘରର ମାୟା ଜଗାଇ ଦେଲ ।  
'ଗୁଣ୍ଡୁଟି ମୁଷାର ପିଠିରେ ଗାର' ସାଜାସାଥୀଙ୍କୁ ଡାକି ।  
'ସରଗଫୁଲ'କୁ ସାଉଁଟି କେତେ ଯତନେ ଭରି  
କହିଲ, 'ଆମେ ଏ ମାଟିର ସୁନାଫରୁଆ' ବୋଲି ।  
'ମୋ ଗାଆଁ ମୋ ଦେଶ' ଯେ ଜାତି କଥାକୁ କହେ  
'ଦେଶ ପାଇଁ ଯିଏ ଶହୀଦ ହେଲେ' ଅମର ରହେ ।  
ମର୍ତ୍ତ୍ୟ ମଣ୍ଡଳେ ଦେହ ବହି କହେଟି ଭାଗବତ  
'ଅଜ୍ଞା ପଚାରିଲେ ଆଇକି' ପର ପଦ କୁହତ ।  
'ମୁଁ କହିବି କଥାଟିଏ ତୁ କହିବୁ ହୁଁ' ସଦା  
'ସିଏ ମୁଁ ତୁମେ' ସଭିଏଁ ଏକ ସୂତ୍ରରେ ବନ୍ଧା ।  
'କଣା ମାଠିଆ'ର ପରିତ ଆମେ ଜୀବନ ଭାଇ  
ଘଡ଼ିକେ ଅଛନ୍ତି ଏଇଠି ଆଉ ଘଡ଼ିକେ ନାହିଁ ।  
ସରଳ ଜୀବନ ଯାପନ ଥିଲା ଜୀବନ ବ୍ରତ  
'ବର୍ଷା ନିଳୟମ୍' ଥିଲା ଯେ ତମ ସାଧନା ପାଠ ।  
ବର୍ଷା ନିଳୟମ୍ ଝୁରୁଛି ତମ ସାନ୍ନିଧ୍ୟ ପାଇଁ  
ସ୍ମୃତି ଅର୍ଘ୍ୟ ଦେଇ ରହିଛି ତମ ବାଟକୁ ଚାହିଁ ।  
ସରଗରେ ଥାଇ ମହାତ୍ମା କୋଟି ପ୍ରଣାମ ଘେନ  
ଆଶୀର୍ବାଦ ଦେଇ ସଭିଙ୍କୁ ବାରେ କର କଲ୍ୟାଣ । □□□

କଣ୍ଠାବାଞ୍ଜି ଉପତାକଘର, କଣ୍ଠାବାଞ୍ଜି, ବଲାଙ୍ଗୀର

# ନନ୍ଦ କିଶୋର ଶିଶୁ-ଜିଜ୍ଞାସା

ଡଃ ଇନ୍ଦୁପ୍ରଭା ସାମଲ

କଟକ ଜିଲ୍ଲାର ମାହାଙ୍ଗା ଥାନା ଅନ୍ତର୍ଗତ କୁସୁପୁର ମାଟିରେ ବହୁ ସାହିତ୍ୟ ସାଧକଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ସାହିତ୍ୟିକ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ଅନ୍ୟତମ । ତାଙ୍କର ନିଷ୍ପାପର ସାହିତ୍ୟ-ସାଧନା, ସାହିତ୍ୟ ଜଗତରେ ତାଙ୍କୁ ଯଶସ୍ଵୀ କରିପାରିଛି । ସାହିତ୍ୟର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ବିଭାଗରେ ଲେଖନୀ ତାଳନା କରିଥିଲେ ହେଁ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ତାଙ୍କର କୃତିତ୍ଵ ଯଥେଷ୍ଟ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ଵରେ ।

ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ନନ୍ଦ କିଶୋର ଶିଶୁ ଜିଜ୍ଞାସା ହେଉଛି ଅନୁସନ୍ଧାନ ମନୋବୃତ୍ତି ବିକାଶ, ଜୀବନ ଓ ପରିବେଶ ପ୍ରତି ଶୃଙ୍ଖଳାଗତ ବିଚାରର ନିଦର୍ଶନ । ଆମେ ଯେ ଭଳି ସାହିତ୍ୟର ବହୁ ବିଭାଗ, ଯେମିତିକି ଗଳ୍ପ, ଉପନ୍ୟାସ, କବିତା, ନାଟକ, ଏକାଙ୍କିକା, ଭ୍ରମଣ କାହାଣୀ ପ୍ରଭୃତିରୁ ରସ ଆହରଣ କରୁ, ସେହିପରି ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏକ । ପୂର୍ବରୁ ରଚିତ ହେଉଥିବା ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟରେ ଆନନ୍ଦ ପ୍ରଦାନ ଅପେକ୍ଷା ଉପଦେଶ ତଥା ନୈତିକ ଶିକ୍ଷାର ଗୁରୁତ୍ଵ ବେଶି ରହୁଥିଲା । ପ୍ରାଚୀନ ସାହିତ୍ୟ ସମ୍ଭାର ‘ପଞ୍ଚତନ୍ତ୍ର’, ‘ହିତୋପଦେଶ’, ‘କାତକ କଥା’, ‘କଥା ସରିତ ସାଗର’ ପ୍ରଭୃତି ଏହାର ପ୍ରକୃଷ୍ଟ ଉଦାହରଣ । ସମୟ କ୍ରମେ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟରେ ଜିଜ୍ଞାସାର ବିବର୍ତ୍ତନ ଘଟି ଚାଲିଛି । ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରଥମ ଅବସ୍ଥାରେ ଲୋକ ସାହିତ୍ୟ ସହ ମିଶି ରହିଥିଲା । ଏହାର ପ୍ରମାଣ ମିଳେ ଆମର ବହୁ ଲୋକଗୀତ ଓ ଲୋକ କାହାଣୀରୁ । ଯାହାକି ଲିଖିତ ସାହିତ୍ୟ ଠାରୁ ଭିନ୍ନ ଥିଲା । ଅର୍ଥାତ୍ ମୌଖିକ ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରଭାବରେ ଶିଶୁ ସମାଜ ବିକଶିତ ହୋଇ ପାରିଥିଲା । ଧୀରେ ଧୀରେ ମୁଦ୍ରଣ ଶିଳ୍ପର ପ୍ରବର୍ତ୍ତନ ହେଲା ଏବଂ ସାହିତ୍ୟର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ବିଭାଗ ପରି ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ମଧ୍ୟ ବିକାଶ ଲାଭ କଲା । ଲୋକ ସାହିତ୍ୟକୁ ଅବଲମ୍ବନ କରି ପ୍ରଥମେ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି ହେଲା । ଏହାପରେ ସମୟର ବିବର୍ତ୍ତନ ସହ ଆଧୁନିକ ଓ ଅତ୍ୟାଧୁନିକ ମାନସିକତା ଭିତ୍ତିରେ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ରଚନା କେତେକାଂଶରେ ଆନ୍ତର୍ଜାତିକ ଓ ଭ୍ରମଣାତ୍ମକ ହୋଇଯାଇଛି । ସେଥି ମଧ୍ୟରୁ କାଳ ବିଚାର ବିଶେଷରେ ଅନେକ ଉକ୍ତ ଶିଶୁ ରଚନା ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଦେଶ ଓ କାଳର ସୀମା ଭିତରେ ନ ରହି ସାର୍ବଜନୀନ ଓ ସାର୍ବକାଳୀନ ହୋଇଥିବାର ଦେଖାଯାଇଛି । ଏହି ସାର୍ବଜନୀନ ଓ ସାର୍ବକାଳୀନର କଥା ଓଡ଼ିଆ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ବିଚାର କରାଯିବା ବେଳେ ଯେଉଁ କେତେକ ସମ୍ମାନାନ୍ୱୟ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକଙ୍କ ନାମକୁ ଶ୍ରଦ୍ଧାର ସହ ଉଦ୍ଧାରଣ କରିବାକୁ ପଡେ ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଶିଶୁ-ସାହିତ୍ୟିକ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ଅନ୍ୟତମ ।

ଗାଁ ମାଟିର ବାସ୍ତା ଓ ଗାଁ ମାଟିର ପରଂପରାରେ ଜୀବନବୋଧର ସୁନ୍ଦର ସମନ୍ୱୟ ହିଁ ନନ୍ଦ କିଶୋର ଶିଶୁ ଜିଜ୍ଞାସାର ପ୍ରକୃତ ଅନ୍ତରାତ୍ମା । ଆଉ ଗୋଟେ ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ

କଥା ହେଲା - ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ରଚନା ଭିତରେ ଶିଶୁମାନେ ସାହିତ୍ୟ ପଢ଼ିବା ସହ କିଛି ଜ୍ଞାନ ଆହରଣ କରି ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି କରିବାର ସର୍ଜନାତ୍ମକ କଳାକୁ ସେ ଶିଖାଇବାର ପ୍ରଚେଷ୍ଟା କରିଥିଲେ । କାରଣ ଶିଶୁମାନଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟିର କିଛି ତାତ୍ପର୍ଯ୍ୟ ଅଛି ବୋଲି ସେ ସର୍ବଦା ଭାବୁଥିଲେ । ପ୍ରକୃତରେ ଦେଖିବାକୁ ଗଲେ ଶୈଶବ ଅବସ୍ଥାରେ ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାରର ସର୍ଜନଶୀଳତା ପ୍ରକାଶ ପାଇଥାଏ । ଯେମିତିକି ଶିଶୁମାନଙ୍କର ନାନା ପ୍ରକାର ଖେଳ କସରତ, ସ୍କୁଲ ତଥା ନିଜ ଘରର ପରିସର ମଧ୍ୟରେ ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାର କାର୍ଯ୍ୟକଳାପରେ ନାନା ଭାବରେ ପରିପ୍ରକାଶ ହୋଇଥାଏ । ଶିଶୁ ତାର ବିଭିନ୍ନ ସାଜସାଥୀମାନଙ୍କ ସହ ନିଜେ ଚିତ୍ରା କରି ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାର ଗପ କହିବା, ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ବସ୍ତୁରେ ଜୀବନ ସଂଚାର କରି କଳ୍ପନା ରାଜ୍ୟରେ ମଗ୍ନ ରହିବା ଏବଂ ସେଥିରେ ସର୍ବପ୍ରାଣବାଦ ଆରୋପ କରି ଅନୁକରଣ ପ୍ରିୟ ହେବା ଭିତରେ ଶିଶୁ ମନୋରାଜ୍ୟରେ ସୃଜନଶୀଳତାର ପରିପ୍ରକାଶ ହୁଏ । ଆଉ ଏହାରି ଭିତରେ ହିଁ ଶିଶୁଟିଏ ପାଇଁ ପରୋକ୍ଷରେ ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟିର ସମ୍ଭାବନା ଲୁଚି ରହିଥାଏ ।

ଏହି ସବୁ ଆଭିମୁଖ୍ୟ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ରଚନାରେ ସ୍ପଷ୍ଟ ଭାବେ ଉପଲବ୍ଧ । ଯାହାକି ତାଙ୍କ ସର୍ଜନାତ୍ମକ କଳାର ସଫଳତାକୁ ପାଠକମାନଙ୍କ ପାଖରେ ପରଖିବାରେ ସାହାଯ୍ୟ କରେ । ଏହି ସଫଳତାର ନିଦର୍ଶନ ତାଙ୍କ ସୃଷ୍ଟିର ପ୍ରଜ୍ଞା ଦୀପ୍ତତା, ନୈତିକ ଶିକ୍ଷା ଅର୍ଜନ ଏବଂ ବହୁ ଅଭିଜ୍ଞତା ଅନୁଭୂତି ଉପରେ ନିର୍ଭରଶୀଳ । ତଥାପି ଏତେ ସବୁ ଜ୍ଞାନର ଅଧିକାରୀ ହୋଇବି ସେ କେବେ ପୁରସ୍କାର ପଛରେ ଗୋଡାଇବାକୁ ଶ୍ରେୟ ମଣି ନାହାନ୍ତି । ନିଜର ଶୈକ୍ଷିକ ଆଦର୍ଶ ଓ ସ୍ଵାଭିମାନକୁ ସେ ସବୁବେଳେ ନିଜର ଭୂଷଣ ବୋଲି ମନେ କରିଛନ୍ତି । ଶିଶୁ-ସାହିତ୍ୟର ଏକ ସ୍ପଷ୍ଟ ଧାରଣାକୁ ସେ ସବୁ ସ୍ତରର ମାନସିକତା ପାଖରେ ବ୍ୟାପ୍ତ କରାଇପାରିଛନ୍ତି କାରଣ ତାଙ୍କର କିଛି ରଚନା ସ୍କୁଲ ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକରେ ଅନ୍ତର୍ଭୁକ୍ତ କରାଯାଇଛି । ତାଙ୍କର ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ କୃତି ଆବଶ୍ୟକ ଜ୍ଞାନ ବିତରଣ ସହ ସକାରାତ୍ମକ ଦୃଷ୍ଟିଭଙ୍ଗୀ ପ୍ରଦାନ କରିଥାଏ । ଏକଦା ଏକ ପ୍ରଶ୍ନର ଉତ୍ତର ଦେବାକୁ ଯାଇ ନନ୍ଦ ସାର କହିଥିଲେ - “ଶିଶୁ ହୃଦୟ ସାଧାରଣତଃ କୌତୁକ ଓ ଅନୁଷ୍ଠାନମୟ ।” ତେଣୁ ଶିଶୁମାନଙ୍କ ଲାଗି ଲିଖିତ ଗଳ୍ପ, ଉପନ୍ୟାସ, କବିତା ଓ ନାଟକ ଆଦି ବିଭିନ୍ନ ରଚନାରେ ସଂପୂର୍ଣ୍ଣ ଭାବେ ଅନୁକୂଳ କ୍ଷେତ୍ର ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବା ଉଚିତ । ପ୍ରକୃତ ଅର୍ଥରେ ସେ ନିଜ ରଚନା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଏହି ଆଭିମୁଖ୍ୟକୁ ହିଁ ଗ୍ରହଣ କରିପାରିଛନ୍ତି । ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ରଚନା କ୍ଷେତ୍ରରେ ମୁଖ୍ୟତଃ ଦୁଇଟି ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ରସର ସମ୍ପ୍ରାପ୍ତି କରାଯାଇପାରେ । ମନୋବିଜ୍ଞାନୀମାନେ ମଧ୍ୟ ଏ କଥାକୁ ସାବ୍ୟସ୍ତ କରିପାରିଛନ୍ତି ଯେ ଭୟ ଓ କ୍ରୋଧ ଦୁଇଟି ମୁଖ୍ୟ ଭାବାବେଗ ଶିଶୁ ଠାରେ ଦେଖାଯାଏ । ଏହାଛଡା ହାସ୍ୟ, ଶୋକ, ବିପ୍ଳୟ ଆଦି ଭାବାବେଗ ମଧ୍ୟ ସେମାନଙ୍କୁ ଆକ୍ରମଣ କରି ରଖୁଥାଏ ସେମାନଙ୍କ ନିତିଦିନିଆ ଚଳଣିରେ । ତେଣୁ ଏହି ସମସ୍ତ ଭାବାବେଗକୁ ନେଇ ଶିଶୁସାହିତ୍ୟ ପର୍ଯ୍ୟାୟ କ୍ରମେ ପରିପୁଷ୍ଟ ହୋଇପାରିଛି । ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟରେ ଶିଶୁମାନସିକତା ସମ୍ଭାବନାମୟ ଭାବାବେଗକୁ ସବୁ ସମୟରେ ଧରି ରଖିଛି ।

ଏଇ କିଛି ବର୍ଷ ଧରି ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟରେ ମନୋବିଜ୍ଞାନ ଓ ବୈଜ୍ଞାନିକ ଦୃଷ୍ଟିଭଙ୍ଗୀର ଗୁରୁତ୍ୱ ବୃଦ୍ଧି ପାଇଛି ଅନେକ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକଙ୍କ କଲମରେ । ଏହା ଫଳରେ ପୂର୍ବ ଧାରାରେ ରହିଥିବା ଶିକ୍ଷାଦାନ ଓ ଉପଦେଶାତ୍ମକ ଭାବନାର ଗୁରୁତ୍ୱ ଅନେକାଂଶରେ କମିଛି କିନ୍ତୁ ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ପରି ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ସାର୍ବଜନୀନ ସାର୍ବକାଳୀନ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି କରି ନିଜସ୍ୱ ପରିଚୟରେ ସଦା ଅମର ହୋଇ ରହିଥିବେ । □□□

ଅଧ୍ୟାପିକା, ଧର୍ମଶାଳା ମହିଳା ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ,

ଜାରକା, ଯାଜପୁର



## ବଉଳ ଫୁଲର ବାସରେ ବାସରେ...

ବିଶ୍ୱେଶ୍ୱର ମହାନ୍ତି

ରାତିର ଶିଶିର ବିନ୍ଦୁ ହୋଇ ତୁମେ  
ଫୁଟାଇଛ କେତେ କବିତା ଫୁଲ  
ଆଜିର ଦୁନିଆ ବଜାରରେ ପରା  
ଦେଇ ପାରିବେନି କେହି ତା ମୂଲ ॥

ଦିଗହରା କେତେ ଛୋଟ ବୋଇତରେ  
ଦିଶା ଦେଖାଇଛ ବାନ୍ଧିଛ ପାଲ  
ସାରା ମୂଲକରେ ନାଆଁ କରିଛନ୍ତି  
ଧରି ତୁମ ଦାନ ଜ୍ଞାନ ମଶାଲ ॥

ଗାଆଁକୁ କରିଛ ଅତି ଆପଣାର  
ସହରକୁ ନାକ ଟେକିଛ ପରୀ  
ଛାତ୍ରଙ୍କ ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ଭୁଲିଅଛ  
ନିଜ ଜୀବନର ସୁଖ ଓ ଶିରୀ ॥

‘ବିରୁପା’ ବେରୁପା ହୋଇ ରହିଗଲା  
କେହି ଶୁଣୁ ନାହିଁ (ତାର) ବେଦନା ସୁର  
ମାହାଙ୍ଗା ମାଟିର ସବୁ ଦିଗନ୍ତ ରୁ  
ଏବେ ବି ଶୁଭୁଛି ତୁମରି ସ୍ମର ॥

ହାତ ଗଡ଼ା ତୁମ କେତେ ଚାଟ ପିଲା  
ଗାଉଛନ୍ତି ବସି ତୁମ କୀରତି  
ବଉଳ ଫୁଲର ବାସରେ ବାସରେ  
ତୁମେ ହୋଇଗଲ ଅଲିଭା ଜ୍ୟୋତି ॥

□□□

ସାହାପୁର, କୁମୁଡ଼ାକନ୍ୟାପୁର,  
ମାହାଙ୍ଗା, କଟକ - ୭୫୪୨୮୭

# ମୋର ଗୁରୁଦେବ

ଶରତ୍ ଚନ୍ଦ୍ର କର

କବି, ନାଟ୍ୟକାର, ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ଦିବ୍ୟଗତ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ମୋର ପୂଜାସ୍ପଦ ଗୁରୁ। ଆଜିକୁ ତେୟାଲିଶି ବର୍ଷର ଅତୀତକୁ ଅନେକବାର ସୁବିଧା ସୁଯୋଗ ନାହିଁ। ମନେ ହୁଏ ସବୁ ନିରର୍ଥକ ଓ ନିରାଧାର। ସଂପୂର୍ଣ୍ଣ ପଲ୍ଲୀ ପରିବେଶରେ ନିମ୍ନ ମଧ୍ୟବିଭର ଅଭାବ ଅନଟନ, ଭିତରୁ ଉତୁରି ଆସି ପରିସ୍ଥିତି ଓ ପରିବେଶରେ ସବୁ ପ୍ରତିକୂଳତାକୁ ଅତିକ୍ରମି ଯେଉଁ କିଶୋରଟି ୧୯୬୨ ମସିହାରେ ନନ୍ଦ କିଶୋର ବିଦ୍ୟା ମନ୍ଦିର କୁସୁପୁରୁର ମଣିଷ ଗଢା କାରଖାନା ଭିତରୁ ପଶି ଆସିଲା, ସେ ହୁଏତ ତାର ଭାଗ୍ୟ-ଭବିଷ୍ୟତ ବିଷୟରେ ନିହାତି ଅଜ୍ଞ ଥିଲା। ଆଜି ଭାବିଲେ କେମିତି ଲାଗୁଛି। ପଲ୍ଲୀ ସରସୀ ଛାତିରେ ଫୁଟନ୍ତ ଶତଦଳକୁ ଶୁଭ୍ର-ସତେଜତା ଓ ରକ୍ତାଭ ଅନୁରାଗ ଦେଲା କିଏ ? ଭାବନାରିତ୍ତ ମନରେ ଭାବବୋଧ ଓ ମନନ କେମିତି ଭରିଗଲା ? କେଉଁ ମାନ୍ଦ୍ରାକର ଓଁକାରରେ ଉପଳ ଖଣ୍ଡରେ ଶାଳଗ୍ରାମ ଶିଳାର ମହିମା ଭରିଗଲା। ଏହା କେବେ ହେଲେ ବି ଏକ ଅକୃତ ଘଟଣା ନ ଥିଲା। ଏହାର ପୃଷ୍ଠଭୂମିରେ ବହୁ ଅଦୃଶ୍ୟ ହାତର କରାମତି, ସଦିଚ୍ଛା ଓ ଶୁଭେଚ୍ଛା, ଶ୍ରଦ୍ଧା ଓ ଶ୍ରମ ରହିଛି, ଯାହା ଆଦୌ ବିନିମୟ ସାପେକ୍ଷ ନୁହେଁ। ଅନ୍ୟ କଥାରେ ଏହା ପ୍ରାପ୍ତି-ପ୍ରତିଦାନ ପରତ୍ନମୁଖ ଗୁରୁର ଅକୃପଣ କୃପାଞ୍ଜଳି। ଯେଉଁମାନଙ୍କର ଆଶିଷ-ରେଶ୍ମରେ ଏହି ଅକିଞ୍ଚନର ଜୀବନ-ପାତ୍ର ପୂର୍ଣ୍ଣ ହୋଇଛି, ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ମୋର ପ୍ରିୟ ଗୁରୁ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ଅନ୍ୟତମ।

ଗୁରୁ ପରମେଶ୍ବରଙ୍କ ପ୍ରତିନିଧି। ଶିଷ୍ୟର ଅଭିଳାଷ ପୂରଣକାରୀ, ସତ୍ୟର ପଥପ୍ରଦର୍ଶକ, ଅଜ୍ଞାନ-ତିମିର-ବିଧ୍ବଂସୀ ଦିବ୍ୟ ଜ୍ୟୋତିର ସ୍ବରୂପ। ଗୁରୁ କନ୍ଧତରୁ। ସେ ଦିନର ନନ୍ଦ କିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର ଏକ ପଲ୍ଲୀ ଆଶ୍ରମର ଭ୍ରାନ୍ତି ସୃଜୁଥିଲା ମନରେ। ଆତ୍ମ, ନତିଆ, ଗୁଆ, ଅଶୋକ, ଜାମୁ, ପିଚୁଳି ଆଦି ନାନା ମହାବୃକ୍ଷର ସମାରୋହରେ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ପଲ୍ଲୀଗ୍ରାମର ମାଧୁରିମୟ ଶାନ୍ତ କୋଳରେ ମୋର ଏହି ଜ୍ଞାନ ମନ୍ଦିରଟି ଦିଗନ୍ତରା ପଥଚାରୀ ପାଇଁ ଥିଲା ବତୀଘରଟିଏ। ଉଷାରାଣୀ ଗଭାରେ ଖଞ୍ଜିତ ପ୍ରଭାତି ତାରା ପରି, ପ୍ରକୃତି ଶୀର୍ଷରେ ଖଟିତ ବହୁବର୍ଣ୍ଣୀ ପୁଷ୍ପଗୁଚ୍ଛ ପରି ଏହାର ଶୋଭା।

ଘରଠାରୁ ଆଠମାଇଲ ଦୂର ଥିଲା ମୋର ବିଦ୍ୟାଳୟ। ଆଖପାଖରେ ଉଚ୍ଚ ବିଦ୍ୟାଳୟ ନଥିଲା। ଥିଲେ ବି କୁସୁପୁର ହାଇସ୍କୁଲର ବିକଳ ନଥିଲା। ମୁଁ ନଳୀପୁର ସ୍କୁଲରୁ ୫ମ ଶ୍ରେଣୀ ପାଶ୍ କରି ପଢ଼ିଲି କୁସୁପୁର ନନ୍ଦ କିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିରରେ। ମୋର ସାର୍ବମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଥିଲେ ସ୍ବର୍ଗୀୟ ଉମାନାଥ ଶତପଥୀ, ସ୍ବର୍ଗୀୟ ବାଞ୍ଛାନିଧି ପଣ୍ଡା, ସ୍ବର୍ଗୀୟ ଗୌରାଙ୍ଗ

ଚରଣ ଧଳ, ସ୍ୱର୍ଗୀୟ ନାରାୟଣ ମହାନ୍ତି, ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବଟ କିଶୋର ନାୟକ, ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଚୈତନ୍ୟ ଚରଣ ବଳ, ପଣ୍ଡିତ ରସାନନ୍ଦ ଶତପଥୀ, ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଗୋବିନ୍ଦ ଚନ୍ଦ୍ର ମହାପାତ୍ର, ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ରୁଷିବର କୁଣ୍ଡୁ, ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବ୍ରଜ କିଶୋର ଶତପଥୀ, ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ପ୍ରହଲ୍ଲାଦ ସାହୁ ଓ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ରୂପାକର ଷଡ଼ଙ୍ଗୀ । ପ୍ରଧାନ ଶିକ୍ଷକ ଥିଲେ ଯଥାକ୍ରମେ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଧନେଶ୍ୱର ସାମଲ ଓ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ମୁରଲୀଧର ଆଚାର୍ଯ୍ୟ । ନନ୍ଦ ସାର୍ ତାଙ୍କ ମଧ୍ୟରୁ ଜଣେ ଥିଲେ ।

ମୁଁ ସାହିତ୍ୟ ଅନୁରାଗୀ ଓ ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରତି ଅନୁରାଗ ହେତୁ ମୋର ସାହିତ୍ୟ ଶିକ୍ଷକମାନଙ୍କ ସହିତ ତାଳମେଳ ଭଲ ଥିଲା । ପ୍ରଥମେ ବାଞ୍ଛାନିଧି ବାବୁ, କିଛି ଦିନ ଘନଶ୍ୟାମ ବାବୁ କେବେ କେବେ ପ୍ରଧାନ ଶିକ୍ଷକ ମୁରଲୀବାବୁ ନବମରୁ ଏକାଦଶ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ନିରବଚ୍ଛିନ୍ନ ଭାବରେ ସାହିତ୍ୟ ପଢ଼ାଉଥିଲେ ନାରାୟଣ ସାର୍ । ମୋର ‘ବି’ ସେକ୍ସନ୍ ହୋଇଥିବାରୁ ମୁଁ ସିଧାସଳଖ ନନ୍ଦ ସାର୍ଙ୍କ ଠାରୁ ସାହିତ୍ୟ ପଢ଼ିନାହିଁ ।

ତେବେ ସାର୍ଙ୍କ ସହିତ ମୋର ସଂପର୍କ କାକତାଳୀୟ ନଥିଲା । ନନ୍ଦ ସାର୍ ଥିଲେ ଆମ ସ୍କୁଲର ଗୋଟିଏ ସାଂସ୍କୃତିକ ଅନୁଷ୍ଠାନ । ଗୀତ ରଚୁଥିଲେ, ସ୍ୱର ଦେଉଥିଲେ, ଗୀତିନାଟିକା ଲେଖୁଥିଲେ ଓ ଏହାର ମଞ୍ଚାୟନ ଦାୟିତ୍ୱ ନେଉଥିଲେ । ମୁଁ ପିଲାଟି ଦିନରୁ ବଡ଼ ଚପଳ । ତାଳ-ଲୟ-ହୀନ ଗାୟକ, ଅକୁଶଳୀ ଅଭିନେତା । ଏସବୁ ସତ୍ତ୍ୱେ ମୋର ରସ ଗ୍ରାହିତାରେ ଦୃଢ଼ କିମ୍ବା ଦ୍ୱିଧା ନଥିଲା । ଭରପୂର ମନରେ ନାଟକ/ଯାତ୍ରା ଦେଖେ । ଅନୁକରଣ ପ୍ରିୟତା ହେତୁ ତା’ର ଭାବାନୁଷଙ୍ଗ ଯଥାଯଥ ଭାବରେ ଗ୍ରହଣ କରିପାରେ । ନନ୍ଦସାର୍ ମୋ ଭିତରେ ଥିବା ସହୃଦୟତାକୁ ଚିହ୍ନି ପାରିଥିଲେ ।

ସେଦିନ ସରସ୍ୱତୀ ପୂଜା ସରିବା ପରେ ବାର୍ଷିକ ଉତ୍ସବ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେଲା । ନନ୍ଦ ସାର୍ ଲେଖୁଥିଲେ ‘ସାଧବ ଝିଅ’ ଗୀତି ନାଟ୍ୟ । ତାର ମଞ୍ଚାୟନ ଯୋଜନା ଚାଲିଥାଏ । ନିର୍ଦ୍ଦେଶନା ଦେଉଥିଲେ ଶ୍ରୀ କୃଷ୍ଣ ଚନ୍ଦ୍ର ସାହୁ (କୃଷ୍ଣ ଭାଇ) । ନିହାତି ବଦ୍ଧରାଗୀ ଚିତ୍ତିଚିତ୍ତା ମଣିଷଟିଏ । ନନ୍ଦ ସାର୍ ତାଙ୍କୁ ଭାବାର୍ଥ ଓ ମଞ୍ଚାୟନ କୌଶଳ ବୁଝାଇଥିଲେ ।

ମନେ ପଡ଼ୁଛି ସେଦିନର ସେହି ବାସନ୍ତୀ ସନ୍ଧ୍ୟାର କଥା । ଗାୟକ ଭିକାରୀ ବଳଙ୍କ କଣ୍ଠରୁ ଭାସି ଆସିଲା ‘କାଇଁତ ପତର ସରୁ / ପଣସ ପତର ସରୁ’ ଗୀତର ଲହରୀ । ସଭା ସ୍ତବ୍ଧ ହୋଇଗଲା ବଳଙ୍କ କଣ୍ଠରେ । ତାପରେ ଅଭିନୀତ ହେଲା ‘ସାଧବ ଝିଅ’ ଗୀତିନାଟ୍ୟ । ଝାପସା ମନେ ପଡ଼ୁଛି ଆରମ୍ଭଟି ଥିଲା ଠିକ୍ ଏହିପରି –

“ସାଧବପୁଅର ବୋଇତ ଫେରିଛିରେ

ପାଲଟାଣି ଜମ୍ବୁ ଦ୍ୱୀପୁ

ପଛରେ ରହିଲା ଦୂର ପରବତ

ନୀଳ ଦରିଆର ଟାପୁ ।”

ଗୀତବାଦ୍ୟର ତାଳେ ତାଳେ ଅଭିନୟ ରଚିଲେ କୁଶୀଳବ ଶ୍ରେଣୀ । ସବୁଠୁ ମନକୁଆଁ ଥିଲା ସାତ ଭାଉଜଙ୍କର ତଥପୋଇକୁ ଦୋଳିରେ ଝୁଲାଇ ଗାଉଥିବା ଗୀତ କେଇପଦ ।

“କଦଳୀ କାଟିଲି ଟେକି  
 କାନକୁ ଆଣିବେ ଜୋଲା ତଉକି  
 ସାଜି ଦେବି ରାଜ ଦୁଲାଳାକି ॥  
 ଦୁର ପରବତ ଛାଇ  
 ଅଳପ ଦିନରେ ଫେରିବ ଭାଇ  
 କେତେ ପରଦେଶୀ ଚିତ୍ତ ନେଇ ॥”

ପଲ୍ଲୀ ପରିବେଶରେ ବୋଲି ଗୀତର ଏ ମଧୁର, ମନୋହର ମୂର୍ଚ୍ଛନା ଆଜି ହୁଏତ ଅନୁରଣିତ ହେଉନାହିଁ। ତେବେ କିଶୋର ମନର ଅନୁଭବହୀନତା ଭିତରେ କେଉଁଠି ଜାଗୁଥିଲା ଏକ ଅହେତୁକ କୌତୂହଳ।

ନନ୍ଦ ସାର୍ବଜ୍ଞ ପ୍ରଥମ ପ୍ରକାଶିତ ବହିଟି ଥିଲା ‘ଶୁଣ୍ଠି ମୂଷାର ପିଠିରେ ଗାର’। ଏ ବହିଟି ସାର୍ବଜ୍ଞ ଆଦେଶ କ୍ରମେ ସମସ୍ତେ କିଣିଥିଲୁ। ଏହାର ଛତ୍ରେ ଛତ୍ରେ ଭରି ରହିଥିଲା ଶିଶୁ-ହୃଦୟ-ସଂବାଦୀ ଭାବନା। ସରଳ, ସାବଲୀଳ ଓ ସହଜ ଭାଷାରେ ଦୈନନ୍ଦିନ ଜୀବନର ବହୁ ଦେଖା-ଅଦେଖା, ଶୁଣା-ଅଶୁଣା, ଜଣା-ଅଜଣା ଘଟଣା, କୌତୁକପ୍ରଦ ସମସ୍ୟାର ସହଜ ସମାଧାନର ସୂତ୍ର ଏଥିରେ ସନ୍ନିବିଷ୍ଟ। ସାଧାରଣ ବିଜ୍ଞାନ, ଲୋକକଥା, ପୁରାଣ, ଅନୁଦିନର ଘଟଣାବଳୀରୁ ସଂଗୃହୀତ ନୀତି-ଉପଦେଶ ଭରା କୌତୂହଳୀ ରଚନାରେ ନନ୍ଦ ସାର୍ବଜ୍ଞ ଜୀବନ ଭାଷ୍ୟ ସତେକି ଉଦ୍‌ଗୀତ।

ଦୁଇ-ପ୍ରତିଦ୍ୱନ୍ଦ୍ୱକୁ ନେଇ ରଚିତ ଦୁଇଟି କବିତା ଥିଲା ପିଠାମାନଙ୍କର ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ କଳି। ଏଣୁରି ପିଠା ବାଜି ମାରିନେଇଛି। ପୁର ପଣା ମଣ୍ଡା ଓ କାକରା, ଦୁଧ ସରିସାରେ ସରୁ ଚକ୍କଳି ଯାହା ଗୋଟାଏ ପାକୁଳିରେ ପେଟକୁ ପଣିଯାଏ। ହେଲେ ହଳଦୀ ପତର ଲୁଗା ପିନ୍ଧା ଏଣୁରୀ ଅତୁଳନୀୟ ଓ ଅପ୍ରତିଦ୍ୱନ୍ଦ୍ୱୀ। ସେମିତି ଯାନବାହାନ ଭିତରେ ଶଗଡ଼ଟି ନିଆରା। ଯା ପାଇଁ ପଙ୍କା ସତକ, ବିଧିବଦ୍ଧ ଲାଇନ୍ ଅନାବଶ୍ୟକ। ଏହି ମନୁଚଲା ଗାଡ଼ିଟା ନିଜ ଗୁଳା ନିଜେ ଡିଆରି କରେ।

ସେଦିନ ଖଲ୍ଲିକୋଟ ଗଡ଼ର ସିଂହ ଘର ମଟରଗାଡ଼ିଟିଏ ଚଳାଇବାରୁ ମାଗୁଣିର ଶଗଡ଼ ଅଟଳ ହୋଇଗଲା। ଅଟଳ ହୋଇଗଲା ତାର ଜୀବିକା ଓ ଜୀବନ। ଯାନ୍ତ୍ରିକ ଷଡ଼ଯନ୍ତ୍ରର ଶିକାର ଆଧୁନିକ ମଣିଷର ଜ୍ୱାଳା ଓ ଯନ୍ତ୍ରଣା ଉପକ୍ଷମ ଲକ୍ଷ୍ୟରେ ନନ୍ଦସାର୍ବଜ୍ଞ ଏ କବିତାରେ ପ୍ରଚ୍ଛନ୍ନ ଇଙ୍ଗିତ ନାହିଁ କି ?

ବହୁଦିନ ପରେ ଗୋପୀନାଥ ମହାନ୍ତି ତାଙ୍କର ଦିଗଦିହୁଡ଼ିରେ ଓଡ଼ିଆ ରାନ୍ଧଣାର ଦୁର୍ବଣା କଥା କହିଛନ୍ତି। କାହିଁ ଗଲା ଆମ ସୁସ୍ଥପତର ପିଠା, କାହିଁଗଲା ଆରିସା, ମଣ୍ଡା, ଏଣୁରୀ, ମାଲପୁଆର ସ୍ବାଦ ? ତା ସ୍ଥାନରେ ଇଡ଼ିଲି, ଦୋଷା, ଉପମା ପହଞ୍ଚିଲା। ଆମର ରୁଟି ଓ ସ୍ବାତନ୍ତ୍ର୍ୟ କିଏ ଲୁଟିନେଲା ଆମର ଅଜ୍ଞାତରେ ? ପିଠା କଳି ଆଳରେ ଆମର ରୁଟିର ପ୍ରତିଦ୍ୱନ୍ଦିତାର ଆଭାସ ନାହିଁ ତ ?

ବିଜ୍ଞାନକୁ ନେଇ କବିତାଟିଏ ଥିଲା ‘ଗଛର ଜୀବନ ଅଛି କି ନାହିଁ’ । ଆଜି ନାତି ମଧ୍ୟରେ ଏ ବଚସା ନୂଆ ପାଠ ପଢୁଥିବା ପିଲାଟି ହୁଏତ ଆଜିର ସାଧାରଣ ଜ୍ଞାନ ପରୀକ୍ଷା ପାଇଁ ବିଧିବଦ୍ଧ ଯୋଜନାଟିଏ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିଛି ।

ଗଛର ଜୀବନ ଅଛି କି ନାହିଁ  
କହିଲୁ ଆଜି  
ନାହିଁରେ ନାହିଁ ଗଛ ବୁରୁଛର ଜୀବନ ନାହିଁ  
କହିଲା ଆଜି

ପିଲାର ଦୃଢ଼ୋକ୍ତି ଥିଲା -

ବହିରେ ଅଛି, ମୁଁ ପଢ଼ିଛି  
ଗଛର ପରାଲୋ ଜୀବନ ଅଛି ।

ପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ତରିଛି ଆଜି -

ଗଛଟା କଣ କଥା କହୁଛି  
ନା ବାଟ ଚାଲୁଛି  
କେମିତି କହିଲୁ ଜୀବନ ଅଛି ?

ଅତୀତରେ ଏହି ଅସ୍ୱୀକାର ଭବିଷ୍ୟତର ଭାବନାକୁ ପ୍ରତିବନ୍ଧିତ କରିନାହିଁ । ବୁଢ଼ୀ ଶେଷରେ କହିଛି, “ବାପା ତୋର ଆତ୍ମ/ଅଜ୍ଞାବଜ୍ଞା କଥା ସେ ବୁଝିବ ।” ତିନି ପାଢ଼ିର ଏ ସଂପର୍କ ଦେଇ ଜୀବନ ମଧ୍ୟରେ ଥିବା ବ୍ୟବଧାନରେ ସୀମା ସଂକୁଚିତ ହୋଇଛି । ବର୍ତ୍ତମାନର ପୃଷ୍ଠଭୂମିରେ ପରାବୃତ୍ତ ଅତୀତ ଭବିଷ୍ୟତକୁ ବାଟ ଛାଡ଼ି ଦେଇଛି ।

ଶିଶୁ ମନୋରଞ୍ଜନର ଅସ୍ତରୂପେ ସାଧାରଣତଃ ତିନିଟି ‘ F ’ କୁ ନିଆଯାଏ । Falsehood, Fidelity, Fantasy - ନାନା କୌତୁକ ହାସ୍ୟଭରା ମିଥ୍ୟା କଥା ଶିଶୁ ମନୋରଞ୍ଜନର ସାଧନ । ଏଗୁଡ଼ିକ ନିରାଧାର ନୁହନ୍ତି ଶିଶୁର ତରଳ ମନରେ ସ୍ୱରୂପି ଓ ସୁନାତି ପ୍ରତି ଅନୁରାଗ ପୃଷ୍ଠ କରିବା ଓ ଏହାକୁ ଜୀବନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉପଯୋଗ କରିବାର ସୂକ୍ଷ୍ମ ଆଶା କରି ପରିପୋଷିଛନ୍ତି । ପରବର୍ତ୍ତୀ କାଳରେ ରଚିତ ସମଗ୍ର କବିତାରେ ଏହି ଭାବାନୁଷଙ୍ଗର ଶୁଶ୍ରୁଷା ରହିଛି ।

ମୁଁ ବହୁଦିନ ଧରି ଗାଁରୁ ଦୂରରେ ଥିଲି । ପ୍ରଥମ ସରକାରୀ ଚାକିରୀ ପୁରୀ ସାମନ୍ତ ଚନ୍ଦ୍ରଶେଖର କଲେଜରେ । ମୋର ସୌଭାଗ୍ୟ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ କରୁଣାରୁ ମୋର ଗୁରୁଦର୍ଶନ ଅନେକାନେକ ଥର ଘଟିଛି । ଯାଇଛନ୍ତି ଉମାମାଥ ସାର, ଯାଇଥିଲେ ଗୌରାଙ୍ଗ ସାର୍ ଓ ଯାଉଥିଲେ ନନ୍ଦ ସାର୍ । ନନ୍ଦ ସାର୍ ତାଙ୍କର ଜଣେ ସାଂସ୍କୃତିକ ଓ ସାହିତ୍ୟିକ ଉତ୍ତରାଧିକାରୀ ଭାବରେ ମତେ ନେଇଥିଲେ । ସେଥିପାଇଁ ସାନିଧ୍ୟ ଓ ସଦିକ୍ଷା ଅଯାଚିତ ଭାବରେ ଦେଇଛନ୍ତି ।



ନନ୍ଦ ସାର୍ ଆପାତ ରୁଷ, ଅନୁବାର ଓ ମିତଭାଷୀ ଆଦର୍ଶନିଷ୍ଠ ବ୍ୟକ୍ତି । ଆଦୈବ ମରଣମୟ ଯୁଗାନ୍ତରେ ବା, ସେ କୁତ୍ରାପି ନ୍ୟାୟ ପଥରୁ ପଦେ ସୁଦ୍ଧା ପ୍ରବିଚଳିତ ହୋଇନାହାନ୍ତି । ତେବେ ତାଙ୍କର ରୁଷତା ତାଙ୍କର ଆଦର୍ଶବାଦୀ ଜୀବନର ଏକ ଅବିଚ୍ଛେଦ୍ୟ ବିଭାବ ଥିଲା । ପ୍ରଖର ପରୁଷତା ସହିତ ଅନାବିଳ ସ୍ନେହଶୀଳତା ତାଙ୍କର ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବକୁ ରୁଦ୍ର-ସୁନ୍ଦର କରିଥିଲା । କବି କେବେ ନିଷ୍ଠୁର ହୁଏ ନାହିଁ । ଏହି ଅନୁଭବ ମୋର ପରେ ହେଲା ।

ଓଡ଼ିଶାର ବହୁ ଦୂରତ ଛାନରେ ମୁଁ ମୋର କର୍ମମୟ ଜୀବନ ବିତାଇଛି । ବିକ୍ରମ ଦେବ କଲେଜ ଜୟପୁରରେ ଥିବାବେଳେ ହଠାତ୍ ଗୋଟିଏ ପତ୍ରିକା ପୃଷ୍ଠାରେ ନନ୍ଦ ସାର୍ଙ୍କ କବିତାଟି ଅନ୍ୟ କାହା ନାମରେ ବାହାରିଥିବାର ଦେଖିଲି । କବିତାଟି ଅବିକଳ ଉତ୍ତରା ଯାଇଛି : “କୁନି ନାନୀତା ମୋ ସକସକ, ଭାତ ହୋଇ ନାହିଁ ଧକ ଧକ” ଇତ୍ୟାଦି ।

ସାର୍ଙ୍କୁ ଚିଠିଟିଏ ଲେଖିଲି । ଉତ୍ତର ମିଳିଲା ନାହିଁ । ବହୁ ଦିନ ପରେ ଥରେ ବାଲିଚନ୍ଦ୍ରପୁର ବଜାରରେ ସାର୍ଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ଦେଖାହେଲା । କହିଲେ – ତୋ ଚିଠି ପାଇଛି । କିନ୍ତୁ କଣ କରିବା, ଚୋରୀ ରେ ସାହିତ୍ୟ ସଂସାର ଚାଲିଛି । ପ୍ରତିବାଦ କଥା କିଏ ଶୁଣିବ, ଛାପିବ, ପଢ଼ିବ ? ଅଭାବ, ଅନଟନ, ଦୁଃଖ, ଦୁର୍ବିପାକର ପୂର୍ଣ୍ଣ ବଳୟ ମଧ୍ୟରେ ସାର୍ଙ୍କ ଜୀବନ କଟିଛି । ପରିବାର ପ୍ରତିପୋଷଣ, ଝିଅ ବାହାଘର, ପୁଅମାନଙ୍କୁ ମଣିଷ କରିବା ପରି ଅନେକ ସାଂସାରିକ ଦାୟିତ୍ବ ତାଙ୍କ ସାଧନା ପଥରେ ଅନ୍ତରାୟ ହୋଇନାହିଁ । ରୂପକ, ନାଟିକା, ଗାତିକବିତା ମଧ୍ୟରେ ମନୋରଂଜନାତ୍ମକ ନୀତ୍ୟପଦେଶକୁ ସେ ଅଭିବ୍ୟକ୍ତି ଦେଇଛନ୍ତି । ତାଙ୍କର ଲେଖନୀ ଥିଲା ଅଜସ୍ରସ୍ରାବୀ । ଜୀବନର ଶେଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସେ ଲେଖୁଥିଲେ । ଏହି ଲେଖା ଭିତରେ ମଣିଷ ଜୀବନର ଶ୍ରେୟ ଓ ଧ୍ୟେୟ ସେ ନିରନ୍ତର ଅନ୍ବେଷଣ କରିଛନ୍ତି । ସାମାଜିକ, ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ଓ ସାମୁହିକ ଜୀବନର ସବୁତକ କରଣୀୟ ଓ ବରଣୀୟ ଶ୍ରେୟ ଦିଗକୁ ସେ ତାଙ୍କ ରଚନାରେ ନିର୍ଦ୍ଦେଶିତ କରିଛନ୍ତି । ସବୁକଥାର ହିସାବ ମୋ ପାଖରେ ନାହିଁ । ତେବେ ମତେ ସବୁଠାରୁ ଭଲଲାଗେ ଏହି କବିତାର କେଇପଦ :

“ଅଜା ପତାରିଲେ ଆଇକି  
ସେ ଘରେ ତ କେହି ଗୋଟିଏ ନାହିଁ  
ପଞ୍ଜାଚା ଘୁରୁଛି କାହିଁକି ?  
ଚି.ଭି. ବି ଲାଗିଛି ସେ ଘରେ  
କେହି ତ ଦେଖୁନ ଲାଗିଛି ଚି.ଭି.  
ତମେ ତ ବସିଛ ଏ ଘରେ ।”

ଅସାବଧାନତା ଓ ଅନବଧାନତା ହେତୁ ଜାତୀୟ ସମ୍ବଳର ଯେଉଁ ଅପତୟ ଘଟୁଛି ତାର ସୂଚନାଟିଏ ଏଥିରେ ରହିଛି ।

କବିତା ଆଲୋଚନାର ଅବକାଶ ମୋର ନାହିଁ । ଅନେକ ଗୁରୁଙ୍କର ଆଶିଷରେ ମୋର ଜୀବନ ଧନ୍ୟ ହୋଇଛି । ନନ୍ଦ ସାର ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରୁ ଜଣେ ହେଲେ ହେଁ ମୋ

ପାଇଁ ସେ ଅନନ୍ୟ ଓ ଅଦ୍ୱିତୀୟ । ଆଜିର ପ୍ରଚାରଶାମୟ ଯୁଗ ଓ ଜଗତ ପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି ଦେଲେ, ଆମ ସମୟର ଗୁରୁମାନଙ୍କର କର୍ମନିଷ୍ଠା, ଶ୍ରଦ୍ଧା, ସଦିଚ୍ଛା, ଏକାଗ୍ରତା ଓ କାର୍ଯ୍ୟଦକ୍ଷତା ଅତୀତର ଏକ ସ୍ୱପ୍ନିକ ଅବାସ୍ତବତା ପରି ମନେ ହେବ । କଠୋର ଗୁରୁବ୍ରତ, ଅନମନୀୟ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ, ଶୁଚିଦୀପ୍ତ ରୁଚି, ପ୍ରଜ୍ଞା-ପିଣ୍ଡିତ ସାଧନାପରକ କର୍ମଯୋଗ ପାଳନରେ ମୋର ପରମ ପ୍ରିୟ ସ୍ୱର୍ଗୀୟ ଗୁରୁଦେବ ନମସ୍ୟ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ଯେଉଁ ନିଷ୍ଠା ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିଛନ୍ତି ତାର ସହଜ ବିକଳ୍ପଟିଏ ସର୍ବଦା ଦୁର୍ଲଭ । □□□

ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ, ଓଡ଼ିଆ ବିଭାଗ  
ରେଭେନ୍ସା କନିଷ୍ଠ ମହାବିଦ୍ୟାଳୟ, କଟକ

## ସେଇ କବି ଅକ୍ଷୟ ଅମର

ରବୀନ୍ଦ୍ର ନାଥ ସାହୁ

ବାତ୍ୟା ଉଡ଼ାଇ ନେଲା  
ତୁଆଁଣିଆ ଚାକଘର,  
ବନ୍ୟା ଧୋଇ ଦେଲା  
ଆସବାସ ତା'ର  
ଦୁଃଖ ଅରାଇଲା ତାହାର ଅନ୍ତର ।  
ଅକ୍ଷତ ରହିଲା କିନ୍ତୁ  
ତା' କ୍ଷୁଦ୍ର ଲେଖନୀ,  
ସୃଷ୍ଟି କରି କରି ସତ୍ୟ ଚିରନ୍ତନୀ ।  
ସେ ଥିଲା ରୂପର କବି  
ରୂପାୟିତ କଲା ହୃଦୟର ଛବି ।  
କବି ସିଏ ସବୁରି ପ୍ରାଣର,  
ରଖୁଥିଲା ଅଲୋଡ଼ା ବସ୍ତ୍ରର ଖବର ।  
ପ୍ରେମ-ପ୍ରଣୟ ଓ ମିଳନ-ବିରହ  
ଲେଖନୀର ମୁନେ ହେଲା ଏକାକାର ।

ଢିଙ୍କି-ଚକି, ଶିଳ-ଶିଳପୁଆ  
ଢିବି ଆଳୁଅରେ  
କୋଳଥ ଯାଉ ଖୁଆ  
କବିତାର ଆଗେ ହେଲା ଥୁଆ ।  
ନଈ ପଠାର କାଶିତଣ୍ଡୀ ଫୁଲ  
ତା' ଗୀତରେ ହୋଇଲା ଗୋଲାପ ।  
ଜନମ ଥିବାରୁ ଜୀବନ  
ମରଣ ଥିବାରୁ ମରଣ  
ତା'ର ମଧ୍ୟେ ସେହି କବି  
ଅକ୍ଷୟ ଅମର ।

□□□

ଅବସର ପ୍ରାପ୍ତ ଶିକ୍ଷକ, କୁସୁପୁର

# ସାରସ୍ୱତ ସାଧକ ନନ୍ଦ କିଶୋର

ଡଃ. କୈଳାସ ଚନ୍ଦ୍ର ବେହେରା

କଟକ ଜିଲ୍ଲାର ମାହାଙ୍ଗା ଥାନା ଅଞ୍ଚଳ ସମଗ୍ର ଓଡ଼ିଶାର ଏକ ସୁପ୍ରସିଦ୍ଧ ସାରସ୍ୱତ ଓ ସାଂସ୍କୃତିକ ତୀର୍ଥ ଭୂମି । ଆଦି ନାଟ୍ୟକାର ଜଗନ୍ ମୋହନ ଲାଲ, ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ୟାରୀମୋହନ, ବାଲ୍ମୀ ବିଶ୍ୱନାଥ କର, ଗଣକବି ବୈଷ୍ଣବ ପାଣି, ଗାନ୍ଧିକ ପ୍ରାଣବନ୍ଧୁ ସାମଲ ପ୍ରମୁଖ ଏ ମାଟିରେ ଜନ୍ମ ଗ୍ରହଣ କରି ନିଜ ନିଜ ସାଧନା ବଳରେ ସ୍ୱନାମଧନ୍ୟ ହେବା ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ଜନ୍ମ ମାଟିକୁ ମହିମା ମଣ୍ଡିତ କରି ଯାଇଛନ୍ତି । ପୁନଶ୍ଚ ମାହାଙ୍ଗା ଅଞ୍ଚଳରେ କୁସୁପୁର ଗ୍ରାମର ସ୍ୱାତନ୍ତ୍ର୍ୟ ଅବଶ୍ୟ ସ୍ୱୀକାର୍ଯ୍ୟ । ଏହି ଗ୍ରାମ ଜନ୍ମ ଦେଇଛି, ପଲ୍ଲୀକବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ବଳ, ଶିଳ୍ପୀଗୁରୁ ବିନ୍ଦାଧର ବର୍ମା, ଆଧୁନିକ କବି ଜ୍ଞାନୀନ୍ଦ୍ର ବର୍ମା ଏବଂ ଔପନ୍ୟାସିକ ରାଜେନ୍ଦ୍ର ବର୍ମାଙ୍କୁ । ଏ ମାଟି ତାର ଐତିହ୍ୟ ବଜାୟ ରଖିବାରେ ସତତ ଉଦ୍ୟମଶୀଳ ବୋଲି କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ପ୍ରମାଣ କରିଦେଇ ଯାଇଛନ୍ତି । ସେ ଯେ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ରୂପେ ତାଙ୍କ ପୂର୍ବସୁରୀମାନଙ୍କର ଉପଯୁକ୍ତ ଦାୟାଦ ତାହା ତାଙ୍କ ସାରସ୍ୱତ କୃତିରୁ ସ୍ପଷ୍ଟ ପ୍ରମାଣିତ ।

କୁସୁପୁର - ଚତୁର୍ପାର୍ଶ୍ୱରେ ପ୍ରକୃତି ରାଶୀର ଅପୂର୍ବ ସୁଷମା । କଳ ନିନାଦିନୀ ବିରୁପା । ତାରି କୂଳେ କୂଳେ ଲମ୍ବିଯାଇଛି ପିଙ୍କୁଳେଇ ବନ୍ଧ । ନଈ ମଝିରେ ଜଟିଆ କୁଦ । ଅଦୂରରେ ଲଳିତଗିରି, ଆଲମଗିରି, ଲକ୍ଷ୍ମୀପାହାଡ଼ ଇତ୍ୟାଦି । ଏ ସବୁର ମିଳିତ ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରକୃତିର ଚିତ୍ରଶାଳା ପରି ମନେ ହୁଏ । ଏହି ଛବିକଳ, ମନମୁଗଧକର ପରିବେଶ କିଶୋର ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କୁ ପରିଣତ କରି ଦେଇଥିଲା କବି, ନାଟ୍ୟକାର ଓ ଶିଳ୍ପୀ ଭାବରେ ।

୧୯୨୫ ମସିହା ଜୁନ ମାସ ୧୨ ତାରିଖରେ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ସାରସ୍ୱତ ସାଧକ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଜନ୍ମ । ପିତା ହରେକୃଷ୍ଣ ସାମଲ, ମାତା ପଦ୍ମା ଦେବୀ । ବାଲ୍ୟକାଳରୁ ନନ୍ଦକିଶୋର ଦାରିଦ୍ର୍ୟ ପ୍ରପାତିତ । ଶିକ୍ଷା କ୍ଷେତ୍ରରେ ବାରମ୍ବାର ବିଚ୍ଛିନ୍ନତା ସତ୍ତ୍ୱେ କବି ବି.ଏ., ବି.ଇଡି. ଯୋଗ୍ୟତା ହାସଲ କରିଥିଲେ ନିଜର ଅଧ୍ୟବସାୟ ବଳରେ । ନନ୍ଦ କିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର, କୁସୁପୁରରୁ ଶିକ୍ଷକତା ଆରମ୍ଭ କରି କେନ୍ଦୁଝର ଦେଓଗାଁ ଉଚ୍ଚ ଇଂରାଜୀ ବିଦ୍ୟାଳୟ, ରିମୁଳୀ ବିଦ୍ୟାଳୟ, ଜି.ଏସ୍ ବିଦ୍ୟାପୀଠ, ସିଦ୍ଧେଶ୍ୱର ପୁର, ଗାନ୍ଧୀ ଶିକ୍ଷାଶ୍ରମ, ଚମ୍ପାପୁର ଇତ୍ୟାଦି ଶିକ୍ଷାନୁଷ୍ଠାନରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରି ଶେଷରେ ନିଜ ଗାଁ ସ୍କୁଲ ନନ୍ଦ କିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର କୁସୁପୁରରୁ ଅବସର ଗ୍ରହଣ କରିଛନ୍ତି । ସବୁ ସ୍ଥାନରେ ନନ୍ଦ କିଶୋର ଛାଡ଼ି ଆସିଛନ୍ତି ଅପୂର୍ବ କୃତିତ୍ୱ ଆଉ ସହୃଦୟତାର ସ୍ମୃତି ଚିହ୍ନ ।

୧୯୩୯ ମସିହାରେ ନନ୍ଦ କିଶୋର ମାଇନର ଛାତ୍ର । ତାଙ୍କର ଶିକ୍ଷକ ରଘୁନାଥ ପଣ୍ଡା ଛୋଟ ଛୋଟ ନାଟକ ଲେଖି ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ଅଭିନୟ କରାଉଥାନ୍ତି । ନନ୍ଦ କିଶୋର

ତାହା ଦ୍ଵାରା ବହୁମାତ୍ରାରେ ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇଥିଲେ । ବୈଷ୍ଣବ ପାଣିକ ଗୀତିନାଟ୍ୟ, ରାଧାନାଥ ଗୁପ୍ତାଙ୍କ ଇତ୍ୟାଦି କେତେକ ସାହିତ୍ୟ ଗ୍ରନ୍ଥ ତାଙ୍କୁ ନାଟକ ଓ କବିତା ରଚନା ପାଇଁ ପ୍ରେରଣା ଯୋଗାଇ ଥିଲା । ମାତ୍ର ୧୬ ବର୍ଷ ବୟସରେ ସେ ରଚନା କରିଥିଲେ ନାଟକ କୁମାର ସମ୍ଭବ । ନାଟକର ଅଭିନୟ ରଙ୍ଗମଠାରେ ନିମନ୍ତ୍ରିତ ଅତିଥି ଶିଳ୍ପୀ ବିନ୍ଦାଧର ବର୍ମା ଓ କବି ମାୟାଧର ମାନସିଂହ, ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କ କୃତିକୁ ବିପୁଳ ପ୍ରଶଂସା କରି ତାଙ୍କୁ ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି କରିବାକୁ ଯଥେଷ୍ଟ ଉତ୍ସାହିତ କରିଥିଲେ । ଫଳରେ ପରେ ପରେ ତାଙ୍କ ଲେଖନୀରୁ ସୃଷ୍ଟି ହୋଇଥିଲା ‘ସାବିତ୍ରୀ’ ଓ ବଂଗଳାରୁ ଅନୁଦିତ ନାଟକ ‘ଆମ୍ବାହୃତି’ । ତା’ପରେ ଗାଉଁଲି ଗୀତ ଓ ବଉଳର ଚିଠି ପ୍ରକାଶିତ ହେଲା । ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ଯେଉଁ ଲୋକପ୍ରିୟ ପୁସ୍ତକ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଛି ସେଗୁଡିକ ହେଲା ଗୁଣ୍ଡୁଚି ମୂଷାର ପିଠିରେ ଗାର, ପଲ୍ଲୀକବି ରୂପକ, ସରଗପୁଲ, ମୁ କହିବି କଥାଟିଏ ତୁ କହିବୁ ହୁଁ, ଆମେ ଏ ମାଟିର ସୁନା ଫରୁଆ, ମତେ ଯେତେବେଳେ ଦଶ ବରଷ, ଆମ ଲାଗି ଯିଏ ଶହାଦ ହେଲେ, ହସି ହସାଇବା ଧରା, ମୋ ଗାଁ ମୋ ଘର, ଇତ୍ୟାଦି ଇତ୍ୟାଦି ।

୧୯୬୨ ମସିହାରୁ ଆଦ୍ୟାବଧି ଓଡ଼ିଶା ସରକାରୀ ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକରେ ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କ ବହୁ ବିଷୟ ସ୍ଥାନୀତ । ତନ୍ମଧ୍ୟରୁ ‘ଆମଘର’ କବିତା ଏତେ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ଯେ କେବଳ ଏହି କବିତାଟି ଯୋଗୁ ସେ ସାରା ଓଡ଼ିଶାରେ ପରିଚିତ ହୋଇଯାଇଛନ୍ତି କହିଲେ ଭୁଲ ହେବ ନାହିଁ । ସମଗ୍ର କବିତାଟି ନିଛକ ଚିତ୍ରରେ ଚିତ୍ରିତ ।

ଏଇ ଘରଟିରେ ଜନମ ମୋର  
ମାଟି ତାଳଘର ନତା ଛପର  
ଏଇ ଘରେ ଆମେ ଏକାଠ ବସୁ, ଏକାଠି ହସୁ-  
ଏଇଟି ଆମର ରୋଷେଇ ଘର  
ରଖିବା ତାହାକୁ ସଫାସୁତର  
ଏଇ ଘରେ ମା ପରିବା କାଟେ,  
ବେସରବାଟେ ଜାଇ ରଗଡେ  
ଶାର ଖରଡେ ଗଡ଼ଇ ପିଠା -  
ଆରିସା କାକରା ଆହାଳି ମିଠା ଇତ୍ୟାଦି

କେବଳ ଏଇ ପଂକ୍ତି କେତୋଟି ନୁହଁ ସମଗ୍ର କବିତାଟି ଖୁବ୍ ମର୍ମ ସ୍ପର୍ଶୀ । ଏତଦ୍ ବ୍ୟତୀତ ‘ମହାନଦୀର ନିଜ କଥା’ ଦ୍ଵିତୀୟ ଶ୍ରେଣୀ ପୁସ୍ତକରେ, ୬ଷ୍ଠ ଶ୍ରେଣୀ ସାହିତ୍ୟ ବହିରେ ପାଦୁକା ପୂଜା, ଆଦିବାସୀ ଆମେ ଆଦିବାସୀ, ବାଗ୍ମୀ ବିଶ୍ଵନାଥ, ବଡ଼ ଲୋକଙ୍କ ଜୀବନ କଥା ପୁସ୍ତକରେ ଉତ୍କଳ ଗୌରବ ମଧୁସୂଦନ, ଉତ୍କଳମଣି ଗୋପବନ୍ଧୁ, କବିବର ରାଧାନାଥ, ଶିଳ୍ପୀ ବିନ୍ଦାଧର ଇତ୍ୟାଦି ସ୍ଥାନୀତ ହୋଇଛି । Language Writer ଭାବରେ ୧୯୬୫ ମସିହାରେ ସେ ୫ମ ଶ୍ରେଣୀ ପାଇଁ ଓଡ଼ିଶା ସରକାରଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ମନୋନୀତ

ହୋଇଥିଲେ ।

ଓଡ଼ିଶାର ସବୁ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ଶିଶୁ ପ୍ରତିକାରେ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଲେଖା ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଛି । ଆକାଶବାଣୀ କଟକ କେନ୍ଦ୍ରର ସେ ଥିଲେ ଜଣେ ସ୍ୱାକୃତି ପ୍ରାପ୍ତ ଗୀତିକାର । ତାଛଡ଼ା ସେ ଆକାଶବାଣୀର ବିଭିନ୍ନ ବିଭାଗର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ଅଂଶ ଗ୍ରହଣ କରି ଦକ୍ଷତା ପ୍ରତିପାଦନ କରିଛନ୍ତି ।

ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ବ୍ୟତୀତ ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କର ବହୁ ନାଟକ, ଗୀତିନାଟ୍ୟ, ରୂପକ ଓ ଗୀତିନାଟ୍ୟ ରଂଗମଞ୍ଚ ଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ବେତାର ଓ ଦୂରଦର୍ଶନରେ ରୂପାୟିତ ହୋଇଛି । ସେଗୁଡ଼ିକ ହେଲା, କୁମାର ସମ୍ଭବ, ଚଷାପୁଅ, ସାବିତ୍ରୀ, ସାଧବ ଝିଅ, ଶ୍ରୀୟା, ନୀଳମାଧବ, କଣାମାଠିଆ, ପଲ୍ଲୀକବି, ଶେଷ ଦ୍ୱାପର, ସାତା, ହରିଶ୍ଚନ୍ଦ୍ର, ବାଲିରଥ, ମର୍ତ୍ତ୍ୟମଣ୍ଡଳେ ଦେହ ବହି, ମୃଗତୃଷ୍ଣା ଇତ୍ୟାଦି ଆହୁର ଅନେକ ।

ନିଜର ବିପୁଳ ସାମ୍ପର୍କ ସୃଷ୍ଟି ପାଇଁ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର, ୧୯୯୫ ମସିହାରେ ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡେମୀ ପକ୍ଷରୁ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ବିଭାଗରେ ପୁରସ୍କୃତ ହୋଇଥିଲେ । ଏତଦ୍ ବ୍ୟତୀତ ଓଡ଼ିଶାର ବହୁ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ସାହିତ୍ୟ ଅନୁଷ୍ଠାନ କବିଙ୍କୁ ବିଭିନ୍ନ ସମୟରେ ମର୍ଯ୍ୟାଦାଜନକ ସମ୍ମାନ ତଥା ପୁରସ୍କାର ପ୍ରଦାନ କରିଛନ୍ତି । ସଂଖ୍ୟାରେ ତାହା ଅର୍ଦ୍ଧ ଶତକରୁ ଅଧିକ ।

ଅତି ସାଧାରଣ ଜିନିଷ, ସାଧାରଣ ଘଟଣାକୁ ନେଇ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ଚମତ୍କାର କବିତା ସୃଷ୍ଟି କରିବାରେ ସିଦ୍ଧ ହସ୍ତ । ଶୁଖିଲା ପତ୍ର କେତେ ନଗଣ୍ୟ । କିନ୍ତୁ କବିଙ୍କ ଲେଖନୀ ତାକୁ କେତେ ଉଜଳୁ ଉଠେଇଛି, ତାହା ବିଚାର୍ଯ୍ୟ—

ତୋଟାରେ ମୁଁ ଶୁଖିଲା ପତର  
ଶୁଖୁ ଶୁଖୁ ସଜିତା ହେଲିଣି  
ମୋତେ ତୁମେ ଗୋଟେଇ ନିଅରେ  
ମୁହଁ ହେବି ବଢ଼ିଆ ଜାଲେଣି ।

ସେହିପରି ପିଠାମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ କଳି ଲଗେଇ ଦେଇ କବି ଯେଉଁ ଆତ୍ମକଥା ମାନ ବାହାର କରି ଆଣିଛନ୍ତି ତାହା ବେଶ୍ ମନଛୁଆଁ —

ହଜଦୀ ପତର ଲୁଗା କେ ପିନ୍ଧିଛି  
ହେଜି ହେଜି କରି କହନି ?  
ବାଲି ଉପରେ ତାଙ୍କର କବିତା  
ପଥର ଥିଲି ମୁଁ ଗୋଡ଼ି ପାଲଟିଲି  
ଆଜି ମୁଁ ପାଲଟି ଯାଇଛି ବାଲି  
କୁଆଡୁକୁ ଇଏ ନବ ମତେ ଠେଲି

ନାହିଁ ଜାଣିଲି ରେ ନାହିଁ ଜାଣିଲି ।

ପରିବେଶ ସଚେତନଶୀଳ କରି ନନ୍ଦ କଣ୍ଠୋର ବନ୍ଧୁ କରିବା ଲେଖି ଆମ ପରିବେଶ ସୁରକ୍ଷା ପାଇଁ ବନ୍ଧୁ ଉପଦେଶ ଦେଇ ଯାଇଛନ୍ତି -

ଗଛ ବହୁଛି, ଛୋଟିଆ ଗଛଟି ବଡ଼ ହେଉଛି

ତାଳ କାଟି ଦେଲେ କ୍ଷୀର ଝରୁଛି

କ୍ଷୀର ନୁହେଁନ ତା' ରକତ ସେଇ

କେମିତି କହୁଛୁ ଜୀବନ ନାହିଁ ।

ଛୋଟ ପିଲାଟି ଭାଷାରେ ସାମାଜିକ କୁ ସଂସ୍କାର ପ୍ରତି କି ତୀବ୍ର ପ୍ରତିବାଦ ସେ କହିଛନ୍ତି ଆମେତ ମଣିଷ ସିଏତ ମଣିଷ କରିବାରେ

‘ଆମେ ତାକୁ କିଆଁ ଛୁଇଁବା ନାହିଁ

କଣ ହେଉଛି ତାର

ଆମେତ ମଣିଷ ସିଏତ ମଣିଷ

ଇଏ ମା କୋଉ ବିଚାର ?’

ସ୍ବାଧୀନତାର ସଂଜ୍ଞା ନିର୍ଦ୍ଦାରଣରେ କବିଙ୍କ ମନ୍ତବ୍ୟ ବେଶ ମନନଧର୍ମୀ

‘ସ୍ବାଧୀନ ଦେଶର ମଣିଷ ତମେ

ସ୍ବାଧୀନ ଦେଶର ପକ୍ଷୀ ଆମେ ଆମକୁ ବନ୍ଦୀ କରି

କେମିତି ଗାଉଛ ସ୍ବାଧୀନତା ଗୀତ

ଜାତୀୟ ପତାକା ଧରି ?’

ଦୁଃଖ ଦୈନ୍ୟ ପ୍ରପୀତିତ ହୋଇଥିବା ହେତୁ କବି ଗରିବ, ଖଟିଶୁଆ ମୂଲିଆଙ୍କ ପ୍ରତି ଅତ୍ୟନ୍ତ ସମ୍ବେଦନଶୀଳ ଥିଲେ । ତାହା ନିମ୍ନ ପଂକ୍ତିରୁ ଅନୁମେୟ-

‘ଦିନକୁ ଦି’ଅର ନମିଲେ ଭାତ

ଶୁଖି ଶୁଖି ଆସେ ଦେହ ରକତ

ଚାଲିତ ନପାରେ ଆହା

କି କାମ କହିବି କି ମଣିଷ ହେବି

ପିଇ ପିଇ ନାଲି ଚାହା ?’

ପଲ୍ଲୀପ୍ରୀତି ତାଙ୍କର ଅନନ୍ୟ । ନିଜ ଗାଁ ପ୍ରତି ତାଙ୍କ ବ୍ୟାକୁଳତା ନିମ୍ନ ପଂକ୍ତିରୁ ସ୍ପଷ୍ଟ ହୁଏ ।

“ଭାରି ଭଲ ଲାଗେ ମତେ ମୋ ଗାଆଁ

ଆଲୁଅ ପବନ ତାର

ଯେଉଁଠି ରହିଲେ ଯୁଆଡେ ଗଲେ

ମନେ ପଡ଼ିଯାଏ ମୋର।”

ସ୍ଵାର୍ଥପର ମଣିଷର ରୂପାନ୍ତରଣ ପାଇଁ ଚମତ୍କାର କବିତା ସେ ଲେଖିଛନ୍ତି -

“ପରସେବା ଭୁଲିସାରିଲିଣି - ନିଜପାଇଁ ସବୁମୁଁ କରୁଛି  
ମତେ ତୁମେ ଗଛଟିଏ କର - ପ୍ରଭୁ ତୁମ ଚରଣ ଧରୁଛି  
ସେଇ ଠେଙ୍ଗ ଠିଆ ହୋଇରହି ଖରାବର୍ଷା କାକର ସହିବି  
ମତେ ଯିଏ ହାଣୁ ଅବା ମାରୁ ତାକୁ ପଦେ କିଛି ନ କହିବି।”

ସ୍ଵାର୍ଥପର ମଣିଷର କୃତଗୁଡ଼ାକୁ ଅଂଗୁଳି ନିର୍ଦ୍ଦେଶ କରି ସେ କାଇଥିବା କବିତା ଅତ୍ୟନ୍ତ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ

ମତେ ଯିଏ କଲା ଗାଈ  
ତତେ ଦେଲା ଯିଏ ମଣିଷ ଜନମ  
କାହିଁକି ମୁଁ ଜାଣେ ନାହିଁ।

ଏ ସବୁ ଆଲୋଚନାରୁ ଆମେ ଏହି ସିଦ୍ଧାନ୍ତରେ ଉପନୀତ ହେବା ଠିକ୍ ହେବ ନାହିଁ ଯେ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର କେବଳ ଜଣେ ଶିଶୁ କବି। ତାଙ୍କର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ଅଦ୍ୟାବଧି ପାଠକ ଦୃଷ୍ଟିର ଅନ୍ତରାଳରେ ରହି ଯାଇଛି। ସେ ସବୁରେ ପାଣ୍ଡିତ୍ୟ, ବୌଦ୍ଧିକତା, ଗଭୀର ମନସ୍ତତ୍ତ୍ଵ, ବିସ୍ମୃତ ବିଚାରବୋଧ, ଅକାତ୍ୟ ଚାର୍ଯ୍ୟକତା ଓ ନୂତନ ଚେତନାର ଝଲକର ସ୍ଵସ୍ପତୀ ଉପଲବଧ ହୁଏ। କବିଙ୍କର ଜୀବନ ଦର୍ଶନରୁ ଗୋଟିଏ ଉଦାହରଣ ନିଆଯାଇ ପାରେ।

ଦୁଃଖ ମୋର ଅଂଗରୁ ନିଜିନି  
ନିଜିବାକୁ ଦେବି ନାହିଁ ତାରେ  
ବହୁ ଲୋକ ଛାଡ଼ି ସେ ଆସିବି

ମୋ ପାଖକୁ ଅତି ଆପଣାରେ।

ଜୀବନର ଅନ୍ତିମ ସମୟ ଆଡ଼କୁ ମୃତ୍ୟୁ ଚେତନା କବି ପ୍ରାଣକୁ ଖୁବ୍ ଆନ୍ଦୋଳିତ କରିଥିଲା। ଶ୍ମଶାନକୁ ଲକ୍ଷ୍ୟକରି ସେ ଗାଇ ଉଠିଥିଲେ -

ଶମଶାନ ଥରେ ହସି ଉଠିଲାରେ  
ମୋ ଆଡ଼କୁ ଚାହିଁ  
ସେଠି ଠିଆ ହେଲି ତାକୁ ପଚାରିଲି  
କିଛି ସେ କହିଲା ନାହିଁ।

ସର୍ବଜୟୀ କାମର ଜୟଗାନ କବିବର ରାଧାନାଥ ରାୟଙ୍କର “ଚନ୍ଦ୍ରଭାଗା” କାବ୍ୟରେ ଉଦ୍‌ଘୋଷିତ ହୋଇଛି -

“ଯେ ଯେତେ ଚେଜସ୍ଵୀ ତା ଚେଜ ମୋତେ ଅଛଇ ଜଣା  
ଫୁଲ ଶର ଆଗେ ପଡ଼ିଲେ ବୁଦ୍ଧି ହୁଅଇ ବଣା।”

ଏ ପ୍ରସଂଗରେ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କ ବକ୍ତବ୍ୟ ହେଲା -

‘ରୂପ ମୁଁ ଦେଖୁଛି ନାରୀ ପୁରୁଷର ହାତ କଳାଳ ସାର  
ସେଇଠି ହାରିଛି ବିଶ୍ୱ ବିଜୟୀ ପୁଲକ୍ଷୁ ପୁଲ ଶର।’

ଏହିଭଳି ତାଙ୍କର ଅନେକ କବିତାରେ ଚିତ୍ରିତ କାବ୍ୟିକ ଦକ୍ଷତା ପ୍ରମାଣ କରେ  
ଯେ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର କେବଳ ଜଣେ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ନଥିଲେ। ତାଙ୍କ ରଚିତ ଅନେକ  
ନାଟକ ଓ ରୂପକ ମାନଙ୍କରେ ମାନବଧର୍ମୀ ବହୁ ବକ୍ତବ୍ୟ ରହିଛି। ସେସବୁ ଆଲୋଚନା  
ସାପେକ୍ଷ।

ନିର୍ବିବାଦରେ ଏହା ଅନସ୍ୱୀକାର୍ଯ୍ୟ ଯେ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ଥିଲେ ବହୁମୁଖୀ  
ପ୍ରତିଭାର ଅଧିକାରୀ। ତାଙ୍କର ସମଗ୍ର ସାହିତ୍ୟର ଅନୁଶୀଳନ ଓ ପର୍ଯ୍ୟାଲୋଚନା ଓଡ଼ିଆ  
ସାହିତ୍ୟକୁ ନିଶ୍ଚିତ ରୂପେ ଉଦ୍‌ବିମଳ କରିବ ଏହା ନିଃସନ୍ଦେହ। □□□

ନାନପୁର, ବାଲିଚନ୍ଦ୍ରପୁର, ଯାଜପୁର

## ଘାସ ପରି ନିବିଡ଼

ଡକ୍ଟର ଲାବଣ୍ୟ ଚନ୍ଦ୍ର ସାହୁ

କିଏ କହେ, ସିଏ ଏକା

ଶିଶୁ ଲାଖି, ଲେଖୁଥିଲେ କବିତା,

ନ ଥିଲା, ଭାଷାର ଭିତ

ଥିଲା ଅବା, ସତେ ‘ମଣିମୁକୁତା’

ଥାଏ ଯାହା, ବଙ୍କା ତେଜା

ଦେଉଥିଲେ, ନିଜ ହାତେ ସଜାତ

ହସି ହସି, ଚାଟକୁ ସେ

ପାଠମହୁ, ଦେଉଥିଲେ ଅଜାତି।

ନିଜ ପରି, ଲାଗେ ମୋତେ

ଥିଲେ ବି ସେ, ଦୂରନ୍ତର ପାହତ

‘ମାଟି’ ପରି ଚିହ୍ନା ଜଣା

ଥିଲା ସିଏ, ‘ଘାସ’ ପରି ନିବିଡ଼ । □□□

୩୫, ବସନ୍ତ ବିହାର, ବ୍ରହ୍ମେଶ୍ୱର ମନ୍ଦିର ମାର୍ଗ, ଭୁବନେଶ୍ୱର



# ମହକ

ପ୍ରଭାତ କୁମାର କର

ସଜପୁଲ ପରି  
ନରମ ହସକୁ  
ଯିଏ କଳି ପାରେ ତୁଳିରେ  
କଷ୍ଟା କଣି ପରି  
ନହକା ମନକୁ  
ରଂଗ ଦେଲା ସିଏ କାଳିରେ ।୧।  
ଗାଇ ଭାଷା  
ଯିଏ ବୁଝି ପାରୁଥିଲା  
ପକ୍ଷୀ ମନର ବ୍ୟଥା  
ସବୁରି ମରମେ  
ସିଏ ଭରିଦେଲା  
ସ୍ବାଧୀନ ମନରେ ସ୍ବାଧୀନ ଚିନ୍ତା ।୨।  
ଭୁଲି ନଥିଲେ ସେ  
ଅତୀତର ସ୍ମୃତି  
ମା' ବୁଢ଼ୀର ସେ କଥା  
ଶୁଣି ଥିଲେ ଯାହା  
ତା' କୋଳରେ ଶୋଇ  
ବଡ଼ ଲୋକଙ୍କର ଗାଥା ।୩।  
ସମାଜରୁ ସିଏ  
ଯାହା ପାଇଥିଲେ  
ଦେଲେ ସେ ତା'ଠାରୁ ଆହୁର ବେଶି  
ଆଗାମୀ ପାତିର  
ମନ ସିଲଟରେ  
କେତେ ନୂଆଛବି ଆଙ୍କିଲେ ବସି ।୪।

ଜୀବନ ଆୟୁକୁ  
ମହୁପେଣା ଭାବି  
ସଂଚିଗଲେ କେତେ ଜ୍ଞାନର ମହୁ  
ଆମ ପାଇଁ ସିଏ  
ଦେଇ ଗଲେ ଖାଲି  
ଯିଏ ଯାହା ନେବ ସେଇଠୁ ନଉ ।୫।  
ଏ ଜନମ ମାଟି  
ମା'ଟି ତାହାର  
ଗଢ଼ିଛି ସେନେହ ମମତା ଦେଇ  
ମୁହଁରେ ତା'ର ହସ ଉକୁଟୁଛି  
ଏମିତି ପୁଅର ସୁଗୁଣ ପାଇଁ ।୬।  
ନନ୍ଦ ବଜାହେ  
ନନ୍ଦ କିଶୋର  
ତୁମେ ଅଟ ଏଇ ମାଟିର ତେଜ  
ସାର୍ଥକ ତୁମ ଜନମ ଲାଭିଛି  
ସେଠୁ ଥାଇ  
ଥରେ ନିରେଶ୍ୱ ଦେଖ ।୭।

□□□

ଗୁଣୁପୁର, ମାହାଙ୍ଗା, କଟକ

# କହିତ ନୁହଁଇ ଭାରତୀରେ

ଗୋବିନ୍ଦ ଚନ୍ଦ୍ର ମହାପାତ୍ର

ହେ ବରେଣ୍ୟ ଭାରତୀ ପୂଜାରୀ  
ସଫଳ ସାଧନା ତବ ସ୍ମୃତି ନୋହେ ପାଶୋରି ।୧।  
ନିତି ନୂଆ କବିତା ଶୁଣାଉ ଥିଲ କମଳ ରୂମରେ  
କିଏ ଜାଣିଥିଲା ଶିଶୁ ମନ କିଣି ନେବ ଦିନେ କଲମ ମୂଳରେ ।୨।  
ତାଳ ଛନ୍ଦେ ଗୁଛା କେତେ ଗୀତିନାଟ୍ୟ ମାଳା  
ଅଭିନୀତ ରଙ୍ଗମଞ୍ଚେ କାରତି ଅଭୁଲା ।୩।  
ଗୁଣ୍ଡୁଚି ମୂଷାର ପିଠିରେ ଗାର  
କିପରି କଳ୍ପିଲା ମନେ ତୁମର ।୪।  
ଗୋଟିଏ ଗାଁର ଦୁଇ କୁମର  
ଉଭୟଙ୍କ ନାଁ ନନ୍ଦ କିଶୋର ।୫।  
ବଳେ ପଲ୍ଲୀ କବି ନାମେ ବିଖ୍ୟାତ  
ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ତୁମ କୃତାତ ।୬।  
ସରଳ କୋମଳ ଗାଉଁଲି କଥା  
ରୂପାୟିତ କରି ଟେକିଲ ମଥା ।୭।  
ଶୁଣି ଶୁଣାଇଲେ କଲେ ଆବୃତ୍ତି  
ଆଉ ଅଛି କେତେ ଅବା ଏତିକି ।୮।  
ଲେଖୁ ଲେଖୁ ହେଲ କବି ଚପି ଗଲ ଆମକୁ  
ଏବେ ଝୁରି ହେଉ ତୁମ ପାରିଲାର ପଣକୁ ।୯।  
ବଂଧୁ, ନାହିଁ ମୋ ହାତରେ ଆଜି ଟକ୍ ଖତି ଡଞ୍ଚର  
ଗାଣିତିକ ସୂତ୍ରାବଳୀ ସବୁତ ଅସାର ।୧୦।  
ଯାଉଛି ପାଶୋର ସମୟର ନିଷା ଘାତେ  
ଫେରିବନି ସେ ପ୍ରତିଭା ଯାହା ଥିଲା ହାତେ ।୧୧।  
କାଁ କାଁ ମନେ ରଖୁଥିବେ ଅବା କେତେ  
ପଦ ପଦବୀରେ ଥାଇ ଛାତ୍ର ଛାତ୍ରୀ ଯେତେ ।୧୨।  
ଶିକ୍ଷା କର୍ମଶାଳା ଥିଲା ସାଧନା ଅଙ୍ଗନ  
ନାହିଁ ସେ ପାଠ ଖସଡା ନାହାଁନ୍ତି ସେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ ଗଣ ।୧୩।  
ଭାଳି ଭାଳି ଆମେ ଅବସାଦ ନାହିଁ କିଛି କରିବାକୁ ଆଉ  
ଜୀବନ ସାୟାହେଁ ଅତୀତର ସ୍ମୃତି ଜାଗରିତ ଥାଉ ।୧୪।  
ତୁମେ କାଳ ଜୟୀ ଚିର ରହିବ ଅମର  
ଭାରତୀ ଭଣ୍ଡାରେ ଥିବା ଯାଏ କୃତା ତୁମର ।୧୫। □□□

ଉଷ୍ମା, ମାହାଙ୍ଗା, କଟକ



# ସାରସ୍ୱତ ଓ ଶୈକ୍ଷିକ ସାଧନାପଥରେ ସୁଗନ୍ଧାତ୍ରୀ ନନ୍ଦ କିଶୋର

ପ୍ରଫେସର ଜଗନ୍ନାଥ ମହାନ୍ତି

ସୁଷମାମୟୀ ପ୍ରକୃତି କୋଳରେ ଓ ସାଧନାପାଠ କୁସୁପୁର ଗ୍ରାମରେ, ପୁଣି ଏକ ଦରିଦ୍ର ପରିବାରରେ ଜନ୍ମ ଗ୍ରହଣ କରି ନିଜର ସାଧନା ବଳରେ ନିଜକୁ ଉଚ୍ଚକୋଟୀକୁ ଉନ୍ନତ କରିଥିଲେ ନନ୍ଦ କିଶୋର । ସେ ଥିଲେ ଅନେକଙ୍କର “ସାର” ଓ ଆମର ପ୍ରିୟ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ସ୍ରଷ୍ଟା । ଜୀବନ ସଂଗ୍ରାମରେ ସବୁ ଦୁଃଖ କଷ୍ଟ ଓ ଅଭାବ ଅସୁବିଧା ଅନୁଭବ କରି ସୁଦ୍ଧା ସେ ସବୁକୁ ବାଧାବନ୍ଧନ ପରିବର୍ତ୍ତେ ଆହ୍ୱାନ ବୋଲି ମନେ କରିଥିଲେ ଏବଂ ଅସୀମ ଯୌର୍ଯ୍ୟ ଓ ଅଧିବସାୟ ଯୋଗୁଁ ଅପୂର୍ବ ସଫଳତା ଲାଭ କରିଥିଲେ । ମଣିଷ ସବୁ ପ୍ରତିବନ୍ଧକକୁ ଅତିକ୍ରମ କରି କିପରି ସାଫଲ୍ୟ ଅର୍ଜନ କରିପାରେ, ତାର ଏକ କ୍ଳଳନ୍ତ ଦୃଷ୍ଟାନ୍ତ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର । ପ୍ରାଥମିକ ଶିକ୍ଷକ ଜୀବନରୁ ସେ ଏହି ସିଦ୍ଧି ବଳରେ ହାଇସ୍କୁଲର ଶିକ୍ଷକ ହୋଇଥିଲେ ଏବଂ ଶିଶୁ କବିତା ଲେଖକ ଜୀବନରୁ ସେ ପାଠ୍ୟପୁସ୍ତକ, ନାଟକ, ଏକାଙ୍କିକା ଆଦି ବହୁ କ୍ଷେତ୍ରରେ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ଅର୍ଜନ କରିଥିଲେ । ତାଙ୍କରେ ଲେଖାଗୁଡିକ ଥିଲା କାଳକ୍ରମେ ଏବଂ ସେଥିପାଇଁ ସେ ବହୁ ସାରସ୍ୱତ ପୁରସ୍କାର ଓ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ଲାଭ କରିଥିଲେ । ସର୍ବୋପରି, ଅଗଣିତ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ଠାରୁ ସେ ଯେଉଁ ଭକ୍ତି ଭରା ଓ ସ୍ନେହସିନ୍ଧୁ ସମ୍ମାନ ଲାଭ କରନ୍ତି, ତାହା ତାଙ୍କୁ ପରମ ଆନନ୍ଦ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲା ।

ନନ୍ଦକିଶୋରଙ୍କ କବିତା, ବିଶେଷତଃ ଗୀତି କବିତା ରଚନାରେ ଥିଲେ ସିଦ୍ଧହସ୍ତ, ସରଳ ତରଳ ଭାଷା, ସାବଲୀଳ ଶୈଳୀ ସହିତ ମନଛୁଆଁ ଭାବରାଶି ମିଶି ରୂପାୟିତ ହୋଇଥିଲା ତାଙ୍କର ତ୍ରିବେଣୀଧାରୀ । ତାଙ୍କର କବିତାବଳୀ ଯେମିତି ରସସିନ୍ଧୁ, ସେମିତି ପାଣବନ୍ଧ । ପ୍ରାଥମିକ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ତାଙ୍କର କବିତା ଆମଘର ଏକ ଅମର ସୃଷ୍ଟି । ତାର ଗୋଟିଏ ପଦ ହେଲା -

“ଏଇଟି ଆମର ଫୁଲ ବଗିଚା  
ତଳେ ପଡ଼ିଛି କି ଘାସ ଗାଲିଚା  
ଉଡ଼ି ଉଡ଼ି ଆସେ ପରଜାପତି  
ତରକା ଅତି / ଏଇଠି ବୁଲେ  
ଫୁଲରେ ଝୁଲେ / କଳସୀ ଆଣି  
ଫୁଲଗଛ ମୂଳେ ଦିଏ ମୁଁ ପାଣି ।”

ସେମିତି ତାଙ୍କର ମନେ ପଡେ ଗାଁଟିର ଶୋଭା, ଗୋଟି ଗୋଟି କରି ସେସବୁ ଭାଳନ୍ତି । ମନରେ ଆନନ୍ଦ ଭରି ଉଠେ । ସେ ଗାଆନ୍ତି

“ମନେ ପଡେ ତାର ଟିକ ଗଢିଆ

କଅଁଳ କଳମ ନଟି

ଚିକିଏ ଦୂରରେ ନୀଳ ପାହାଡ

ପାହାଡ଼ ଝୁମୁକି ଝାଟି

ନାଳ ସେପାରି ଧାନ କିଆରୀ

ଏପାରିର ତାଳ ବଣ

ଗାଁ ତୋଟା ତଳ କିଆ ଗୋହିରୀ

ଞୁକୁଞୁକୁ ପଣ ପଣ”

“ମନେ ପଡିଯାଏ ମୋର” କବିତାଟିରେ ଗାଁ ମାଟିର ଦୃଶ୍ୟ କେତେ ସୁନ୍ଦର, କେତେ ଆପଣାର । ପାଠ ସାଥରେ କାମ କରିବାର ଅଭ୍ୟାସ ଓ ଆଗ୍ରହ ପିଲା ଦିନୁ ବଜାଇ ପାରିଲେ ଆଗକୁ ସେମାନେ ବେକାର ହୋଇ ବସନ୍ତେ ନାହିଁ । ଯେ କୌଣସି ବୃତ୍ତି ଓ ଧନ୍ଦାରେ ପ୍ରବୃତ୍ତ ହୁଅନ୍ତେ, ଆତ୍ମ ନିଯୁକ୍ତି ସହଜ ସାଧ୍ୟ ହୁଅନ୍ତା । ପାଠ ପଢି ସେମାନେ ଘରର, ସମାଜର ବୋଝ ହୋଇ ରହନ୍ତେ ନାହିଁ । ଏ ସବୁକୁ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରି ନନ୍ଦ କିଶୋର ଗାଇଛନ୍ତି -

“ପାଠବେଳେ ପାଠ ପଢେ ମୁଁ ଘରେ

ଦରକାର ବେଳେ ଖଟେ ବିଲରେ

ବାପା ପଚାରନ୍ତି ‘କୁନା’

ପଢ଼ାପଢ଼ି ଛାଡି ବିଲରେ ଖଟୁଛୁ

ପାଠ ମାରା ହେବ ସିନା ।”

ପାଠପଢୁଆ ପିଲା ତା’ର ଉତ୍ତର ଦିଏ -

“ମାରା ହେବା ଟିକ ନୁହେଁ ସେ ବାପା,

ଭିତରେ ବାହାରେ ସବୁତ ସଫା

ଜ୍ଞାନର ଭଣ୍ଡାର ସେଇ

ଥରେ ପଢି ଦେଲେ ସବୁ ପାଠଯାକ

ମନେ ରଖୁଦିଏ ମୁହଁ ।”

ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡେମୀ ପୁରସ୍କୃତ ପୁସ୍ତକ “ମୋତେ ଯେତେବେଳେ ଦଶବରଷ” କବିଙ୍କର ସେମିତି କବିକରେ ଶ୍ରୀମ ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଜ୍ଞାନ ସୁନ୍ଦର

“ମତେ ଯେତେବେଳେ ଦଶବରଷ”

ବାପାଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ କରେ ମୁଁ ଚାଷ

ବେଳେ ବେଳେ ଧରେ ହଳ

ହଳ ଛାଡ଼ି ଦିଏ ବାପାଙ୍କ ହାତକୁ

ହଟିଗଲା ବେଳେ ବଳ ।

ଆମେ ଗଛଲତା ଆମର ବଂଧୁ, ସେମାନେ ଆମର ଉପକାରୀ ବନ୍ଧୁ । ପିଲାମାନେ ଭାବନ୍ତି, ସେ ସବୁର ଜୀବନ ନାହିଁ, ଚଳପ୍ରଚଳ କରିପାରନ୍ତି ନାହିଁ, ସେମାନେ କ’ଣ କରିପାରିବେ ? କବି ସେମାନଙ୍କୁ ବୁଝାଇ କହୁଛନ୍ତି –

“ଗଛ ବହୁଛି

ଛୋଟିଆ ଗଛଟି ବଡ଼ ହେଉଛି

ତାଳ କାଟି ଦେଲେ କ୍ଷୀର ଝରୁଛି

କ୍ଷୀର ନୁହେଁ ତାର ରକତ ସେଇ

କେମିତି କହୁଛୁ ଜୀବନ ନାହିଁ ?”

ଏହିପରି ପିଲାଙ୍କ ଭିତରେ ‘ଗଛ ସଜୀବ, ଆମର ସାଥୀ, ଆମର ବଂଧୁ’ ବୁଝାଇବାରେ କବି ସଫଳ ହୋଇଛନ୍ତି । ତାଙ୍କର ଛତା ଯାଇଛି ପୂତ ପବିତ୍ର ଆତ୍ମା ଯେମିତି କୁସୁମର ସୁସମା ଓ ମଧୁର ସୁବାସ ନେଇ ଆତୁର ହୋଇ ପଡ଼ିଛି !

ଭାବାବେଗ ଆହୁରି ଚମତ୍କାର ହୋଇଛି ।

ସାରସ୍ୱତ ସାଧକ ଓ ଜାତିପ୍ରେମୀ କବି ଯଥାର୍ଥରେ ଶିଶୁ କିଶୋରମାନଙ୍କୁ ସୁପାଠ୍ୟ ଓ ସାରଗର୍ଭକ ଶିକ୍ଷାଦାନ ସହିତ କବିତାମାନଙ୍କୁ ସୁପାଠ୍ୟ ଓ ସାରଗର୍ଭକ ଶିକ୍ଷାଦାନ ସହିତ କବିତାର ସରଳ ଡରଳ ଓ ସରସ କବିତା ମାଧ୍ୟମରେ ସମସ୍ତଙ୍କର ମନୋରଞ୍ଜନ କରିଛନ୍ତି । ଆନନ୍ଦ ମଧ୍ୟରେ ଆଲୋକ ଦେଇ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ଜଣେ ସାର୍ଥକ ଓ ସମର୍ଥ ଶିକ୍ଷକ ଓ ସାରସ୍ୱତ ସାଧକ ଭାବରେ ନିଜକୁ ସରୁଦିନ ପାଇଁ ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରିଛନ୍ତି । □□□

୨୯୩୫, ଗୌରୀନଗର, ଭୁବନେଶ୍ୱର-୨

ଖୁବ୍ ଶୀଘ୍ର ପ୍ରକାଶ ପାଇଛି

ଗବେଷିକା ଡକ୍ଟର ଜ୍ୟୋତିର୍ମୟୀ ରାଜଗୁରୁଙ୍କର ଗବେଷଣା ନିବନ୍ଧ  
ଓଡ଼ିଆ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟକୁ ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଅବଦାନ



## ଷୋଳ କଳାର ନାୟକ ନନ୍ଦ କିଶୋର

ନବୀୟା ବିହାରୀ ମହାନ୍ତି

ଆକାଶବାଣୀରୁ ପ୍ରସାରିତ ଏ ସାମଲଙ୍କର ଭଜନ ଓ ଜଣାଣ ଶୁଣିଲେ ଯେ କେହି ଅନୁଭବ କରିବ, ସେ ଥିଲେ ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ପରମ ଭକ୍ତ ଓ ଜଣେ ଖାଣ୍ଡି ଓଡ଼ିଆ,

ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ହେଉଛନ୍ତି ଷୋଳ କଳାର ଅଧିକାରୀ ସେଥିପାଇଁ ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ଚରିତାମୃତରେ ପୁରାତନ କବି ବିପ୍ର ଦିବାକର ଦାସ ଗାଇଛନ୍ତି -

“ଜଗନ୍ନାଥ ଯେ ଷୋଳ କଳା, ତହୁଁ କଳା ଏ ନନ୍ଦ ବଳା,

କଳାକୁ ଷୋଳ କଳା କରି ନିତ୍ୟ ବିହରେ ନରହରି,”

ନନ୍ଦ କିଶୋର ନାମଟି ଯେହେତୁ ନନ୍ଦ ସୁତ, ନନ୍ଦ କଳା ବୁଝାଏ, ମନେ ହୁଏ ନନ୍ଦ କିଶୋର ନନ୍ଦ ସୁତକଂ ଭଳି ଏକ କଳା - ସାହିତ୍ୟକୁ ଷୋଳ କଳା କରି ତାଙ୍କର ସୃଷ୍ଟି ସମ୍ଭାରକୁ ରସାଣିତ ଓ ଲୋକପ୍ରିୟ କରିବାରେ ଧୂରନ୍ଧର ଥିଲେ ।

ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସେ ଥିଲେ, ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ, ନାଟ୍ୟକାର, ଗାଳ୍ପିକ, ଗୀତିନାଟ୍ୟ ରଚିୟାତା, ଅନୁବାଦକ, ଜୀବନୀ ଲେଖକ, ନୃତ୍ୟନାଟିକା ରଚୟାତା, ଗୀତିକାର, ରୂପକ ପ୍ରସ୍ତାବ ।

ସେ ସବୁକୁ ରୂପାୟିତ କରିବା ପାଇଁ ତାଙ୍କ ନିକଟରେ ଥିଲା ଅଭିନୟ କଳା, ସେ ପୁଣି ଥିଲେ ଆଶୁ କବି, ଚିତ୍ରକର, ପାଲା ଲେଖକ ଓ ଗାୟକ ଥିଲେ ପୁଣି ସୁବକ୍ତା ଏବଂ ମଞ୍ଚ ଓ ନାଟ୍ୟ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ।

ଏହା ଏକ କପୋଳ କଳ୍ପିତ ଉଦାହରଣ ନୁହେଁ, “ସ୍ମୃତିଅର୍ଘ୍ୟ” ଗ୍ରନ୍ଥର ପୃଷ୍ଠା ଓଲଟାଇ ଗଲେ ତାଙ୍କ ସଂପର୍କ ତାଙ୍କର ବହୁ ସହଯୋଗୀ ଠାରୁ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ ମାନେ ଯାହା ଉଲ୍ଲେଖ କରିଛନ୍ତି, ତହିଁରୁ ଏହାର ଜୀବନ୍ତ ପ୍ରମାଣ ମାନ ପାଇବେ ।

ସେ ଦୃଷ୍ଟି ସେ ମୋ ବିଚାରରେ ଥିଲେ-ଷୋଳ କଳାର ନାୟକ । ବୋଧ ହୁଏ ଏହା ଥିଲା ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ଆଶୀର୍ବାଦ । ମାତ୍ର ଆମେ କେବଳ ତାଙ୍କୁ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକର ମର୍ଯ୍ୟାଦା ପ୍ରଦାନ କରି ମାତ୍ର ଗୋଟିଏ ପ୍ରତିଭାର ଆକଳନ କରିଥାଏ ।

ସେ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ତାଙ୍କର ଅବର୍ତ୍ତମାନରେ ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅନ୍ୟ ଯେଉଁ ବିଭାଗରେ ଲେଖନୀ ତାଳନା କରିଛନ୍ତି - ସେ ଗୁଡ଼ିକର ପୂର୍ଣ୍ଣାନୁପୂର୍ଣ୍ଣ ଆଲୋଚନା ଆବଶ୍ୟକ ।

ସୁଖର କଥା ‘ସ୍ମୃତି-ଅର୍ଘ୍ୟ’ ପୁସ୍ତକରେ ତାଙ୍କ ଲିଖିତ, ପ୍ରକାଶିତ ଓ ଅପ୍ରକାଶିତ

ପୁସ୍ତକମାନଙ୍କର ଏକ ଦୀର୍ଘ ତାଲିକା ପ୍ରକାଶ ପାଇଛି । ସେ ସବୁକୁ ଏକତ୍ରୀତ କରାଯାଇ ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀଟିଏ ପ୍ରକାଶ ଲାଗି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ପ୍ଲୁଟିନିଆସ ପକ୍ଷରୁ ଉଦ୍ୟମ କରାଯାଇ ପାରିଲେ ଗବେଷକମାନଙ୍କ ଲାଗି ଏହା ଗବେଷଣା ପାଇଁ ସୁଗମ ହୋଇ ପାରନ୍ତା ।

ଏତଦ୍ ବ୍ୟତୀତ ତାଙ୍କର ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ସଂପର୍କରେ ବହୁକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆସିଛନ୍ତି – ସେମାନଙ୍କ ଠାରୁ ତାଙ୍କର ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରତିଭା ସଂପର୍କରେ ସାକ୍ଷାତ୍‌କାର ମାନ ସଂଗ୍ରହ କରାଯାଇ ଏକ ଗ୍ରନ୍ଥ ରଚନା କରାଗଲେ ଏହି ମହାନ୍ ସାହିତ୍ୟ ସାଧକ, ଚିନ୍ତାଶିଳ୍ପୀ, କଳାକାର, ଗୀତିକାର, ନାଟ୍ୟକାରଙ୍କ ସଂପର୍କରେ ବହୁ ତଥ୍ୟ ସଂବଳୀତ ଘଟଣାବଳୀ ଲୋକ ଲୋଚନକୁ ଆସିବାର ସୁଯୋଗ ମିଳନ୍ତା ।

ଆମ ରାଜ୍ୟରେ ପ୍ରତିଭାବାନ୍ ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କ ଜୀବନ୍ତ ଅବସ୍ଥାରେ ପ୍ରତିଭା ପୂଜା ଅବସରରେ କେବଳ ସେମାନଙ୍କୁ ମାନପତ୍ର ଓ ଲିପିବଦ୍ଧିକନ ପ୍ରଦାନ କରି ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହୁ ।

ତାଙ୍କର ଜୀବିତା ଅବସ୍ଥାରେ ଏହି ପ୍ରତିଭାଦୀପ୍ତ ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କର କୃତିର ଆଲୋଚନା କରି ସେମାନଙ୍କର ଅବଦାନକୁ ଲିପିବଦ୍ଧ କରି ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଅଧିକ ଉସାହ ପ୍ରେରଣା ଭରି ଦେବାର ପ୍ରଚେଷ୍ଟା ପ୍ରାୟତଃ କୃତିତ୍ ଦେଖାଯାଏ ।

ସେଥିପାଇଁ ଆମ ରାଜ୍ୟରେ ଲୋକମାନଙ୍କ ଘରେ ଚୋର ପଶି ମାଲମତା ଧରି ଖସି ଗଲା ପରେ ଆମର ନିଦ ଭାଙ୍ଗେ ବୋଲି ଏକ ପ୍ରବାଦ ରହିଛି ।

ସ୍ୱସ୍ତ ଭାବରେ କହିଲେ ଆଳସ୍ୟ ଓ ଅସହିଷ୍ଣୁତା ଆମର ଏକ ଜାତୀୟ ବ୍ୟାଧି ।

ସୁଖର କଥା ଏ ସାମଲଙ୍କ ଜୀବଦ୍ଦଶାରେ ଡକ୍ଟର ଜ୍ୟୋତିମୟୀ ରାଜଗୁରୁ “ଓଡ଼ିଆ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟକୁ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଅବଦାନ” ସଂପର୍କରେ ଗବେଷଣା ନିବନ୍ଧ ପ୍ରସ୍ତୁତ କରିବା ପାଇଁ ସକ୍ଷମ ହୋଇଛନ୍ତି ।

“ପ୍ଲୁଟିଅର୍ସ” ପୁସ୍ତକ ସେ ଯେଉଁ ଅନୁଷ୍ଠାନମାନଙ୍କରେ ଯୋଗଦାନ କରି ସଂବର୍ଦ୍ଧିତ ହୋଇଛନ୍ତି ଏବଂ ଯେଉଁ କର୍ମଶାଳା, ସଭା, ସମିତି, ସମ୍ମିଳନୀରେ ବକ୍ତବ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିଛନ୍ତି – ସେଗୁଡ଼ିକୁ ସଂଗ୍ରହ କରି ଏକ ସଂକଳନ ପ୍ରକାଶ ପାଇଲେ – ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି କ୍ଷେତ୍ରରେ ତାଙ୍କର ଦୃଷ୍ଟିକୋଣ କ’ଣ ଥିବାରୁ ତାଙ୍କର ସାହିତ୍ୟ ସୃଷ୍ଟି, ଏତେ ଜୀବନ୍ତ ହୋଇପାରିଛି ତାହାର ଏକ ସ୍ୱସ୍ତ ଚିତ୍ର ମିଳିବା ସହ, ଆଗାମୀ ପୀଢ଼ିର ସାହିତ୍ୟ ସ୍ରଷ୍ଟାମାନଙ୍କୁ ଦିଗ୍‌ଦର୍ଶନ ଦେଇ ପାରନ୍ତା ।

ଏ ଜାତି ଯଦି ପ୍ରକୃତରେ ତାଙ୍କୁ ଓ ତାଙ୍କର କୃତିଗୁଡ଼ିକୁ ସଂରକ୍ଷଣ କରି ରଖିବାକୁ ଆଗ୍ରହୀ, ତେବେ କେବଳ ବର୍ଷକୁ ବର୍ଷ ଶ୍ରଦ୍ଧା ସଭା ଓ ସ୍ମରଣିକା ମାଧ୍ୟମରେ ନୁହେଁ – ତାଙ୍କ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ବିଶେଷ କରି କବିତା ଗୁଡ଼ିକ ଯେପରି ବହୁଳ ଭାବରେ ପ୍ରସାରିତ ହୋଇ ଶିଶୁମାନଙ୍କ ହୃଦରେ ଆବୃତ୍ତ ହୋଇପାରିବା କିମ୍ବା ତାଙ୍କର ଗୀତିନାଟ୍ୟ, ନାଟକ, ନୃତ୍ୟ ନାଟିକା, ଗୀତ ପୁସ୍ତକଗୁଡ଼ିକ କେବଳ ପୁସ୍ତକାଗାରରେ ସାଇତା ନ ହୋଇ, ବିଭିନ୍ନ ସ୍ଥାନରେ

ମଞ୍ଚସ୍ଥ ହେବାର ଉଦ୍ୟମ କରାଯିବା ଆବଶ୍ୟକ ।

ଯେପରି ବିରୂପା ଭୂଇଁର ନନ୍ଦ କିଶୋର ବଳ, ବୈଷ୍ଣବ ପାଣିକ ରଚନା ବଳୀ ଆଜି ଜନ ମାନସରେ ସ୍ଥାନ ପାଇ ତାଙ୍କୁ ଅମର କରି ଦେଇଛି । ଠିକ୍ ସେହିଭଳି ଷୋଳ କଳାର ନାୟକ ସ୍ୱର୍ଗତ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ଯେ ତାଙ୍କର ଲେଖା ମାଧ୍ୟମରେ ଅମର ହୋଇ ଜନମାନସରେ ରହିଯାଇ ପାରନ୍ତେ ଏଥିରେ ସନ୍ଦେହର ଅବକାଶ ନାହିଁ ।

ଆଜିର ଏହି ପୁଣ୍ୟ ମୃତ୍ୟୁ ବାର୍ଷିକୀ ପାଳନ ଅବସରରେ ତାଙ୍କର ଅମର ଆତ୍ମା ପ୍ରତି ଗଭୀର ଶ୍ରଦ୍ଧା ନିବେଦନ ସହ ଭକ୍ତି ପୂର୍ବ ପ୍ରଣାମ ଜଣାଉଛି । □□□

ଡକ୍ଟର ଲକ୍ଷ୍ମୀ ବଜାର, କଟକ - ୯

## ଶବ୍ଦ ପ୍ରଣାମ

ପ୍ରଫୁଲ୍ଲ କୁମାର ସାହୁ (ବୁଲୁ)

ଜଣେ ରାଜା ଥିଲେ  
ମୁକୁଟ ବିହୀନ,  
ଯାହାଙ୍କର ଥିଲା ଶବ୍ଦର ସାମ୍ରାଜ୍ୟ  
ଶବ୍ଦ, ପଦ, ଛନ୍ଦ ଏବଂ ନାଟକର  
ଚରିତ୍ରଗଣ ସାଜୁଥିଲେ ରାଜ ପାରିଷଦ  
ଦିନ, ପ୍ରତିଦିନ ।

ପାଞ୍ଚ ପୁଟ ତିନି ଇଞ୍ଚ ଉଚ୍ଚତାର ମଣିଷ  
ସାଧା ବେଶ ଭୂଷା, ହସହସ ମୁହଁ  
ହସି, ହସି କଥା ହେଉଥିଲେ  
ମଣିଷ ଓ ପ୍ରକୃତି ସାଥରେ ॥

କବିତାର ଲତା- ଲତେଇ ଦେଉଥିଲେ  
ମଣିଷର ଛାତି ପଞ୍ଜରାରେ  
ନାଟକର ଚରିତ୍ରଗଣଙ୍କୁ  
ଓଲ୍ଲେଇ ଦେଉଥିଲେ  
ଦର୍ଶକ ସାମ୍ରାଟ... ଖୋଲା ମଞ୍ଚପରେ ॥

ଖୋଲା ମେଲା ଜୀବନ ଯାପନ  
କବିତା ହିଁ ଥିଲା ନିଜସ୍ୱ ଭୂଷଣ  
ଶିଶୁଙ୍କର ମନଲୋଭା ପଦ ଯୋଡ଼ିବାରେ  
ସିଦ୍ଧତା ଲଭିଥିଲେ ଶବ୍ଦର ସମ୍ରାଟ ॥

ଯାହାଙ୍କର କଥା କହୁଥିଲି ଏତେ କ୍ଷଣ  
ସିଏ ଏ ମାଟିର ଅମର ସନ୍ତାନ  
କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ  
ତାଙ୍କୁ ଆଜି ତାଙ୍କ ଶ୍ରାଦ୍ଧ ବାର୍ଷିକୀରେ  
ଜଣାଉଛି ଭକ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ  
ଶବ୍ଦର ପ୍ରଣାମ ॥

□□□

କୁସୁପୁର, କଟକ





## ସ୍ମୃତିରେ ସ୍ମୃତିର ନନ୍ଦ କିଶୋର

ବୀରେନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି

୨୦୦୭ ମସିହା ଡିସେମ୍ବର ୨୫ ତାରିଖ । ବଡ଼ଦିନ । ପୁରୀ ଜିଲ୍ଲାପାଳଙ୍କ ସମ୍ମେଳନ କକ୍ଷରେ ଶ୍ରୀକ୍ଷେତ୍ର ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ସଂସଦର ବାର୍ଷିକ ଉତ୍ସବ ଉଦ୍‌ଘାଟନ ହୋଇସାରି ଥାଏ । ପାରମ୍ପରିକ ରୀତିରେ ମୁଁ ସ୍ବାଗତ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ଓ ଅତିଥି ପରିଚୟ ଦେବାକୁ ମାଇକ୍ ପାଖରେ ଛିଡ଼ା ହୋଇଥାଏ । ସାମନାରେ ଓଡ଼ିଶାର ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରାନ୍ତରୁ ଆସିଥିବା ବରିଷ୍ଠ ଓ ଯୁବ ପାଠିକ ବିଶିଷ୍ଟ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ଗଣ ଓ ବିଭିନ୍ନ ସ୍ଥଳରୁ ଆସିଥିବା କୁନିକୁନି ପିଲାମାନେ ବସିଥାନ୍ତି । ମୋ'ଛାତି କୁଣ୍ଢେମୋଟ ହୋଇ ଯାଉଥାଏ । ଆଖି ଛଳ ଛଳ ହୋଇ ଆସୁଥାଏ । ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟର ଏତେବଡ଼ ସଭା । ପୁଣି ସେହି ସଭାରେ ଓଡ଼ିଆ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟର ବରିଷ୍ଠ ସାହିତ୍ୟିକ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ସମ୍ମାନ ପାଇବାକୁ ମନୋନୀତ ଓ ଉପସ୍ଥିତ ହୋଇଥାନ୍ତି । ବରିଷ୍ଠ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଜୟକୃଷ୍ଣ ସାହୁ, ରମେଶ ଚନ୍ଦ୍ର ଭଞ୍ଜ ନଦୀଆ ବିହାରୀ ମହାନ୍ତି, ହାତିବନ୍ଧୁ ମିଶ୍ର, ଜଗନ୍ନାଥ ମହାନ୍ତି, ମନୀନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି, ଲକ୍ଷ୍ମୀକାନ୍ତ ଖୁଣ୍ଟିଆ, ରବିନ୍ଦ୍ର ବିଶ୍ୱାଳ, ଅରୁଣ ଚନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି, ବର୍ଦ୍ଧନ ଚନ୍ଦ୍ର ନାୟକ, ଶରତ ନାୟକ, ରଘୁନନ୍ଦନ ମହାପାତ୍ର, ଗୋଲକ ବିହାରୀ ବିଶୋଇ ପ୍ରଭୃତି ଅନେକ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ଉପସ୍ଥିତ ଥାନ୍ତି । ଅତିଥି ଭାବରେ ବର୍ତ୍ତମାନର ବାଚସ୍ପତି ମହେଶ୍ୱର ମହାନ୍ତି, ପୁରୀର ତତ୍କାଳୀନ ଜିଲ୍ଲାପାଳ ତଥା ବର୍ତ୍ତମାନ ଓଡ଼ିଶା ସରକାରଙ୍କର ସୂଚନା ଓ ଲୋକସଂପର୍କ ବିଭାଗର ପ୍ରମୁଖ ଶାସନ ସଚିବ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଦିଗମ୍ବର ମହାନ୍ତି ଆଇ.ଏ.ଏସ୍, ତତ୍କାଳୀନ ଶିକ୍ଷାମନ୍ତ୍ରୀ ସୁରେନ୍ଦ୍ର ନାୟକ ଓ ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ରୂପେ ପୁରୀର ସାଂସଦ ତଥା ତତ୍କାଳୀନ କେନ୍ଦ୍ର ଇସ୍ତାତ ମନ୍ତ୍ରୀ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବ୍ରଜ କିଶୋର ତ୍ରିପାଠୀ ଆମ ସଭାରେ ଯୋଗ ଦେଇଥାନ୍ତି । ଅନ୍ୟମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ପୁରୀର ତତ୍କାଳୀନ ନଗରପାଳ ଶ୍ରୀ ସୁରେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଦାଶ ଓ ମୁଖ୍ୟବକ୍ତା ଭାବେ ଓଡ଼ିଆ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ଗବେଷଣା ପରିଷଦର ପ୍ରତିଷ୍ଠାତା ଡଃ ମନୀନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି ଓ ଡଃ ପ୍ରତିଭା ମହାରଥୀ ଯଥାକ୍ରମେ ସମ୍ମାନୀତ ଅତିଥି ରୂପେ ଯୋଗ ଦେଇଥାନ୍ତି । ସମ୍ମେଳନ କକ୍ଷରେ ଉପସ୍ଥିତ ଜ୍ଞାନୀ ଗୁଣିକ ମୃଦୁ ଗୁଞ୍ଜରଣ ମଧ୍ୟରେ ମୁଁ ଆରମ୍ଭ କରି ସ୍ବାଗତ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ପର୍ବ । ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ସୂଚନା ପ୍ରଦାନ କରି ମୁଁ ସଭାର ଆଭିମୁଖ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରି ସାରିବା ପରେ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧିତ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ମାନଙ୍କ ପରିଚୟ ପ୍ରଦାନ କରିବାକୁ ଯାଇ ସର୍ବପ୍ରଥମେ ଗୀତଟିଏ ବୋଲିଥିଲି ।

“ଏଇଟି ଆମର ରୋଷେଇ ଘର/ ଏ ଘର ଭିତର ସଫା ସୁତର

ଏଇ ଘରେ ମା ପରିବା କାଟେ/ବେଶର ବାଟେ ।

ଯାଇ ରଗଡେ, ଶାଗ ଖରଡେ/ଗଡ଼ଇ ପିଠା

ଆରିଷା କାକରା, ଆହାକି ମିଠା ।”

ଏଇ କେଜପଦ ଗୀତକୁ ବୋଲିବାରେ ସଭାରେ ଉପସ୍ଥିତ ସମସ୍ତ ପିଲାମାନେ ଡାଳିମାରି ଉଠିଲେ । ଅତିଥିମାନେ ଏକ ଲୟରେ ମୋ ଆଡ଼େ ଚାହିଁଥାନ୍ତି । ମୁଁ କହିଲି ଏଇ ଗୀତର ନାମ କ’ଣ ? ପିଲାମାନେ ଏକ ସ୍ଵରରେ କହି ଉଠିଲେ - “ଆମ ଘର” । ପୁଣି ମୁଁ କହିଲି ଏହାର ଲେଖକ କିଏ ? କିଏ କହିବ ହାତ ଟେକ ? ପିଲାଟିଏ ଛିଡ଼ା ହୋଇ କହିଲା - ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ । ମୁଁ ପୁଣି କୌତୁହଳ ସୃଷ୍ଟି କରି କହିଥିଲି - ତାଙ୍କୁ ଦେଖନ୍ତୁ ? ପିଲାଟି କହିଲା ନା । ମୁଁ କହିଲି ଯାହାଙ୍କର ଏତେ ସୁନ୍ଦର କବିତା ପଢ଼ିଛ । ତାଙ୍କୁ ଦେଖନ୍ତୁ । ଆଜି ସେହି ମହାନ ସାଧକ ଓଡ଼ିଆ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ଜଗତର ମଉତମଣି ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ଆଜି ଆମ ପାଖରେ ଉପସ୍ଥିତ । ଅନୁରୋଧ କରିଥିଲି । ସେହି ମହାନ ଶିଳ୍ପୀଙ୍କର ଶିଷ୍ୟ ହୋଇ ଗୁରୁଙ୍କୁ ଅନୁରୋଧ କରିଥିଲି ସଭା ମଧ୍ୟରେ ଛିଡ଼ା ହୋଇ ପରିଚୟ ଦେବା ପାଇଁ । ଗୁରୁଜୀ ପ୍ରଫୁଲ୍ଲିତ ମନରେ ଛିଡ଼ା ହୋଇ ହାତଯୋଡ଼ି ସମସ୍ତଙ୍କୁ କୃତଜ୍ଞତା ଜଣାଇଥିଲେ । ମୁଁ ଜାଣି ନଥିଲି ଯେ, ଖାଲି ପିଲାମାନେ କାହିଁକି ମଞ୍ଚରେ ଥିବା ବିଦଗ୍ଧ ପଣ୍ଡିତମାନେ ବି ଜାଣି ନଥିଲେ ସେହି ମହାନ କବିଙ୍କର ପରିଚୟ । କେନ୍ଦ୍ରମାନ୍ତୀ, ବାତସ୍ପତି, ଶିକ୍ଷାମାନ୍ତୀ, ଜିଲ୍ଲାପାଳ ସମସ୍ତେ ନିଜ ନିଜ ବକ୍ତବ୍ୟ ରେ କହିଥିଲେ ଯେ, ସେମାନେ ଧନ୍ୟ ହୋଇଛନ୍ତି “ଆମଘର”ର କବି ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କୁ ସାକ୍ଷାତ କରି । ସେତେବେଳେ ମୋ ଛାତିବି ଫୁଲି ଯାଇଥିଲା । ଆମ ସଂସଦର ସଦସ୍ୟ ମାନଙ୍କର ମନବି ଫୁଲି ଉଠିଥିଲା । ଆମେ ଧନ୍ୟ ହୋଇ ଯାଇଥିଲୁ । କବି ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କୁ ଶ୍ରୀକ୍ଷେତ୍ରରେ ପ୍ରଭୁ କାଳିଆଙ୍କ ଅପାର କରୁଣାରୁ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ଦିଆଯାଇ ଥିବାରୁ ନନ୍ଦ କିଶୋର ନିଜର ବକ୍ତବ୍ୟ ପ୍ରଦାନ ବେଳେ କାନ୍ଦି ପକାଇଥିଲେ । କି ଅପୂର୍ବ ସୁଯୋଗ ଥିଲା ସେଦିନ । ଅଜସ୍ର ପ୍ରଶଂସା କରିଥିଲେ ଆମ ସଂସଦକୁ । ସାଥରେ ଆଜି ନିଜର ପରିବାର ବର୍ଗ । ସମସ୍ତେ ବସି ଏକାଠି ପଞ୍ଜତ କଲୁ । ପଞ୍ଜତ ସରିବା ପରେ ଗୁରୁଜୀ ମୋ ପାଖକୁ ଆସି ମୋ ପିଠି ଥାପୁଡ଼େଇ କହିଲେ - “ରୁଝିଲ ବୀରେନ୍ଦ୍ର ବାବୁ ! ଅମୃତ ଭୋଜନଟିଏ ଦେଲା” । ମହାପ୍ରସାଦ ପରି ଲାଗିଲା । ଯାହା ହେଉ ମୁଁ ଶ୍ରୀକ୍ଷେତ୍ରରେ ପହଞ୍ଚି ପ୍ରଭୁ କାଳିଆ ସାଆନ୍ତିଙ୍କ ଯାଗାରୁ ପ୍ରଶଂସା ପତ୍ରଟିଏ ପାଇଲି, ସେଇ ମୋର ଶ୍ରେଷ୍ଠ ପୁରସ୍କାର । ଏହାକୁ ସାଇତି ରଖିବି । ମୁଁ ହସି ହସି କହିଥିଲି ସାର୍ ଏ ସବୁ କାଳିଆର ଲାଳା । ଆମେ ନମିର ମାତ୍ର । ଗୁରୁଜୀ କହିଲେ - “ଆଜି ପ୍ରଭୁଙ୍କର ବଡ଼ିଆ ଦର୍ଶନ ହେଲା, ବଡ଼ିଆ ଭୋଜନ ହେଲା, ବଡ଼ିଆ ସମ୍ମାନ ମିଳିଲା, ବଡ଼ିଆ ବଂଧୁ ମିଳନ ହେଲା ।” ଏହା ଠାରୁ ଆଉ ବଡ଼ିଆ କ’ଣ ହୋଇପାରେ ? ବଞ୍ଚିଥିଲେ ନିଶ୍ଚୟ ଆରବର୍ଷକୁ ଆପଣଙ୍କ ଶ୍ରୀକ୍ଷେତ୍ର ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ଉତ୍ସବକୁ ଆସିବି । ମୁଁ ହସି ହସି କହିଥିଲି ସବୁ ସେଇ କାଳିଆର ଇଚ୍ଛା । ପ୍ରକୃତରେ ସେଇଆ ହେଲା ତା’ର ପରବର୍ଷ ନିମନ୍ତ୍ରଣ ଦେଲା ବେଳକୁ ପ୍ରଭୁ କାଳିଆ ସାଆନ୍ତି କବିଙ୍କୁ ଶ୍ରୀକ୍ଷେତ୍ରକୁ ନେଇ ଆସିଥିଲେ ।

ଶ୍ରୀକ୍ଷେତ୍ର ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ସଂସଦ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଭଳି ଜଣେ ମହାନ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟର ସାଧକଙ୍କୁ ସମ୍ମାନୀତ କରି ନିଜକୁ ଧନ୍ୟ ମନେ କଲା । ଆଜି ସେଇ ମହାନ କାଳଜୟୀ ପ୍ରସାକର ର ସ୍ମୃତି ଦିବସରେ ଆମ ଶ୍ରଦ୍ଧାଞ୍ଜଳି ଜ୍ଞାପନ କରୁଅଛୁ । □□□

ନୀଳଚକ୍ର ନଗର, ଅଠରନଳା, ପୁରୀ- ୨

# ବାଟ ଭାଙ୍ଗି ଫେରିଯିବା ବେଳେ

ନିରଞ୍ଜନ ଜେନା

ଏମନ୍ତ ଭାଗ୍ୟ ନେଇ  
ଆସିଥିଲ କବି-  
ସେ ସମସ୍ତକୁ ନିରେଖେଇ ପଢୁଥିଲେ  
ଏବଂ ଅନେକଙ୍କୁ ଆକୃଷ୍ଟିଲେ  
ତାଙ୍କ ଗନ୍ଧ, ନାଟକ ଓ କବିତାରେ  
ହେଲେ: ତାଙ୍କୁ ସଠିକ୍ ପଢ଼ିବାକୁ  
ତର ନଥିଲା ଆମର ॥

ଘର ବାଳରୁ ଝିଟିପିଟି କହେ ଟିକ୍ ଟିକ୍  
ସାମ୍ରା ଗଛରୁ ଅଜଣା ପକ୍ଷୀ କହେ, ଠିକ୍ ଠିକ୍  
ପଞ୍ଜୁରୀର ମଇନା କହେ;  
ଏତେ ନିଛକ କଥା ଲେଖିବାକୁ  
ତମକୁ କିଏ ଦେଇଥିଲା ଦୁହିଁ ?  
ଅନ୍ଧେଇସା କାଳ ସହିଲାନି ତମ  
କଲମର ବହୁପ,  
ହାତ ଧରି ଝିଙ୍କି ନେଲା ସେପାରି  
ଯେଉଁଠୁ କେହି ଫେରିନି ଅଦ୍ୟାପି ॥

ସାର ଆମର ଏତେ ବହି ଲେଖି ନଥିଲେ  
ଏ ପୃଥିବୀ ତା ଅକ୍ଷ ରେ ଠିକ୍ ଘୁରିଥାନ୍ତା,  
ପକ୍ଷୀ ଗୀତ ଗାଉଥାନ୍ତା,  
ଫୁଲେଇ ଝରଣା ବହି ଯାଉଥାନ୍ତା ନଈକୁ  
ଏବଂ ନଈ ସମୁଦ୍ରକୁ ... ॥

ଆକାଶ କେତେବେଳେ ଜହ୍ନୁଆତ  
କେତେବେଳେ ତାରାମୟ  
ବିରୁପା ନଈ, ବହୁଡିଆ ପାହାଡ଼  
ଖେଣ୍ଟା ନାଲିବର,  
ନିଛାଟିଆ ପିଙ୍ଗୁଲେଇ ବନ୍ଧ  
ଜହ୍ନ, ତାରାର ହସ, କାନ୍ଦ  
ମେଘୁଆ ଆକାଶର ଚିତ୍ର

ଅରୁଣା ଶିଶୁର ଅଝଟ  
ବଣ ପୋତିଯିବାର ଦୃଶ୍ୟ,  
ମନ ପୋତି ଯିବାର ଦୁଃଖ,  
ବନ୍ୟା, ମରୁଡ଼ି, ବାତ୍ୟାର କରାଳ ଛବି,  
କେହି ନ ଆକିଲେ ବି  
ଅନ୍ଧଃ ସଲିଳା କବିତାର ସ୍ରୋତ  
ବହୁଥାନ୍ତା ପୂର୍ବବଦ୍ ॥

କିଛି ଫରକ ପଡୁ ନଥାନ୍ତା ପୃଥିବୀର  
ଗୀତା ଗାଉଥାନ୍ତା ପକ୍ଷୀ,  
ପୁଲେଇ ଝରଣା ବହି ଯାଉଥାନ୍ତା ନଈକୁ  
ଏବଂ ନଈ ସମୁଦ୍ରକୁ... ॥

ଦୃଶ୍ୟମୟ ପୃଥିବୀକୁ ଦେଖି  
ନିକୁର ଶବ୍ଦ ଘରେ ବସି  
ବିହ୍ୱଳିତ ନୟନ ସାର୍ ନାଟକର ଚରିତ୍ର ସାଜି  
ଓହ୍ଲେଇ ନଥାନ୍ତେ ମଞ୍ଚକୁ  
ରକ୍ତ ନିଗାଡ଼ି କବିତା, ଗୀତିନାଟ୍ୟ  
ଖଣ୍ଡି ନଥାନ୍ତେ ଜୀବନ ତମାମ  
ଅନ୍ୟର ଦହଗଞ୍ଜକୁ ଆପଣେଇ ନେଇ  
ସବୁଲିତ ଶବ୍ଦ ପାଖୁଡ଼ାକୁ ସଜେଇ ନଥାନ୍ତେ  
ଦର୍ଶକ ଓ ପାଠକ ଛାତିରେ ॥

ସତେ କ'ଣ କବିତା ତାଙ୍କୁ ଧରା ଦେଲା  
ନା' ନାଟକ ତାଙ୍କୁ ନିଜର କଲା,  
ନା' ଗୀତିନାଟ୍ୟ ଜୀବନର ରାସ୍ତାଟିଏ ଦେଲା  
ସେଦିନ ସାର୍ କହୁଥିଲେ କବିତା ସଂପର୍କରେ  
କେହି କବିତା ନ ଲେଖିଲେ ଯାଏ ଆସେନା—  
କି' କେହି କବିତା ପଢ଼ିଲେ କବି ସ୍ୱର୍ଗକୁ ଛୁଏନା—  
ତଥାପି କବିତା ଲେଖା ଚାଲିଥିବ  
କେହି ନା' କେହି ରକ୍ତ ନିଗାଡ଼ି ଲେଖୁଥିବ  
କବିତା ସ୍ତବକ ପୃଥିବୀ ଛାତିରେ  
ସମସ୍ତେ ବାଟଭାଙ୍ଗି ଫେରିଯିବା ବେଳେ  
ମୋ ଗଛ, କବିତା, ନାଟକର ଚରିତ୍ର  
ମୋ ସହ କଥା ହେବେ ଚିରକାଳ ॥ □□□

ସତ୍ୟାପତି, ବିରୂପା ସାହିତ୍ୟ ସଂସଦ



## ଆପଣ ଭାଗ୍ୟବାନ

ସୂର୍ଯ୍ୟମଣି ସାମନ୍ତରାୟ

ସେତେବେଳର କଟକ ଜିଲ୍ଲା ଧର୍ମଶାଳାର ଅତିରିକ୍ତ ଜିଲ୍ଲା କୃଷି କାର୍ଯ୍ୟାଳୟରେ ଆଠବର୍ଷ ଶସ୍ୟବିଜ୍ଞାନୀ ଭାବେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ପରେ ମୋର ବଦଳି ହେଲା ବ୍ରହ୍ମପୁରକୁ । ମୁଁ ୧୯୮୮ ଡିସେମ୍ବର ପହିଲାରେ ବ୍ରହ୍ମପୁର ଉପକୃଷ୍ଟ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟରେ ଗଞ୍ଜାମ ମଣ୍ଡଳ ଶସ୍ୟ ବିଜ୍ଞାନୀ ଭାବେ ଯୋଗ ଦେଇ ବ୍ରହ୍ମପୁରରେ ରହିଲି । ଧର୍ମଶାଳାରେ ରହଣି ସମୟରେ ଯେଉଁ ପ୍ରକାର ସାହିତ୍ୟିକ ପରିବେଶ ମଧ୍ୟରେ ରହିଥିଲି ତାହାର ଅଭାବ ଏଠାରେ ଅନୁଭୂତ ହେଲା । ବିଶେଷ କରି ସେତେବେଳେ ଗ୍ରାମାଞ୍ଚଳର ସାହିତ୍ୟ ଅନୁଷ୍ଠାନ ଭାବେ ଗୋକର୍ଣ୍ଣିକା ସାହିତ୍ୟ ସମାଜ ବେଶ୍ ଏକ ଅଗ୍ରଣୀ ଅନୁଷ୍ଠାନ ଭାବେ ଓଡ଼ିଶାରେ ସୁନାମ ଅର୍ଜନ କରିଥିଲା ।

ବ୍ରହ୍ମପୁର ରହଣି ସମୟରେ ଧର୍ମଶାଳାର ସାହିତ୍ୟ, ସଭା ସମିତି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ତଥା ନିବିଡ଼ ବନ୍ଧନରେ ବାନ୍ଧି ହୋଇ ଯାଇଥିବା ସାହିତ୍ୟିକ ବଂଧୁମାନଙ୍କ ସ୍ମୃତି ମୋ ମନକୁ ଆନ୍ଦୋଳିତ କରୁଥାଏ । ବିଶେଷ କରି ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ବଂଧୁମାନେ ଅଧିକ ମୋ ମାନସ ପତରେ ଦୃଶ୍ୟ ହେଉଥାଆନ୍ତି । କାରଣ ସେତେବେଳକୁ ମୁଁ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ କିଛି କରିବା ପାଇଁ ବ୍ରତ ହୋଇ ସାରିଥିଲି ।

ଗଞ୍ଜାମ ମାଟି ଯଦିଓ କବି ସମ୍ରାଟ ଉପେନ୍ଦ୍ର ଭଞ୍ଜ, ବଳଦେବ ରଥ, ଗୋପାଳକୃଷ୍ଣଙ୍କ ଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ତାରିଣୀ ଚରଣ ରଥ, ଶ୍ୟାମସୁନ୍ଦର ରାଜଗୁରୁ ଭଳି ପ୍ରଚଣ୍ଡ ପ୍ରତିଭାଧାରୀ କବି ମନିଷୀମାନଙ୍କୁ ଜନ୍ମ ଦେଇ ପୁଣ୍ୟ ହୋଇଛି । ତଥାପି ମୁଁ ମନେ ମନେ ଅନୁଭବ କଲି ଏଠାରେ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ଦିଗଟି ସେତେତା ସବଳ ନୁହେଁ । ଏହାର ଉନ୍ନତି କଳ୍ପେ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ଅନୁଷ୍ଠାନଟିଏ ଲୋଡ଼ା । ବ୍ରହ୍ମପୁରର ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ବଂଧୁ ଅଭିରାମ ପଣ୍ଡାଙ୍କ ସହ ସାକ୍ଷାତ କରି ମୋ ମନ କଥାଟି ଜଣାଇଲି । ଏଥିପାଇଁ ଉଦ୍ୟମ ଚାଲିଲା । ଶେଷରେ ୧୯୮୯ ମସିହା ନଭେମ୍ବର ୧୪ ତାରିଖ ପବିତ୍ର ଶିଶୁ ଦିବସ ଦିନ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ସଂସଦ, ବ୍ରହ୍ମପୁର ଜନ୍ମ ନେଲା ।

୧୯୯୦ ମସିହା ଠାରୁ ଅନୁଷ୍ଠାନର ବାର୍ଷିକ ଉତ୍ସବରେ ଜଣେ ଲେଖାଏଁ ବରିଷ୍ଠ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକଙ୍କୁ ସମ୍ମାନିତ ତଥା ପୁରସ୍କୃତ କରାଯାଉଥିଲା ବେଳେ ୧୯୯୩ ଠାରୁ ତୁଇ ଜଣ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକଙ୍କୁ ସମ୍ମାନିତ ତଥା ପୁରସ୍କୃତ କରାଯିବା ପାଇଁ ମୋ ପ୍ରସ୍ତାବ ଅନୁସାରେ କମିଟି ଅନୁମୋଦନ କଲା । ସେଥି ମଧ୍ୟରୁ ଗୋଟିଏ ରାଜ୍ୟସ୍ତରୀୟ ସମ୍ମାନ ସ୍ବର୍ଗତ ରାମଚନ୍ଦ୍ର ଆଚାର୍ଯ୍ୟଙ୍କ ସ୍ମୃତି ପାଇଁ ଉଦ୍ଦିଷ୍ଟ । ସେ ଥିଲେ ଜଣେ ପ୍ରବୀଣ ସାହିତ୍ୟିକ ବିଶେଷ କରି ଶିଶୁ

ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଦକ୍ଷିଣ ଓଡ଼ିଶାର ମଧୁସୂଦନ ରାଓ କହିଲେ ଅତ୍ୟୁକ୍ତି ହେବ ନାହିଁ । ଅକ୍ଷର ଶିକ୍ଷା ଠାରୁ ବିଦ୍ୟାଳୟ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବହୁ ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ଓ ଶିଶୁ ପାଠ୍ୟ ଉପଯୋଗୀ ପୁସ୍ତକମାନ ରଚନା କରି ଯାଇଛନ୍ତି ।

ତେବେ ୧୯୯୩ ମସିହାରେ ଅନୁଷ୍ଠାନର ଚତୁର୍ଥ ବାର୍ଷିକ ଉତ୍ସବରେ ପ୍ରଥମ ଥର ପାଇଁ ଦିଆଯାଇଥିବା ଏ ପ୍ରକାର ସମ୍ମାନଜନକ ପୁରସ୍କାର ପାଇଁ ଉପଯୁକ୍ତ ବ୍ୟକ୍ତି କିଏ ସେଥିପାଇଁ ମୁଁ ମନ ଭିତରେ ଅନେକ୍ଷଣ କରି ଚାଲିଲି । ପଲ୍ଲୀକବି ନନ୍ଦକିଶୋର ବଳଙ୍କ ଜନ୍ମପାଠ ପୁଣ୍ୟଭୂମି, କଟକ ଜିଲ୍ଲାର କୁସୁପୁରର ଦ୍ଵିତୀୟ ନନ୍ଦକିଶୋର ନିଜ୍ଜଳ ବର୍ଷିୟାନ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ଯାହାର କବିତା ପିଲାମାନଙ୍କୁ ମନ୍ତ୍ରମୁଗ୍ଧ କରିଦିଏ ଏବଂ ଦ୍ଵିତୀୟ ଶ୍ରେଣୀ ସାହିତ୍ୟ ବହିରେ ସ୍ଥାନିତ କାଳକନ୍ୟା କବିତା “ଏଇ ଘରଟିରେ ଜନମ ମୋର” କୁ ପାଠ କରି କୁନି କୁନି ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କର ହୃଦୟରେ ଯିଏ ସ୍ଵତନ୍ତ୍ର ସ୍ଥାନ ଅଧିକାର କରିଛନ୍ତି ସେହି କବିତାର ରଚୟିତା କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ ଉକ୍ତ ସମ୍ମାନ ପାଇଁ ଯୋଗ୍ୟତମ ବ୍ୟକ୍ତି ଭାବେ ମନସ୍ଥ କଲି । ଅନୁଷ୍ଠାନର କର୍ମକର୍ତ୍ତାମାନେ ସମସ୍ତେ ବିନା ଦ୍ଵିଧାରେ ଏହି ପ୍ରସ୍ତାବକୁ ଗ୍ରହଣ କଲେ । ନନ୍ଦକିଶୋର ବାବୁଙ୍କୁ ମୁଁ ସାଧାରଣ ସଂପାଦକ ହିସାବରେ ଏ କଥା ପତ୍ର ମାଧ୍ୟମରେ ଜଣାଇ ଦେଲି । ସେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କର ସମ୍ମତି ପ୍ରକାଶ କରି ମୋ ନିକଟକୁ ପତ୍ର ଦେଲେ ।

୧୯୬୨-୬୩ରୁ ପ୍ରାଥମିକ ସ୍ତରରେ ପାଠ୍ୟ ପୁସ୍ତକଗୁଡ଼ିକ ଜାତୀୟକରଣ କରାଗଲା । ସେତେବେଳେ ଲେଖକଙ୍କର ନାମ ସେହି ପୁସ୍ତକରେ ରଖା ଯାଉନଥିଲା । ତେଣୁ ଲେଖକଙ୍କର ନାମ ଜାଣିବା ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ, ଶିକ୍ଷକ ତଥା ପାଠକଙ୍କ ପାଇଁ ସୁଯୋଗ ନଥିଲା । ତେଣୁ ଏହି ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦାନର ଅନ୍ୟ ଏକ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ଥିଲା ବହୁ ଚର୍ଚ୍ଚିତ ଏଡେ ସୁନ୍ଦର ଚମତ୍କାର କବିତାର ସ୍ରଷ୍ଟା ନନ୍ଦକିଶୋର ବାବୁଙ୍କୁ ସମସ୍ତେ ଜାଣନ୍ତୁ ଓ ଚିହ୍ନିବୁ ।

ପତ୍ରାଳାପ ଅନୁସାରେ ସେ ଆସି ବ୍ରହ୍ମପୁରରେ ତା ୧୩.୧୧.୧୯୯୩ ମଧ୍ୟାହ୍ନରେ ପହଞ୍ଚିଲେ ଏବଂ ଆମ ଘରେ ଅତିଥି ହୋଇ ରହିଲେ ।

ଆମ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ସଂସଦର ବ୍ରହ୍ମପୁରର ଚତୁର୍ଥ ବାର୍ଷିକ ଉତ୍ସବ ସ୍ଥାନୀୟ ମୁନିସପାଲଟି ଟାଉନ ହଲ୍ ଠାରେ ତା ୧୪.୧୧.୧୯୯୩ ପବିତ୍ର ଶିଶୁ ଦିବସ ଅପରାହ୍ନରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେଉଥାଏ । ନନ୍ଦକିଶୋର ବାବୁଙ୍କ ସହ ମୁଁ ଓ ମୋର ପରିବାର ସେଠାକୁ ଗଲୁ । ବର୍ଷିୟାନ କବି, ବିଶେଷ ସମାଜସେବୀ ତଥା ସଂସଦର ସଭାପତି ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବ୍ରଜସୁନ୍ଦର ପଟ୍ଟନାୟକଙ୍କ ଅଧ୍ୟକ୍ଷତାରେ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଆରମ୍ଭ ହେଲା । ମୁଁ ଯେତେବେଳେ ଆଜିର ସମ୍ମାନଜନକ ରାଜ୍ୟସ୍ତରୀୟ ‘ରାମଚନ୍ଦ୍ର ସ୍ମୃତି ପୁରସ୍କାର’ର ସୁଯୋଗ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତି ହେଉଛନ୍ତି ‘କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲ’ ଯିଏ କି ଦ୍ଵିତୀୟ ଶ୍ରେଣୀ ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାଗ ସାହିତ୍ୟ ପୁସ୍ତକ ଆମ ପାଠ ବହିରେ ସ୍ଥାନିତ ‘ଆମ ଘର’ – କବିତାର ସ୍ରଷ୍ଟା ବୋଲି ପରିଚିତ କରାଇଲି,

ସେତେବେଳେ ଉପସ୍ଥିତ ଥିବା ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ, ଶିକ୍ଷକ, ଅଭିଭାବକ ତଥା ସାରସ୍ୱତ ପ୍ରେମୀମାନେ ଆନନ୍ଦ ଉଲ୍ଲାସରେ ଘନଘନ କରତାଳି ଦେଇ ସ୍ୱାଗତ ଜଣାଇଲେ । ଏହି ପରି ଜଣେ ପ୍ରଖ୍ୟାତ କବିଙ୍କର ଦର୍ଶନ ପାଇ ସମସ୍ତେ ନିଜକୁ ଧନ୍ୟ ମନେ କଲେ । ତାଙ୍କର କବିତା ସହିତ ଯଦିଓ ପୂର୍ବର ସମସ୍ତେ ଭଲ ଭାବରେ ସୁପରିଚିତ ତାଙ୍କୁ କେହି ସ୍ୱଚକ୍ଷୁରେ ଦେଖିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇ ନଥିଲେ । ତେଣୁ ସମସ୍ତେ ନିଜ ନିଜକୁ କୃତାର୍ଥ ମନେ କରୁଥାଆନ୍ତି ।

ସଭାକାର୍ଯ୍ୟ ଯଥାରୀତିରେ ଚାଲିଲା । ସ୍ୱର୍ଗତ ରାମଚନ୍ଦ୍ର ଆଚାର୍ଯ୍ୟଙ୍କ ସ୍ମୃତି ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ପ୍ରଦତ୍ତ ‘ରାମଚନ୍ଦ୍ର ଆଚାର୍ଯ୍ୟ ସ୍ମୃତି ସମ୍ମାନ’, ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ଚନ୍ଦ୍ରଶେଖର ସାହୁ ତତ୍କାଳୀନ ନଗରପାଳ, ବ୍ରହ୍ମପୁର ଓ ବର୍ତ୍ତମାନର ସାଂସଦଙ୍କ ଦ୍ୱାରା କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କୁ ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଥିଲା । ବ୍ରହ୍ମପୁର ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟର ଓଡ଼ିଆ ବିଭାଗର ଅବସରପ୍ରାପ୍ତ ପ୍ରାଧ୍ୟାପକ ଡକ୍ଟର ସୀତାକାନ୍ତ ମହାପାତ୍ର ମୁଖ୍ୟ ବକ୍ତା ଭାବେ ଯୋଗ ଦେଇ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ଓ ନନ୍ଦକିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ପ୍ରତିଭା ବିଷୟରେ ଆଲୋଚନା କରି ବୀକ୍ଷାତ୍ମକ ଭାଷଣ ଉପସ୍ଥାପନା କରିଥିଲେ ।

ନନ୍ଦକିଶୋର ବାବୁ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନାର ପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ତରରେ ଏକ ସାରଗର୍ଭକ ଓ ମର୍ମସ୍ପର୍ଶୀ ବକ୍ତବ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ ସରଳ, ସାବଲୀଳ, ବୋଧଗମ୍ୟ ହୃଦୟକୁ ଉଦ୍‌ବେଳିତ କରିବା ଭଳି ତାଙ୍କର ମୁଖ ନିସ୍ତୁତ କବିତାର ଅନର୍ଗଳ ପଂକ୍ତିମାନ ଉପସ୍ଥିତ କୋମଳମତି ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ, ଶିକ୍ଷକ, ଶିକ୍ଷୟତ୍ରୀ ଆଦି ସମସ୍ତଙ୍କୁ ମନ୍ତ୍ରମୁଗ୍ଧ କରିପାରିଥିଲା । ଉତ୍ସବ ଶେଷରେ ସମସ୍ତ ଶ୍ରୋତା, ଦର୍ଶକ ଯୋଗଦାନ କରିଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିମାନେ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆକୃଷ୍ଟ ହୋଇ ତାଙ୍କ ଚତୁଃପାର୍ଶ୍ୱରେ ଘେରି ଯାଇ ଭକ୍ତପୂର୍ବ ଆଳାପ ଆଲୋଚନାରେ ମଜି ଯାଇଥିବା ଦେଖା ଯାଇଥିଲା ବେଳେ ଶିକ୍ଷକ, ଅଭିଭାବକମାନେ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କୁ ଧରି ନନ୍ଦକିଶୋର ବାବୁଙ୍କ ସହ ବ୍ୟାକୁଳତାର ସହ ଫଟୋ ଉଠାରେ ବ୍ୟସ୍ତ ରହି ଥାଆନ୍ତି । ସେତେବେଳେ ଭାରୁଆଏ ଯାହା ହେଉ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟର ଏହିପରି ଏକ ଅନନ୍ୟ ପ୍ରତିଭାଧାରୀଙ୍କୁ ସମ୍ମାନିତ କରି ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ସାଂସଦ ବ୍ରହ୍ମପୁର ଗୌରବାନ୍ୱିତ ହୋଇଛି ।

ସେହିଦିନ ସେ ଆମ ଘରେ ରାତ୍ରୀ ଯାପନ କଲେ । ରାତିରେ ଶୋଇଲା ପୂର୍ବରୁ ବାର୍ଷିକ ଉତ୍ସବର ପ୍ରତିଟି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ଇତ୍ୟାଦିରେ ଉଦ୍‌ବୋଧିତ ହୋଇ ତାଙ୍କର ମନର କଥାକୁ ମୋ ଠାରୁ ଖଣ୍ଡିଏ କାଗଜ ନେଇ ସ୍ୱହସ୍ତରେ ଲିପିବଦ୍ଧ କରି କହିଲେ— ସାମନ୍ତରା ବାବୁ ! ଏହି କାଗଜ ଖଣ୍ଡକୁ ନିଅନ୍ତୁ । ଆପଣ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ଅନୁସ୍ଥାନକୁ ମୁଁ ଯେଉଁପରି ଭାବେ ଦେଖି ଚାହାନ୍ତି ତାହାକୁ ଲେଖିଦେଲି । ରଖି ଥାଆନ୍ତୁ । ମୁଁ ତାହାକୁ ସାଦରେ ଗ୍ରହଣ କରି ଆଜିଯାଏ ଯଦ୍ୱ ସହକାରେ ସାଇତି ରଖୁଥିଲି । ତାହାର ଅବିକଳ ନକଲ ନିମ୍ନରେ ପ୍ରଦତ୍ତ କରାଗଲା ।

[illegible]

*(Handwritten notes in Odia script)*

X X X

[illegible]

ସଂସଦର ବାର୍ଷିକ ଉତ୍ସବର ପରଦିନ ଅର୍ଥାତ୍ ତା ୧୫.୧୧.୧୯୯୩ ଦିନ ନନ୍ଦକିଶୋର ବାରୁକୁ ବ୍ରହ୍ମପୁର ନଗରର ବିଭିନ୍ନ ଦୋକାନ ବଜାର ଆଦି ବୁଲାଇ ଦେଖାଇଲି । ସନ୍ଧ୍ୟାରେ ସେହି ଟାଉନ୍ ହଲଠାରେ ‘ମହାନ ସଂଘ ସମାଜ ସେବା ଅନୁଷ୍ଠାନ’ର ଏକ ସଭାରେ ଯୋଗ ଦେଲୁ । ସଂସ୍ଥାର କର୍ମକର୍ତ୍ତାମାନେ ମଧ୍ୟ ଆମ ଦୁହେଁଙ୍କୁ ନିମନ୍ତ୍ରିତ କରିଥିଲେ । ପୂର୍ବଭଳି ନନ୍ଦକିଶୋର ବାରୁଙ୍କ ପାଖରେ ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରେମୀମାନଙ୍କର ଭିଡ଼ । ବିଭିନ୍ନ ଆଲୋଚନା ଆଲୋଚନା ଚାଲିଲା । ସେହି ସମୟରେ କେତେକ ବ୍ୟୁତ୍ଥ ମୋତେ ପଚାରିଲେ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ସାମଲ କେଉଁଠାରେ ବର୍ତ୍ତମାନ ଅବସ୍ଥାନ କରୁଛନ୍ତି । ମୁଁ ଉତ୍ତର ଦେଇଥିଲି, ସେ ଆମ ଘରେ ରହୁଛନ୍ତି । ଏ କଥା ଶୁଣି ସେମାନେ ମୋତେ ଖୁସିରେ କହିଲେ ଯାହା ହେଉ ଆପଣ ଭାଗ୍ୟବାନ । □□□

ଅବସରପ୍ରାପ୍ତ ଜିଲ୍ଲା କୃଷି ଅଧିକାରୀ, କେଉଁଝର କଲୋନୀ, କଟକ



# କୋଉ ଦିନ ସତେ ଆସିବ କୁହ !

ଡକ୍ଟର ସୁନାମଣି ରାଉତ

ଆକାଶବାଣୀର ତଳବାରଣ୍ଡାରେ

ତମ ହସ ସେ ଦିନ ସେତିକି ଦେଖା,  
ହସ ହସ ମୁହେଁ ପଚାରିଲ ମତେ  
“କେମିତି ଚାଲିଛି ତମରି ଲେଖା ?”

କହିଲ ସେଦିନ ଆମ ଘର ଆଡ଼େ

ଆସିବ ଅଛି ଯେ ଜରୁରୀ କାମ,  
ତମ କଥା ତମ ମନରେ ରହିଲା  
ଚାଲି ଗଲ ଆହା ସରଗ ଧାମ !

ବାଟେ ଘାଟେ ଅବା ସଭା ସମିତିରେ

ଯେତେଥର ତମେ ହୋଇଛ ଭେଟ,  
ସବୁଥର ମୁହଁ ଜାଣି, ତମେ ତ  
ଧନରେ ନୁହଁଇ ମନରେ ଶେଠ ।

ତମ ହସ, ତମ କଥା ଦି’ପଦରେ

ଆପଣା ପଣତି ଏମିତି ଥିଲା,  
ପରକୁ ନିଜର କରିପାରୁଥିଲା  
ଗାଆଁଠୁଁ ସହର, କୁଡ଼ାଠୁଁ ପିଲା ।

ତମ ‘ଆମ ଘର’ କାଗଜରେ ନୁହେଁ

ସବୁରି ମନରେ ହୋଇଛି ଛପା,  
ମୁଁ ପଢ଼ିଥିଲି, ମୋ’ପୁଅ ପଢ଼ୁଛି  
ପଢ଼ିଥଲେ ପୁଣି ମୋ’ଭାଇ ଅପା ।

ମୋ' ପୁଅ କହୁଛି ତମକୁ ଦେଖିବ  
ଆସିବ ତମେ, ମୋ' ଝିଅର ରାଣ,  
ଘରଣୀ ମୋହର ସଜାଡି ରଖୁଛି  
'ପାଣିଢାଳ', ଚାନ୍ଦା, ବିଡିଆ ପାନ ।

ସବୁ ଚାଉଳର ଭାତ, ମୁଗଡାଲି  
ମହୁରାଳି ମାଛ ବେଶର, ରାଇ,  
ବାଡ଼ି ଶାଗ ଭଜା, ଛତୁ, ବଡ଼ିଚୁରା  
ବାଜିକି ରଖୁଛି ତମରି ପାଇଁ ।

'ଆମ ଘର' ଆଜି ଛାତ ପାଲଟିଛି  
ନାହିଁ ନଡ଼ା, ଶେଣୀ, ବାଉଁଶ ରୁଅ,  
କତା ଦେଇଥିଲ ଆସିବାକୁ ତମେ  
କୋଉ ଦିନ ସତେ ଆସିବ କୁହ !! □□□  
ରାଜାବଗିଚା, କଟକ-୯

*With Best Compliments from :*



***Mr. Sashikanta Tripathy***

Branch Manager

The Oriental Insurance Co. Ltd.

**Ambica Complex, Canal Avenue,**

**Bargarh - 768 028**

Ph : (06646) 232815(O)

230485(R)

# ସର୍ବେ ଚଳିବେ କାଳ ବଳେ ଯଶ ରହିବ ମହୀ ତଳେ

କୈଳାସ ଚନ୍ଦ୍ର ମହାନ୍ତି

ମନୁଷ୍ୟ ସମ୍ପଦ ଈଶ୍ବର ସୃଷ୍ଟି କୁହି ବିବେକ ଜ୍ଞାନ ବଳରେ ଏହା ଜୀବ-ଜଗତ ମଧ୍ୟରେ ଏକ ସ୍ବତନ୍ତ୍ର ସ୍ଥାନ ଲାଭ କରିଛି । କିନ୍ତୁ ସବୁ ମଣିଷ ସମାନ ନୁହନ୍ତି । ସମସ୍ତେ କିନ୍ତୁ ଜୀବନକୁ ଆନନ୍ଦମୟ କରିବା ଲକ୍ଷ୍ୟରେ ଥାଆନ୍ତି । ଏହି ଆନନ୍ଦ ଗୋଟିଏ ଉତ୍ସରୁ ମିଳି ନଥାଏ । କେହି ଖାଇବାକୁ ଆନନ୍ଦ ପାଏ ତ, କେହି ଗାଇବାରୁ ଆନନ୍ଦ ପାଏ କେହି ପଢ଼ାପଢ଼ିରୁ ଆନନ୍ଦ ପାଏତ, କେହି ଅବା ଖେଳରୁ । ଏହିଭଳି ଅସରଳି ସାରଣୀ ପଡ଼ିଛି । କିନ୍ତୁ ଆନନ୍ଦ ମନରେ ଅନ୍ୟକୁ ଆନନ୍ଦ ବାଣ୍ଟିବାର ଲୋକ ସମାଜ ମଧ୍ୟରେ କମ୍ ଥାନ୍ତି । ଯେଉଁମାନେ ଏହା କରିଥାନ୍ତି ସେମାନଙ୍କୁ ସମାଜର ଅମୂଲ୍ୟ ସମ୍ପଦ ବୋଲି ମନେ କରାଯାଏ । ସେମାନଙ୍କ ଜୀବନ ଧନ୍ୟ । ସେମାନେ ହାତରେ, ବାଟରେ ସବୁଠାରେ ପୂଜା ପାଇଥାନ୍ତି । ଯୁଗ ଯୁଗ ପାଇଁ ମଣିଷଙ୍କ ମନରେ ଚିତ୍ରଟିଏ ପରି ଛାପି ହୋଇ ରହିଯାନ୍ତି । କାଳକ୍ରମେ ହୁଅନ୍ତି ।

ଆମ ଅଞ୍ଚଳରେ ସେହିଭଳି ଏକ ଲୋକଥିଲେ ସ୍ବର୍ଗତ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ (ନନ୍ଦ ବାବୁ) । ଆଜି ଇହ ଜଗତରେ ନାହାନ୍ତି ସତ କିନ୍ତୁ ତାଙ୍କର ନାମ ସ୍ମରଣ ମାତ୍ରେ ତାଙ୍କର ରୂପ ଆଖି ଆଗରେ ଝଲସି ଉଠୁଛି । ମନେ ହେଉଛି ସତେ ଯେପରି ସେ ସାଥୀରେ ଢଳି ଢଳି ଚାଲୁଛନ୍ତି, ବୁଲୁଛନ୍ତି, ହସ୍ତୁଛନ୍ତି ଓ ସେହିଭଳି ମିଠା କଥା କହୁଛନ୍ତି ବାସ୍ତବିକ ଅନ୍ତରରେ ଭଲ ପାଉଥିବା ଲୋକେ କେବେ ହେଲେ ତାଙ୍କୁ ଭୁଲି ପାରିବେ ନାହିଁ - ଏହା ନିରାଚ ସତ୍ୟ ।

ନନ୍ଦ ବାବୁଙ୍କ ଭଳି ଯଶସ୍ବୀ, ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ ବିରଳ । ତାଙ୍କର ମହନୀୟ ଗୁଣ ନିକଟରେ ସମସ୍ତଙ୍କର ମୁଣ୍ଡ ନଇଁ ଯାଉଥିଲା । ସେ ହସୁଥିଲେ - କଥାରେ କଥାରେ ଅନ୍ୟକୁ ହସାଉଥିଲେ । ନନ୍ଦ କିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିରର ଶ୍ରେଣୀ ପ୍ରକୋଷ୍ଠରେ ସାହିତ୍ୟ ପଢ଼ାଉଥିଲା ବେଳେ ଅକାଚ୍ୟ ଯୁକ୍ତି ବାଢୁଥିଲେ । ଅଜସ୍ର ଉଦାହରଣ ମାଧ୍ୟମରେ ପିଲାମାନଙ୍କର ଚଗଲା ମନକୁ ଶିର କରୁଥିଲେ । ତାଙ୍କର ସାହତ୍ୟ ଆଲୋଚନା କାଳରେ ପିଲାମାନେ ହୁଁ-ହୁଁ ହେଉନଥିଲେ । ପରୀକ୍ଷାଖାତା ମୂଲ୍ୟାୟନ ବେଳେ ତାଙ୍କ ହାତରେ ଅଧିକ ନମ୍ବର ପାଇବା କଷ୍ଟକର ଥିଲା । ଅବଶ୍ୟ ପିଲାଙ୍କ ପକ୍ଷେ ଏହା ଶୁଭ-ଦାୟକ ହେଉ ଥିଲା । କାରଣ ସାହିତ୍ୟରେ କିଭଳି ଶବ୍ଦ ସଂଯୋଜନା, ବାକ୍ୟଗଠନ ହେବା ଉଚିତ ପରୀକ୍ଷା ଖାତାରୁ ହିଁ ପିଲାଏ ଶିକ୍ଷାଲାଭ କରୁଥିଲେ ।

ଶିକ୍ଷକତା ଯଦିଓ ତାଙ୍କର ବୃତ୍ତି ଥିଲା, କବିତା ଲେଖିବା, ନାଟକ ରଚନା କରିବା

ଗଜ୍ଜ ଓ ପ୍ରବନ୍ଧ ଲେଖିବା ତାଙ୍କର ଏକ ପ୍ରକାର ନିଶା ଓ ସଉକ ଥିଲା । ତାଙ୍କ ଭାଷାରେ କବିତା ହିଁ ତାଙ୍କ ଜୀବନ । ଅତି ଗାଉଁଲି ଭାଷାରେ ତାଙ୍କ ରଚନାବଳୀ ପିଲାଠାରୁ ବୁଢ଼ା ସାକ୍ଷର ଠାରୁ ନିରକ୍ଷର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଯେ କେହି ତାଙ୍କ କବିତା ପଢେ ଅବା ଶୁଣେ କିଛିଟା ଅନୁରାଗ ରହେ ନାହିଁ । ଅତି ବାସ୍ତବଚିତ୍ର ନିଖୁଣ ଭାବରେ ତାଙ୍କ କବିତାରେ ଫୁଟି ଉଠୁଥିଲା । ଜଣକର ହୃଦୟକ୍ଷଣୀ ଓ ମନଛୁଆଁ ହେଉଥିଲା । ସେଥିପାଇଁ ପାଠ ନପଢ଼ିଥିବା ପିଲାଏ ଗାଁ ଦାଣ୍ଡରେ, ସାଥୀ ମେଳରେ, ମା ଆଗରେ ଆନନ୍ଦ ମନରେ ଗାଆନ୍ତି

ବୋଉ ଲୋ ବୋଉ

ଆଜି କଲୁ ଟିକେ ଅରୁଆ ଯାଉ

ସେଥିରେ ପଡ଼ିବ ଗୁଡ଼ ନଡ଼ିଆ

ଭାରି ସୁଆଦିଆ ଭାରି ବଢ଼ିଆ

ମୁଁ ଖାଇଛି, ମଜା ପାଇଛି, ଆଉ ଖାଇବାକୁ ମନେ କରିଛି ।

ଏହି ପରି ଅନେକ ସରଳ, ସାବଲୀଳ ପଲ୍ଲୀ କବିତା ସୃଷ୍ଟି କରିବା ନନ୍ଦ ବାବୁଙ୍କର ବୈଶିଷ୍ଟ୍ୟ । ସେ ଜଣେ ପ୍ରାୟ ଓ ପ୍ରକୃତ ସାରସ୍ୱତ ସାଧକ ଥିଲେ । ତାଙ୍କର ନିଷ୍ଠା ଏକାଗ୍ରତା, ଚିନ୍ତନଶକ୍ତି ଅସାଧାରଣ ଥିଲା । ସତ୍ୟ ଉପରେ ଆଧାରିତ ବାସ୍ତବଧର୍ମୀ କବିତା ରଚନା କରିବା ତାଙ୍କର ଧର୍ମ ଥିଲା । ପଲ୍ଲୀଭୂଇଁରୁ ବିଷୟବସ୍ତୁ ସାଉଁଟି ସେଥିପାଇଁ ଅତି ଗାଉଁଲି ଶବ୍ଦ ଯୋଡ଼ି କବିତାରେ ଭାବ ଫୁଟାଇବାରେ ସେ ଥିଲେ ନିଖୁଣ ଶିଳ୍ପୀ ।

ସେ କହୁଥିଲେ ଆଦର୍ଶବୋଧ ହିଁ ମଣିଷର ଶ୍ରେଷ୍ଠ ସମ୍ପତ୍ତି ଯାହା ମଣିଷର ସ୍ୱାତନ୍ତ୍ର୍ୟ ରକ୍ଷା କରିବାରେ ସମର୍ଥ ହୁଏ । ଏଣୁ ନିରଳସ ଜୀବନ କଟାଇବା ତାଙ୍କର ଅନ୍ୟ ଏକ ବିଶିଷ୍ଟ ଗୁଣ ଥିଲା । ତାଙ୍କର ବେଶ-ପୋଷାକ, ଖାଦ୍ୟ-ପେୟ, ଚାଲିଚଳନ, ଆଚାର-ବ୍ୟବହାର କଥାବାର୍ତ୍ତା ଅନ୍ୟମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଉଦାହରଣ ମନେ ହେଉଥିଲା । ଅତି ଗାଉଁଲି ଭାବେ ସେ ଚଳିବାକୁ ପସନ୍ଦ କରୁଥିଲେ । ପଲ୍ଲୀଶତ୍ରୁ ହେବା ଅପେକ୍ଷା ବଣ ମଲ୍ଲୀଟିଏ ହୋଇ ରହିବା ବରଂ ଶ୍ରେୟସ୍କର – ଏହା ଥିଲା ତାଙ୍କର ନୀତି । ଗର୍ବ, ଅହଂକାର, ହିଂସା, ଲୋଭ, କପଟତା ଠାରୁ ଦୂରରେ ରହିବାକୁ ସେ ସଦା ସର୍ବଦା ଚେଷ୍ଟିତ ଥିଲେ । ପାଳଗଦା ଉପରେ ଛିଡ଼ା ହୋଇ ନିଜର ବଡ଼ିମାପଣ ଦେଖାଇ ନିଜକୁ ବଡ଼ ବୋଲି କହିବାକୁ ସେ ପସନ୍ଦ କରୁନଥିଲେ । ସେ କହୁଥିଲେ ସେଷ ପକାଇ ନିଜର ବାସନା ବଢ଼ାଇବା ଅପେକ୍ଷା ନିଜ ଠାରେ ଯଦି କିଛି ବାସନା ଅଛି ତାହାକୁ ବାହାର କରି ଅନ୍ୟକୁ ଆକୃଷ୍ଟ କରିବା ଆବଶ୍ୟକ । କାରଣ ମଣିଷ ନିଜର ଅନ୍ତର୍ନିହିତ ଗୁଣବଳରେ ବଡ଼ ହୋଇଥାଏ । ସେହିଭଳି ବଜାରରେ ତେଲ-ଭୁଣ ସଉଦା, ପନିପରିବା ଓ ମାଛ ଆଦି କିଣିଲା ବେଳେ ସେ ଅଧିକ ପଇସା ବଦଳରେ ଜିନିଷ କିଣୁ ନଥିଲେ । ପଚାରିଲେ କହୁଥିଲେ ସବୁଦିନେ ଚଳିଲା ଭଳି ବ୍ୟବସ୍ଥା କରିବା ଉଚିତ । (Cut your coat according to your cloth) । ଆଜି

ତେଲିଆ ମୁଣ୍ଡ କାଲି ନୁହୁରାମୁଣ୍ଡ ଦେଖାଇବା କୁଆଡ଼କୁ ପାଏ ? ଖୁବ୍ କମ୍ ଲୋକଙ୍କଠାରୁ ଏଭଳି ବାସ୍ତବଧର୍ମୀ ଉପଦେଶ/ପରାମର୍ଶ ଶୁଣିବାକୁ ମିଳିଥାଏ । ତାଙ୍କ କଥା ଓ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟରେ କିଛି ଫରକ ନଥିଲା । ସେ ସର୍ବଦା ନିଜ କାର୍ଯ୍ୟ ମାଧ୍ୟମରେ ଅନ୍ୟକୁ ପରାମର୍ଶ ଦେଉଥିଲେ ।

ବାଲିଚନ୍ଦ୍ରପୁର ବଜାର ତାଙ୍କର ଅତି ପ୍ରିୟ ଚରାଭୂଇଁଥିଲା । ବଜାରକୁ ଆସି ଖବର କାଗଜ ପଢ଼ିବା, ପ୍ରିୟ ଲୋକଙ୍କୁ ଖୋଜି ଭେଟିବା, ଦିପଦ ଦୁଃଖ-ସୁଖ ହେବା ଏହା ତାଙ୍କର ନିତି ଦିନିଆ କାର୍ଯ୍ୟଥିଲା । କେହି ଲେଖାଟିଏ ଦେଖାଇ ସଂଶୋଧନ କରିବାକୁ ଚାହିଁଲେ ସେ ତତ୍କ୍ଷଣାତ୍ ବସି ପଡ଼ି କାର୍ଯ୍ୟ ସାରୁଥିଲେ । ସେଥିପାଇଁ ଭଲ ସମୟ/ଭଲ ସ୍ଥାନରେ ଆବଶ୍ୟକ ପଡୁ ନଥିଲା । ଗୁଣି ଲୋକମାନଙ୍କୁ ସେ ଅନ୍ତର ସହିତ ଭଲ ପାଉଥିଲେ । ମୁଁ ତାଙ୍କୁ ଭୁଲି ପାରିବି ନାହିଁ । କାରଣ ତାଙ୍କର ସଂଜ୍ଞା ଆଚରଣ ଓ ଉପଦେଶ ମୋତେ ଯଥେଷ୍ଟ ପ୍ରଭାବିତ କରିଥିଲା ।

ଏ ଦୁନିଆଁ ଛାଡ଼ି ଚାଲିଯିବାକୁ ଏକ ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସମୟ ଥାଏ । ତାହା କାହାରିକୁ ଜଣା ନଥାଏ । ସେ ନିଷ୍ଠୁର ସମୟ ଅଜାଣତରେ ଆସେ, ଯାହାକୁ ସାଥୀରେ ଧରି ନେଇଯିବା କଥା ନେଇଯାଏ । ନନ୍ଦ ବାବୁଙ୍କ ଭାଗ୍ୟରେ ତାହାହିଁ ଘଟିଛି । କିନ୍ତୁ ସେ ଆଦ୍ୟାବଧି ଜୀବିତ ଅଛନ୍ତି ତାଙ୍କ କବିତାରେ, ରେଡିଓ ଓ ଟିଭି ଷ୍ଟେସନରେ । ତାଙ୍କୁ ମିଳିଥିବା ପ୍ରଶଂସା ପତ୍ର ସମୂହ ତାଙ୍କ ଘରେ ତାଙ୍କ ପାଇଁ ଅମୂଲ୍ୟ ସମ୍ପଦ ଭଳି ରହିଛି । ଯାହାକୁ ମୂଲ୍ୟାୟନ କଲେ ଜଣେ ବିସ୍ମୟାଭିଭୂତ ହୁଏ । ମନରେ ଆସେ ସତରେ ଜଣା ପଡୁ ନଥିଲେ ବି ସେ କେତେ ମହାନ ବ୍ୟକ୍ତି ନଥିଲେ !

ଆମ ଅଞ୍ଚଳକୁ ସାହିତ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସମୃଦ୍ଧ ଓ ରୁଚିମନ୍ତ କରିବା ପାଇଁ ଯେଉଁ ବରପୁତ୍ର ଗଣଙ୍କର ତାଲିକା ରହିଛି ସ୍ୱର୍ଗତ ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲ ସେହି ତାଲିକା ମଧ୍ୟରେ ସ୍ଥାନ ନିରୂପଣ କରିଗଲେ ଜଣେ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ଭାବରେ । ତାଙ୍କର ସୃଷ୍ଟି ସାହିତ୍ୟାକାଶରେ ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ନକ୍ଷେତ୍ର ସଦୃଶ । ଆମ ଅଞ୍ଚଳ ସେଥିପାଇଁ ଗର୍ବିତ ।

ନିଜ ଲେଖା ଓ ମହନୀୟ ଗୁଣ ମାଧ୍ୟମରେ ସେ ପ୍ରମାଣ କରିଦେଇଗଲେ ଭାଗବତର ସେହି କାଳଜୟୀ ବାଣୀକୁ -

“ସର୍ବେ ତଳିବେ କାଳ ବଳେ

ଯଶ ରହିବ ମହୀତଳେ”

ସେହି ଦେବ ପ୍ରତିମା ଆତ୍ମା ନିକଟରେ ମୋ ସଶ୍ରବ ପ୍ରଣାମ । □□□

ଅବସର ପ୍ରାପ୍ତ ପ୍ରଧାନଶିକ୍ଷକ

ବାଲିଚନ୍ଦ୍ରପୁର ମ.ଇ. ସ୍କୁଲ

# ବିରୂପା କୁଳରେ ବିଷୁବ ବିହାର

ଶ୍ରୀ ମହାଦେବ ମହାନ୍ତି

(ଆଜି)ଜୋଛନା ପଖଳା ପୁନେଇ ରାତିରେ ଚନ୍ଦ୍ରମା ଜାଳେ ବତି  
ଛିନି କରନା ପ୍ରୀତି ବନ୍ଧନ-ଏ ଯେ ବିଷୁବର ରାତି । ।୦।

ଦିନ ଥିଲା ଦିନେ ଓଡ଼ିଆ ଗରବ ବାଣୀ ବରସୁତ ଗଣେ,  
ଏଇ ବିରୂପାର କୋଳେ ଖେଳା କରି ଜାଗିଲେ ସାହିତ୍ୟ ରଣେ ।  
ପଲ୍ଲୀକବି, ଶିଶୁକବି ସେ ‘ସାମଲ’ ‘ବଳ’ ‘ଶିଳ୍ପୀ’ ‘ସଂସ୍କାରକ’,  
ମାତିଲେ ତାତିଲେ କମର କଷିଲେ ଜିତିଲେ ରଖିଲେ ଟେକ

ଧାଇଁ ଲକ୍ଷ୍ୟର ପଥେ,

ଆଗେଇ ଥିଲେ ସେ ସାଜି ସର୍ଦ୍ଦାର ଚଢ଼ି ଦୁର୍ବାର ରଥେ । ॥୧॥

ଦେଖା ଦେଇଥିଲା ‘ଉଁରୁ ପରବତେ’ ଡାମରାକାଉର ଛଟା  
‘ରୋଷେଇଘର’ର ମା’ଙ୍କ ଖରଡ଼ା ଶାଗ ଓ ବେସରବଟା ।  
ବଳମ ନ ଧରି କଲମ ମୁନରେ କେତେ ଥିଲା ତାଙ୍କ ବଳ,  
ଜାତିର ଆଖିରେ ଦେଖାଇ ଥିଲେ ତି ‘ନନ୍ଦ ସାମଲ’ ‘ବଳ’ ।

ହୋଇ ଭାବ ଗଦଗଦ,

ଲେଖୁଥିଲେ ଯାହା ଦେଖୁ ଥିଲେ ତାହା ‘ବିରୂପା’-‘କଟିଆକୁଦ’ । ॥୨॥

ଆହୁରି ବି ଅଛି ବହୁ ସ୍ମୃତି କଡ଼ି ଅଶିଳା ଭୁଲୁକା ବାଟେ,  
କୃଷ୍ଣଦାସପୁର, ମେରିପୁର ଆଦି ରାହାଳ ବୁକୁଟି ପାଟେ ।  
ମାଣୁକା ସହ ସେ ମହିପୁର ଯେ ନାନପୁର କୁସୁପୁର,  
ପାଖା ପାଖି ଦିଶେ ସେ ମୂଳବସନ୍ତ ବହୁଗୁଣେ ଗୁଣୁପୁର ।

ବାଗ୍ମୀ ସଂସ୍କାରକ ଶିଳ୍ପୀ

ଓଡ଼ିଆ ଜାତିର ଗୁରୁ ଗୌରବ ରଖିଗଲେ କେତେ କଳ୍ପି । ॥୩॥

ପ୍ରକୃତି ସୁଷମା ଅତି ଅନୁପମା ଏଇ ବିରୂପାର କୁଳେ  
ମଳୟ ଆକୁଳ ଚମ୍ପା ବକୁଳ ଧାରି ଧାରି ନାରିକେଲେ  
ସାରି ସାରି ବର ଓଷ୍ଠ ଅଶୋକ କମ୍ପ-ରସାଳ କୋଳ  
ଭାରି ଭାରି ଶୋଭା କୃଷ୍ଣଚୂଡ଼ାରେ ହଳଦିବସନ୍ତ ଖେଳ

ମେଘ ମହାର ରାତି,

ସ୍ଥିର ଶୀତଳ ଶରଦ ଆକାଶ ଶୀତ ବି ଅରାଏ ଛାତି । ॥୪॥

ବିରୁପା ବିହରୀ ସଜସୁନା ଗୋରୀ ଯୁବା ମନ କରି ତୋରୀ,  
 ଗୋରୀ ମୁହେଁ ଖେଳି ତୋରୀ ଚଢ଼ତାଳି ତୋରୀ ରୂପ ଉଠେ ଝଲି,  
 କୁରୁ କୁରୁ ହସି ବୁଣି ବୁଣି ଯାଏ ଯୋଷା ଖୋଷା ଫୁଲ ବାସ,  
 ଅମାନିଆ ବାତ କରେ ଉଡ଼ପାତ ଉଡ଼ାଇ ଅଳ୍ପ ବାସ ।

କଳପି ଥିଲା ସେ ଯାରେ

ଝରି ଝରି ପଡ଼େ ସରି ସରି ଲାଜେ ଚାହିଁ ମଦାଳସୀ ତାରେ । ॥୫॥

ତେବେ ବି କହେ ମୁଁ ସଂସ୍କୃତି ନାମେ ଅପସଂସ୍କୃତି ବରି

ଓଡ଼ିଆ ଜାତିର ଗୁରୁ ଗୌରବ ଦିଅ ନା ଚରଣେ ଦଳି ।

ରଖୁ ସ୍ବାଭିମାନ, ହୁଅ ଗରିୟାନ ନ ପାଶୋରି ଶାଳିନତା,

ଏଇ ବିରୂପାର ଲଳେ ଧୋଇ ଦିଅ ଅନ୍ତର ଆବିଳତା ।

ଅନାବିଳ ମନ ତଳେ,

ନ କରି ଶୋଚନା ତୋଳ ମୂର୍ଚ୍ଛନା ଭାବ ଦିଆନିଆ ଭୋଳେ ।

ବିରୂପାର କଳ କଲ୍ଲୋଳ ଖେଳି ମିଶାଅ ଛାତିରେ ଛାତି,

ଛିନି କରନା ପ୍ରୀତି-ବନ୍ଧନ ଏ ଯେ ବିଷ୍ଣୁବର ରାତି । ॥ □□□

ଧାର ପୁର, ମାହାଜୀ, କଟକ

*With Best Compliments From :*

**M/S PRAVAT CYCLE STORE**

**Prop : Harihar Sahoo**



**ହରିହର ସାହୁ**



**BALICHANDRAPUR, JAJPUR-754 205**

**Ph : 2768649 (0671)**

# ଗୁରୁ ପ୍ରଣାମ

ନିକୁଞ୍ଜ ଜେନା

ଏହା ଭିତରେ ଦୁଇଟି ବର୍ଷ ଅତିବାହିତ ହୋଇଗଲାଣି - ନନ୍ଦ କିଶୋର ସାମଲଙ୍କ ଡିରୋଧାନ । ଏମିତି ଗତି ଚାଲିବ ବର୍ଷ ପରେ ବର୍ଷ । କିନ୍ତୁ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କର ସ୍ମୃତି ସେମିତି ରହିଥିବ ଅସ୍ଥାନ ତାଙ୍କର ଅଗଣିତ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ, ବଂଧୁ ଏବଂ ବୃହତ୍ତର ପାଠକ ମହଲରେ । କାବ୍ୟିକ ପ୍ରତିଭାକୁ ପ୍ରତିହତ କରିପାରେନା କାଳ । ତାର କରାଳ ଛାୟା କେବଳ ତଳ ଚଂଚଳ ଶରୀରକୁ ଅଦୃଶ୍ୟ କରିଦିଏ ।

ପ୍ରତିଭାଧର କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର କେବଳ ଯେ ଥିଲେ କବି, ତାହା ତାଙ୍କର ଯଥେଷ୍ଟ ପରିଚୟ ନୁହେଁ, ସେଥିରେ ଜଣେ ମଣିଷ ପରି ମଣିଷ, ଦରଦୀ ବଂଧୁ, ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ, ସ୍ନେହୀ, ଛାତ୍ର ବନ୍ଧଳ, ଅମାୟିକ, ନମ୍ର ଏବଂ ସର୍ବୋପରି ପ୍ରାଣୋତ୍ତଳ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ବ । କବି ପ୍ରଥମେ ମଣିଷ । ତା'ପରେ କବି । ଯଦି ମଣିଷ ଭାବରେ କବିର ମର୍ଯ୍ୟାଦା, ସ୍ବାଭିମାନ, ଆତ୍ମରିକତା, ସହୃଦୟତା ଇତ୍ୟାଦି ମାନବିକ ଗୁଣଗୁଡ଼ିକ ନଥାଏ, ତେବେ କବି ଭାବରେ ସେ ଅନ୍ୟମାନଙ୍କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରିବ କିପରି ?

ଗଦା ଗଦା କବିତା ଲେଖି କେହି କେବେ କବି ହୋଇ ପାରେନା । କେତୋଟି ମାତ୍ର କବିତା ଲେଖି କବି ହେବାର ସୌଭାଗ୍ୟ କେବଳ ପ୍ରକୃତ କବିର ଥାଏ । ଏହା ମଧ୍ୟ ସେହିଭଳି ଭାବେ ପ୍ରଯୁଜ୍ୟ ଗନ୍ଧ, ଉପନ୍ୟାସ, ପ୍ରବନ୍ଧ ଏବଂ ସାହିତ୍ୟର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ବିଭାଗରେ । ଏଠାରେ ଦୃଷ୍ଟାନ୍ତ ଦେବା ନିଷ୍ପ୍ରୟୋଜନ ।

କବି ନନ୍ଦକିଶୋରଙ୍କର କବିତା ପ୍ରାଣକୁ ଛୁଇଁଯାଏ । ହୃଦୟକୁ ଗଭୀର ଭାବେ ସ୍ପର୍ଶ କରେ । ନିତିଦିନିଆ ଘଟଣା, ଦୈନନ୍ଦିନ ଜୀବନଧାରାରେ ଅନେକ ଛୋଟ ଛୋଟ ଘଟଣା ଯାହା ସାଧାରଣ ନଜରରେ ଗତାନୁଗତିକ ଭାବେ ରହିଯାଇଥାଏ, ତାହାକୁ କବି ଏକ ନୂତନ ଦୃଷ୍ଟିଭଙ୍ଗୀରେ ଦେଖେ, ଯେଉଁଠି ଥାଏ ଏକ ମାନବିକ ସମ୍ବେଦନା । ତାର ପ୍ରଭାବ ହୁଏ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଗଭୀର । ସେହିପରି ସରଳ, ସାବଲୀଳ କବ୍ୟ କବିତାର ସୁଖ ଥିଲେ ନନ୍ଦକିଶୋର । ରାଜନୀତି ଠାରୁ ନିଜକୁ ସଦାସର୍ବଦା ଦୂରେଇ ରଖୁଥିବା ଏକ ସ୍ବାଭିମାନୀ ଆଦର୍ଶ ଶିକ୍ଷକ ।

ଏହି ଲେଖକ ଥିଲା କବି ନନ୍ଦକିଶୋରଙ୍କର ଅଗଣିତ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରୁ ଜଣେ । ଛାତ୍ରାବସ୍ଥାରୁ ଶେଷ ମୁହୂର୍ତ୍ତ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାଙ୍କ ସହ ସଂପର୍କ ଯୋଡ଼ିଥିବା ତାଙ୍କର ଜଣେ ଶ୍ରଦ୍ଧେୟ ଛାତ୍ର ଏବଂ କାବ୍ୟ କବିତାର ବିମୁଗ୍ଧ ପାଠକ ।

ନନ୍ଦ ସାର୍ବ କେବଳ ନନ୍ଦକିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିରରେ ସାହିତ୍ୟ ଶିକ୍ଷକ ନଥିଲେ (ଯେଉଁ ଶିକ୍ଷାନୁଷ୍ଠାନରେ ସେ ଅନେକ ଦଶନ୍ଧି ଶିକ୍ଷାଦାନରେ ନିଜକୁ ନିୟୋଜିତ ରଖୁଥିଲେ) ।



ସେ ଥିଲେ ଜନ୍ମମାଟି କୁସୁପୁର ଗାଁର ସମସ୍ତଙ୍କର ପ୍ରିୟ ନନ୍ଦ ସାର।

ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ସମସ୍ତଙ୍କର ଥିଲା ସମ୍ମାନବୋଧ। ସବୁବେଳେ ହସ ହସ ମୁହଁ। କବି ଭାବରେ ବାରି ହୋଇ ପଡ଼ନ୍ତି ଦୂରରୁ। ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ ସହକର୍ମୀ, ବଂଧୁ, ଗ୍ରାମବାସୀ, ଚିହ୍ନା ଅଚିହ୍ନା ସମସ୍ତଙ୍କର ସେ ଯେପରି ନିଜର !

କୁସୁପୁର ମାଟିର ଦୁଇ ବରପୁତ୍ର ପଲ୍ଲୀ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର ଏବଂ ଶିଳ୍ପୀଗୁରୁ ବିନ୍ଦାଧରଙ୍କ ଉପରେ ତାଙ୍କର ନିଜସ୍ବ କବିତା ସହ ପ୍ରସଂଗ କ୍ରମେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ କବିମାନଙ୍କର କବିତାକୁ ସେ ଯେପରି ଆବୃତ୍ତି କରିଥାନ୍ତି, ତାର ପଟାନ୍ତର ନାହିଁ।

କବିତା ଲେଖିବା ସହ ଭାବନାୟ ଉପସ୍ଥାପନା ମଧ୍ୟ ଅନ୍ୟ ଏକ କଳା ଯେଉଁଥିରେ କବି ନନ୍ଦକିଶୋର ଥିଲେ ଧୂରାଣୀ।

ସବୁରୀ ଦଶକରେ ଅନେକ ନାଟକ, ଗୀତିନାଟ୍ୟ, ଏକାଙ୍କିକା ଏବଂ କେତେକ ପୌରାଣିକ ବିଷୟବସ୍ତୁ ଆଧାରରେ ତାଙ୍କର ନାଟକ ସବୁ ସେତେବେଳେ ବିଦ୍ୟାଳୟ ପ୍ରାଙ୍ଗଣରେ ମଞ୍ଚସ୍ଥ ହେଉଥିଲା। ସେ ସବୁର ଶବ୍ଦ ସଂଯୋଜନା ଓ ସାଂଗିତିକତାରେ ଯେ କେହି ମୁଗ୍ଧ ହୋଇଯାଉଥିଲା।

ଲ୍ଲାସରେ ଶିକ୍ଷାଦାନ ପ୍ରଣାଳୀ ଥିଲା ତାଙ୍କର ନିଜସ୍ବ। ସାହିତ୍ୟ ସାର୍ ଭାବରେ ବିଦ୍ୟାଳୟରେ ତାଙ୍କର ଯଥେଷ୍ଟ ସୁନାମ ଥିଲା। କବିତା ହେଉ କିମ୍ବା ପ୍ରବନ୍ଧ ହେଉ, ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ଶବ୍ଦ ଏବଂ ବାକ୍ୟରେ ଏକ ଘଣ୍ଟାର ଏକ ପିରିୟଡ୍ ଯେ କିପରି ଚାଲିଯାଏ, ତାହା ତାଙ୍କର ଯେ କୌଣସି ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କୁ ପଚାରିଲେ ସେ କହିପାରିବେ। ଜ୍ଞାନର ଯେମିତି ସୀମା ସରହଦ ନାହିଁ !!! ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରସଂଗର ଅବତାରଣା ବିଭିନ୍ନ କବିଙ୍କର କବିତା ପଂକ୍ତିର ଆବୃତ୍ତି ସହ ନିଜର ଅନୁଭୂତି।

ଶିକ୍ଷାଦାନରେ ଆଗ୍ରହ, ତତ୍ପରତା ଏବଂ ଅଂଗୀକାର ବୋଧ କେବଳ ନନ୍ଦ ସାରଙ୍କୁ ଯେ ଶୁଣିଛି ସେ ହିଁ ଜାଣେ। ଶିର ନିସ୍ତବ୍ଧ ସମୁଦାୟ ଲୁସରୁମ୍। ଶେଷରେ ପିରିୟଡ୍ ସରିଯିବାର ଠନ୍ ଠନ୍ ଶବ୍ଦ।

ଏହି ପ୍ରବନ୍ଧରେ ଗୋଟିଏ ଦୃଷ୍ଟାନ୍ତ ଦେବାକୁ ଏହି ଲେଖକ ଉଚିତ୍ ମନେ କରୁଛି। ନବମ ଶ୍ରେଣୀର ସାମ୍ବାସିକ ପରୀକ୍ଷା ସରିଥାଏ। ନନ୍ଦ ସାର ଆମ ଲ୍ଲାସର ସାହିତ୍ୟ ଶିକ୍ଷକ ହିସାବରେ ସାହିତ୍ୟ ଖାତା ଦେଖି ସମସ୍ତଙ୍କୁ ନମ୍ବର ଦେଇ ସାରିଥାନ୍ତି। ପୂର୍ବ ଶ୍ରେଣୀମାନଙ୍କରେ ସାହିତ୍ୟରେ ସବୁ ଠାରୁ ଅଧିକ ନମ୍ବର ରଖୁଥିବା ଛାତ୍ର (ଲେଖକ ନିଜେ) ସାହିତ୍ୟରେ ୪୨ ନମ୍ବର ରଖୁଥିବାର ଶୁଣିଲା। ସାର ଖାତାରୁ ନମ୍ବର ଡାକି ଚାଲିଥାନ୍ତି ସମୁଦାୟ ଲ୍ଲାସର। ଜଣକ ପରେ ଜଣେ। ସେହି ଅନୁପାତରେ ଅନ୍ୟ ଛାତ୍ରମାନଙ୍କର ନମ୍ବର ମଧ୍ୟ କମ୍ ଥିଲା। କେତେକ ମଧ୍ୟ ସାହିତ୍ୟରେ ଫେଲ୍। ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହେଲେ ସମସ୍ତେ। ସମସ୍ତଙ୍କ ନଜର ତାଙ୍କ ଆଡ଼େ।

ସାଧାରଣ ଭାବେ ସାହିତ୍ୟରେ ୬୦ ନମ୍ବରରୁ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ବ ଆଶା କରୁଥିବା ଏବଂ ଲ୍ଲାସରେ ପ୍ରଥମ ହେଉଥିବା ଛାତ୍ରର ଅବସ୍ଥା ଯଦି ଏଇଆ ତେବେ ଅନ୍ୟମାନଙ୍କ ଅବସ୍ଥା

କଣ ହୋଇଥିବ । କ୍ଲାସରେ କିଛି ସମୟ ପାଇଁ ଚାପା ଗୁଞ୍ଜରଣ ସୃଷ୍ଟି ହେଲା । କେତେକ ଛାତ୍ରଙ୍କୁ ଏହା ହସିବା ପାଇଁ ଖୋରାକ ଯୋଗାଇଲା । ସାର୍‌ଙ୍କୁ ପଚାରିବାର ସାହସ ନାହିଁ । ନନ୍ଦସାର୍ ତାଙ୍କ ଆଡୁ ଆରମ୍ଭ କଲେ - “ତୁମ୍ଭେମାନେ କଣ ଭାବୁଛ, ଭଲ ଭଲ ଶବ୍ଦ ଯୋଡି ଦେଲେ ସାହିତ୍ୟ ହୋଇଯାଏ ? ସାହିତ୍ୟ ଏକ ପ୍ରକାଶ ଭଂଗୀ । କଥିତ, ସରଳ ଭାଷା ଭାବକୁ ଠିକ୍ ଭାବେ ପ୍ରକାଶ କରିଥାଏ ।” କାହାର ଜଣକର ଭାଷା ଠିକ୍ ନାହିଁ । ସେଦିନ ସାରା କ୍ଲାସ ଗାଳି ଶୁଣି ଚାଲିଲା । ନନ୍ଦ ସାର୍ ପୁଣି କହି ଚାଲିଲେ - “ପ୍ରତ୍ୟେକ ଶବ୍ଦ ସରଳ, ସୁଗଠିତ, ଏବଂ ବୋଧଗମ୍ୟ ହେବା ଜରୁରୀ । ସରଳ ଶବ୍ଦରେ ଯେଉଁ ଭାବ ରହିଥାଏ କ୍ଲିଷ୍ଟ ଶବ୍ଦରେ ତାହା ନଥାଏ ।”

ତାଙ୍କର ଭାଷା ସେଦିନ ଏବଂ ରୋକଠୋକ୍ ଏବଂ ଅନୁଭୂତି ସମ୍ପନ୍ନ ଥିଲା, ଯାହାକୁ ସେ ନିଜ ବିଚାରରେ ଖୁବ୍ ଗୁରୁତ୍ବର ସହ ଆରୋପ କରିଥିଲେ ସମସ୍ତଙ୍କ ଉପରେ ।

ନନ୍ଦ ସାର୍‌ଙ୍କୁ ସେଦିନର ଛାତ୍ରମାନେ କିପରି ଗ୍ରହଣ କରିଥିବେ କେଜାଣି - ମୁଁ କିନ୍ତୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ମାତ୍ରାରେ ଗ୍ରହଣ କରିପାରି ନଥିଲି । ମୋ ଭିତରେ ଏ ପ୍ରଶ୍ନ ମୋତେ ବାରମ୍ବାର ଆନ୍ଦୋଳିତ କରୁଥିଲା । - ନନ୍ଦ ସାର ସିନା ଆମ ହାଇସ୍କୁଲରେ ଖାତା ଦେଖୁଛନ୍ତି - ସରଳ ଭାଷାରେ ଲେଖିଲେ ସେ ଭଲ ନମ୍ବର ଦେବେ । କିନ୍ତୁ ବୋର୍ଡ ପରୀକ୍ଷାରେ ? ଖାତା ଯେଉଁଠି ପଡ଼ିବ ସେ ପରୀକ୍ଷକଙ୍କର ଦୃଷ୍ଟିଭଂଗୀ କିପରି ଥିବ ?

ସାର୍‌ଙ୍କ କଥାକୁ ମୁଁ କେତେ ଦୂର ଛାତ୍ର ଜୀବନରେ ଗ୍ରହଣ କରିଥିଲି ତାହା ଜାଣିନଥିଲି । ତତ୍କାଳୀନ ବୋର୍ଡ ପରୀକ୍ଷାରେ ସାହିତ୍ୟରେ ୬୫ରୁ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ବ ନମ୍ବର ମୁଁ ରଖୁଥିଲି । ସମ୍ଭବତଃ ସରଳ ଭାଷାରେ ମୋର ଉତ୍ତର ନଥିଲା । ସ୍ବାଭାବିକ ଭାବରେ ମୁଁ ମୋ ଭାଷାରେ ଉତ୍ତର ଲେଖୁଥିଲି ।

ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ଅଶୀ ଦଶକରେ ଓଡ଼ିଶାର ବିଶିଷ୍ଟ ସାହିତ୍ୟିକ ମାନଙ୍କ ସଂସର୍ଗରେ ଆସିଲା ପରେ ଓଡ଼ିଶାର ସ୍ବନାମଧନ୍ୟ ଔପନ୍ୟାସିକ ଜ୍ଞାନପୀଠ ପୁରସ୍କାର ଗୋପୀନାଥ ମହାନ୍ତିଙ୍କ ସହ ପ୍ରଶ୍ନୋତ୍ତର ସମୟରେ ସେ ଗୋଟିଏ କଥା ଉପରେ ସ୍ପଷ୍ଟ ଗୁରୁତ୍ବ ଦେଇଥିଲେ । ତାଙ୍କ ସହ ଅନୌପଚାରିକ କଥାବାର୍ତ୍ତା ବେଳେ ତାଙ୍କର ଜ୍ଞାନପୀଠ ପୁରସ୍କାର ପ୍ରାପ୍ତ ଉପନ୍ୟାସ “ମାଟିମଟାଳ”ରେ ବ୍ୟବହୃତ ହୋଇଥିବା ସରଳ କଥିତଭାଷା ଏବଂ ଗୋଟିଏ ଶବ୍ଦ ଓ ବାକ୍ୟ ଉପରେ ସେ ଏଭଳି ଦର୍ଶନ ସମ୍ବଳିତ ତଥ୍ୟ ଉପସ୍ଥାପନ କଲେ ଯାହା ମୋତେ ସେତେବେଳେ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟଚକିତ କରି ଦେଇଥିଲା ।

ସେତେବେଳେ ସେ ମୋତେ କହିଥିଲେ - “Nikunja, Do you think literature is a ready made meal that is served to you. No. you have to arrange every tit bits - Cook and serve -”

ଗୋଟିଏ ଶବ୍ଦ ଚୟନ ଏବଂ ବାକ୍ୟରେ ଯେଉଁ ଭାବ ଏବଂ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ରଖି ଲେଖକ ପାଠକ ସମ୍ମୁଖରେ ଉପସ୍ଥାପନ କରିଥାଏ, ପାଠକ ତାକୁ ସେହିଭଳି ଭାବେ ବିଚାର କରିବା ଉଚିତ । ଏହା ଉପରକୁ ଯେତେ ସରଳ, ଭିତରେ ତାହା ଆଦୌ ନୁହେଁ ।

ସେତେବେଳେ ମୁଁ ମୋର ପୂଜ୍ୟ ଗୁରୁଦେବ ନନ୍ଦ ସାରଙ୍କୁ ମନେ ପକାଉଥିଲି ।  
ନନ୍ଦ ସାର୍ ଠିକ୍ ଏହି କଥା କହୁଥିଲେ ।

କେତେ ବର୍ଷ ପୂର୍ବେ, ଆମ ଛାତ୍ର ଜୀବନରେ ନନ୍ଦ ସାର୍ ତାଙ୍କର ନିଜସ୍ବ ଅଭିଜ୍ଞତା  
ଏବଂ ଦୂର ଦୃଷ୍ଟିରେ ସେତେବେଳେ ଯେଉଁ ବିଷୟରେ ଆମକୁ ଲାସରେ ଦିନେ ସଚେତନ  
କରାଇଥିଲେ, ଏହା କେବଳ ତାହାର ପୁନରାବୃତ୍ତି ମାତ୍ର ! □□□

୧୨୧/ଏ, ଜାଗମରା, ଖଣ୍ଡଗିରି, ଭୁବନେଶ୍ବର

## ଅନନ୍ୟ କବି ନନ୍ଦ କିଶୋର

ଶାନ୍ତନୁ କୁମାର ସାହୁ

ବଳ ନୁହେଁ ତୁମେ ନନ୍ଦକିଶୋର ତୁମେ ହେ ସାମଲ ମଲ୍ଲ  
ଉତ୍କଳ ମାଟିର ବନ୍ଦ୍ୟ କବିଙ୍କର ହେଲ ତୁମେ ସମତୁଲ ।

ଲେଖନୀର ବାଣ କଲ କେତେ ଟାଣ କମ୍ପିଲା ସାରା ପ୍ରଦେଶ  
କେତେ କେତେ ପୁରସ୍କାରେ ପୋତି ହୋଇ ରଞ୍ଜିତଲ କେତେ ଯଶ ।

ଛୋଟ ଛୁଆଙ୍କର ମନଛୁଆଁ ଗୀତ କବି ପ୍ରାଣୁ ପଡେ ଝରି  
ଶୁଣି ସେ କବିତା ରଥ ମହାରଥ ହେଉଛନ୍ତି କେତେ ଝୁରି ।

ଜନମିଲ ଏକ ଗ୍ରାମେ ସୁରୁପା ବିରୁପା କୁଳେ  
ଲେଖିଗଲ ଅମୃତ ର ଗାଥା  
କବିତା ମାଧ୍ୟମ କରି ଦେଶ ଦଶା ଲୋକ କରି  
ଦୂର କଲ ପଲ୍ଲୀ କବି ବ୍ୟଥା ।

ତୁମର ଗୀତିନାଟିକା ପାଣି କବି ଠୁଁ ଅଧିକା  
ମଞ୍ଚ ପରେ ଭାବି ହୁଏ ସିନା  
ସାହିତ୍ୟେ ରସ ଛନ୍ଦିଛ କବିତା କେତେ ବାନ୍ଧିଛ  
ଆଜି ସବୁ ସିନ୍ଧୁ ତୁମ ବିନା ॥ □□□

ଅତ୍ୟୁତ ନିବାସ, କୁସୁପୁର

# ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟରେ ଜଣେ ପଲ୍ଲୀ କବି

ଡକ୍ଟର ମହେଶ୍ୱର ମହାନ୍ତି

ମାହାଙ୍ଗା ଅଞ୍ଚଳର କୁସୁପୁର ମାଟିର ଆଉ ଜଣେ ପଲ୍ଲୀକବି - ସେ ହେଉଛନ୍ତି ସ୍ୱର୍ଗତ ନନ୍ଦଶୋର ସାମଲ । ସେ ଇତିହାସ ପୃଷ୍ଠାକୁ ଚାଲିଯିବାର ଦୁଇ ବର୍ଷ ହୋଇଗଲାଣି, କିନ୍ତୁ ଓଡ଼ିଆ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟର ଇତିହାସରେ ସେ ଅମର ହୋଇ ରହିବେ ଚିରକାଳ ।

ଆଧୁନିକ କାଳର ବିଜ୍ଞାନ ଅଭିମୁଖୀ ସାହିତ୍ୟକୁ ଛାଡ଼ି ଦେଲେ ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟ ଏ ଯାବତ ଅଧିକର ଭାବେ କେବଳ କଳ୍ପନା ଓ ଅତିକଳ୍ପନାକୁ ଆଧାର କରି ଗଢ଼ି ଉଠିଛି । ଶିଶୁ ଯେ କଳ୍ପନକୁ ଆଧାରକରି ଗଢ଼ି ଉଠିଛି । ଶିଶୁ ଯେ କଳ୍ପନା ପ୍ରିୟ ଏବଂ କଳ୍ପନାର ପକ୍ଷୀରାଜ ଘୋଡ଼ା, ବୁଢ଼ୀ ଅସୁରୁଣୀ ଓ ସାତ ଭାଇ ଚମ୍ପାଭଳି ଗଛରୁ ପ୍ରଭୃତ ଆନନ୍ଦ ପାଇଥାଏ, ଏହା ସତ୍ୟ । କିନ୍ତୁ ଶିଶୁର ପ୍ରାତ୍ୟହିକ ପରିବେଶରୁ ସତ୍ୟ ଓ ବାସ୍ତବ ଘଟଣାକୁ ନେଇ ବେଶ କଳାତ୍ମକ ଭାବରେ ପରିବେଷଣ କରି ଶିଶୁର ମନୋରଞ୍ଜନ କରାଯାଇପାରେ, ଏ ଦିଗରେ ସ୍ୱର୍ଗତ ସାମଲ ଗୋଟିଏ ନୂତନ ଦିଗ ଉନ୍ନୋତନ କରିଗଲେ । ଏଗୁଡ଼ିକରେ ମନୋରଞ୍ଜନ ସହିତ ଶିକ୍ଷାତ୍ମକ ଦିଗଟି ବିଶେଷ ଭାବେ ଉଲ୍ଲେଖଯୋଗ୍ୟ ।

ସ୍ୱର୍ଗତ ସାମଲ ବୃତ୍ତିରେ ଥିଲେ ଶିକ୍ଷକ । ସେ ପ୍ରାୟ ୧୩୫୫ କବିତା ପୁସ୍ତକ ପିଲାମାନଙ୍କ ପାଇଁ ରଚନା କରିଛନ୍ତି । ପ୍ରଥମ କବିତା ପୁସ୍ତକ ‘ଗୁଣ୍ଡୁଟି ମୁଷାର ପିଠିରେ ଗାର’ ୧୯୬୦ରେ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଥିବା ସ୍ଥଳେ ସର୍ବଶେଷ ପୁସ୍ତକ ‘ଅଜା ପଚାରିଲେ ଆଇକି’ ୨୦୦୩ରେ ପ୍ରକାଶିତ ହୋଇଥିଲା । ଏଗୁଡ଼ିକ ମୁଖ୍ୟତଃ ପଲ୍ଲୀ କେନ୍ଦ୍ରିକ ଏବଂ ବାସ୍ତବାତ୍ମକ । ଗାଁ ପାଖର ବିରୁପା ନଈ, ଘର ପଛର ଟିକି ଗାଡ଼ିଆ ସେଥିରେ ମାଡ଼ିଥିବା ବୁନି ବୁନି କଅଁଳ କଳମ ଲତା, ତାଳବଣ, ବେଣା ପାଟ, କିଆ ଗୋହିରୀ, ରାତିରେ ପଣପଣ ଜୁକୁକୁଳା ପୋକଙ୍କ ସମାରୋହ, ମଦରଙ୍ଗା ଶାଗ, ନେଉଟିଆ ଶାଗ, ସଜନା ଛୁଇଁ, ଅରୁଆ ଜାଉ, ମଣ୍ଡା, ଏଣ୍ଡୁରି, ଚକୁଳି, କାକରା ଇତ୍ୟାଦି ଓଡ଼ିଆ ଘରର ସୁସ୍ୱାଦୁ ପିଠାପଣା ଅତ୍ୟନ୍ତ ଚିତ୍ରଗାହୀ ଭାବରେ ସେ ପରିବେଷଣ କରିଛନ୍ତି । ଏଗୁଡ଼ିକ କେବଳ ଶିଶୁ କାହିଁକି ବୟସ୍କମାନଙ୍କର ହୃଦୟକୁ ଆଲୋଡ଼ିତ କରିଥାଏ । ନିଜର ସ୍ମୃତିକୁ ଉଜ୍ଜୀବିତ କରିବାକୁ ଯାଇ ସେ ଲେଖିଛନ୍ତି -

“ଭାରି ଭଲ ଲାଗେ ମତେ ମୋ ଗାଁ

ଆଲୁଅ ପବନ ଚାର

ଯୋଉଠି ରହିଲେ ଯୁଆଡ଼େ ଗଲେ

ମନେପଡ଼ିଯାଏ ମୋର ।

ମନେପଡେ ତାର ଚିକି ଗତିଆ  
 କଅଁଳ କଳମ ନଟି,  
 ଚିକିଏ ଦୂରରେ ନୀଳ ପାହାଡ  
 ପାହାଡ ଝୁମୁକି ଝାଟି  
 ନୀଳ ସେପାରିର ଧାନକିଆରୀ  
 ଏ ପାରିର ତାଳବଣ  
 ଗାଁ ତୋଟା ତଳେ କିଆ ଗୋହିର  
 ଗୁରୁକୁଳା ପଣା ।”

ଏଗୁଡ଼ିକ କେବଳ କବିତା ଦୃଷ୍ଟିରୁ ରଚନା କରାଯାଇନାହିଁ, ଏଥି ମଧ୍ୟରେ ଆତ୍ମା  
 ଅଛି, ଜୀବନ ଅଛି ଆବେଗ ଅଛି ।

କବିଙ୍କ ରଚିତ “ଆମ ଘରେ କିଆଁ ବଳଦ ନାହିଁ” କବିତାଟି ବେଶ ହୃଦୟଗ୍ରାସୀ  
 ତଥା ଭାବୋଦ୍ଦୀପକ । ଶିଶୁଟି ପର ଜନ୍ମରେ ଗୋଟିଏ ବଳଦ ହୋଇ ଜନ୍ମଗ୍ରହଣ କରିବାର  
 ଅଭିଳାଷ ନିଜ ଆଇ ପାଖରେ ପ୍ରକାଶ କରିଛି । ଆଇ ଏ କଥାକୁ ନାପସନ୍ଦ କରନ୍ତେ ଶିଶୁଟିର  
 ଯୁକ୍ତି ହେଉଛି -

“କାହିଁ କି ଆଇ  
 ବଳଦର କଣ ଜୀବନ ନାହିଁ ?  
 ଖଟି ଖାଉଟି  
 ବେଶ୍ ତ ଅଛି ।  
 ବଳଦ କଅଣ ମିଛ କହୁଛି ?  
 ଚୋରି କରୁଟି ?  
 ପର ଧନ ନେଇ ଫାଙ୍କି ଦେଉଟି ?”

× × ×

ହେଲା ତ ହେଲା  
 ମଣିଷ ଅଧିକ କଅଣ କଲା ?  
 ସିଏ ଖାଇଲା  
 ଇଏ ଖାଇଲା  
 ଦିନ ଖସିଲା  
 ବଳଦ ମଲା  
 ମଣିଷ ମଲା  
 କାହାର ଏଥିରେ କଅଣ ଗଲା ?

ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟରେ ଏହା ଏକ ଅଭିନବ ଚିନ୍ତା । ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟରେ କୌଣସି ଉଚ୍ଚତର

ଚିତ୍ତା ନଥାଏ ବୋଲି କହି ଯେଉଁମାନେ ଏହାକୁ ଲଘୁ ଦୃଷ୍ଟିରେ ଦେଖନ୍ତି, ସେମାନେ ଏଇ ଭଳି କବିତାରୁ ନିଶ୍ଚେ ତାଙ୍କ ଯଥାର୍ଥ ଉତ୍ତର ପାଇପାରିବେ । ତାଙ୍କର ଏଇଭଳି ଅନ୍ୟ ଏକ ଭାବୋଦ୍ଦୀପକ କବିତା ହେଉଛି ‘କାହିଁକି ମୁଁ ଜାଣେ ନାହିଁ ।’ ଗୋଟିଏ ବୁଢ଼ୀ ଗାଈର ଜୀବନ ଯନ୍ତ୍ରଣାକୁ ରୂପ ଦେବାକୁ ଯାଇ ସେ ଲେଖିଛନ୍ତି

“ମୋତେ ଯିଏ କଲା ଗାଈ  
ତତେ ସିଏ ଦେଲା ମଣିଷ ଜୀବନ  
କାହିଁକି ମୁଁ ଜାଣେ ନାହିଁ ।  
ଭଲ ଭଲ ଚିତ୍ତ ଖୋଜିଲୁ ମୋତେ  
ହୁଧ ହୁହିଁ ନେଲୁ ମୋଠାରୁ ଯେତେ  
ନେଲୁ ବୋଲି କିଛି ଦେଲୁ  
ମୋତେ କାହିଁ କିରେ ବୁଢ଼ୀ ବୟସରେ  
ଆଜି ହଟହଟା କଲୁ ।  
ନେଇ ନାଇ ସାରି ଏଇଆ କଲୁ  
ମାଟି ମୁଠେ ଦେଲୁ ନାହିଁ  
କଂସେଇ ହାତକୁ ଧରେଇ ଦେଲୁ  
ଆଶା କରିଥିଲି ମଣିଷ ପଣିଆ  
ତୋ ଠୁଁ ପାଇବା ପାଇଁ ।”

ଜୀବେ ଦୟା ସହିତ ଶିଶୁ ମନରେ ଏକ ପ୍ରଚ୍ଛନ୍ନ ବୈପ୍ଳବିକ ଭାବନା ଏଇ କବିତାରେ ପରିସ୍ପଷ୍ଟ ହୋଇଛି । ଏଗୁଡ଼ିକ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସତ୍ୟ ଏବଂ ବାସ୍ତବ । ବାସ୍ତବାନୁଭୂତିତା ଅନୁରଣିତ ଏଭଳି କବିତାଗୁଡ଼ିକ ବୟସ ନିର୍ବିଶେଷରେ ସବୁ ଶ୍ରେଣୀର ପାଠକଙ୍କର ମନକୁ ଯେ ଆନ୍ଦୋଳିତ କରିବ ଏଥିରେ ସନ୍ଦେହ ନାହିଁ । କବିତାରେ ବାସ୍ତବତାର ଅନ୍ୟ ଏକ ପ୍ରତିରୂପ ହେଉଛି ‘ଅଜା ପଚାରିଲେ ଆଇକି’ କବିତା ପୁସ୍ତକ ।

ଏହାର ପ୍ରଥମ କବିତାଟି ହେଉଛି –

“ଅଜା ପଚାରିଲେ ଆଇକି  
ସେ ଘରେ ତ କେହି ଗୋଟିଏ ନାହିଁ  
ପଙ୍ଖାଟି ଘୁରୁଚି କାହିଁକି ?  
ଟି. ଭି ବି ଲାଗିଛି ସେ ଘରେ  
କେହିତ ଦେଖୁନ ଲାଗିଚି ଟି.ଭି  
ତମେ ତ ବସିଛ ଏ ଘରେ ।”

ଆଧୁନିକ ଜୀବନର ଏହା ଏକ ନିଖୁଣ ସତ୍ୟ । ଶିଶୁ କଣ ବୟସ୍କ କଣ ସମସ୍ତଙ୍କ ପାଇଁ ଏହା ଶିକ୍ଷଣୀୟ । କବିଙ୍କର ଅଧିକାଂଶ କବିତା ହେଉଛି ପଲ୍ଲୀଭିତ୍ତିକ ଏବଂ ସେଗୁଡ଼ିକରେ

ମୌଳିକ ଚିନ୍ତା ଓ ଚେତନାର ସ୍ପର୍ଶ ଅନୁଭୂତ ହୋଇଥାଏ । କେବଳ ସରଳ ପଦ ସଂଯୋଜନା ବା ସହଜ ମନୋରଞ୍ଜନ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ଏଗୁଡ଼ିକ ରଚିତ ହୋଇଥିବା ଭଳି ମନେ ହୁଏ ନାହିଁ । ଗୋଟିଏ ଦରିଦ୍ର ଗ୍ରାମ୍ୟ ବାଳକ ପାଇଁ ଅରୁଆ ଜାଉର ଅପୂର୍ବ ସ୍ବାଦ, ଗ୍ରାମ୍ୟ ଜୀବନରେ ଛେନା ମଣ୍ଡାର ଆକର୍ଷଣ ପୁଣି ସେଇଭଳି ଅନ୍ୟ ଏକ ଦରିଦ୍ର ବାଳକର ମାତୃ ସମ୍ମୁଖରେ ଶପଥ ହୋଇଛି -

“ଜମି କିଣିବି  
ହଳିଆ ହେବି  
ପାଠ ପଢ଼ିବି  
ହଳ କରିବି  
ଜାଉ ପିଠା ହେବ, କେତେ ଖାଇବି।”

ଏହି କବିତାଟିରେ ଦାରିଦ୍ର୍ୟ ପାହିତ ଜୀବନର ଚିତ୍ର ଯେତିକି ମାର୍ମିକ, ସରଳ, ନିରୀହ, ନିଷ୍ପପତ ଶିଶୁର ଆନ୍ଦୋଳିତ ପ୍ରାଣର ପରିପ୍ରକାଶ ସେତିକି ବିଶେଷତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ । ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟରେ ଏଭଳି ପରିକଳ୍ପନା ନିଃଶ୍ଚ ଅଭିନବ ।

ସ୍ୱର୍ଗତ ସାମଲଙ୍କର ପ୍ରକାଶିତ ଓ ଅପ୍ରକାଶିତ ଲେଖାକୁ ଏକତ୍ର କରି ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀ ଆକାରରେ ପ୍ରକାଶ କରିବା ପାଇଁ ତାଙ୍କ ଆତ୍ମଜମାନେ ଉଦ୍ୟମ କରୁଥିବା ଆନନ୍ଦର ବିଷୟ । ଏଇଟି କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ହେଲେ ନନ୍ଦ କିଶୋରଙ୍କ ପ୍ରତିଭାର ଆକଳନ ଓ ଆଲୋଚନା ସହଜ ହେବ । ଆଜି ତାଙ୍କର ୨ୟ ଶ୍ରାଦ୍ଧ ବାର୍ଷିକୀ ଅବସରରେ ସେଇ ସ୍ୱର୍ଗତ ପ୍ରତିଭା ପ୍ରତି ମୋର ପ୍ରଣାମ । □□□

କେନ୍ଦୁଝର କଲୋନୀ, କଟକ

*With Best Compliments from :*

**Bijay Kumar Senapati**

(Daily Collection Agent)

The Urban CO-operative Bank Ltd., Cuttack

Salepur Branch, Salipur, Cuttack

Res: Nadasahasapur

Ph : (0671)2352300(O)

2768172(R)

# NANDA SIR – HUMBLE & HUMANE

Capt. D.K. Mohanty

Nanda Kishore Samal's contribution to the Oriya literature is well known. He stood like a colossus among his contemporaries. Though he is widely known as a poet & writer of the literature for children but his writings are popular with readers of all ages. Simplicity was his hall mark. It has differentiated him from other writers and poets and placed him in the forefront. He was his own guide and critic. He always tried to compete with himself. His originality was his strength. The poem "AMA GHARA" when released was read and sung by both children & their grand parents marking the beginning of a new era in Oriya literature. Some people knowingly or unknowingly try to draw a comparison between the "Shishu Kabi" & "Pallee Kabi". It may not fair to any of them. Though their names are identical except their titles both have left their footprints in the Oriya literature on their own rights. Kusupur village is fortunate to be the birth place of both the prominent poets and some of us are fortunate to be associated with them. There are few who are living to speak of their experience with the "Pallee Kabi". But as a student and an admirer of Nanda Sir it is worthwhile to narrate two incidents seen and heard which speak the other side of the poet, a person so humble and humane.

Being fortunate to be the son of an eminent sculptor and a student of an eminent poet I had the privilege to witness one incident where the poet revealed his soul praising sculptors & painters and placing them above the poets. It was an autumn morning, Nanda Sir reached our house at 7 AM covering a distance of nearly 2 kms from his house by bicycle. His mission was to meet Sri Bipra Charan Mohanty the celebrated sculptor & painter who had come to his native village Nanpur during the Puja Holidays and to request him to prepare a cover design for his maiden poetry collections "GUNDUCHI MUSHARA PITHIRE



GARA". During the course of discussion he revealed that he was waiting for the past 3 months to meet him for the work. His argument was that when there is an eminent artist in the neighbouring village why he should go to Cuttack or other places. It was one of the happiest moments for me to see the efforts of my teacher and my father to give birth to a book depicting poetic excellence. After hearing all details Sri Mohanty sat down and the job was completed in less than a hour. The sketch of a squirrel (Gunduchi Musha) a pencil painting was so fascinating that Nanda Sir could not control his emotions and showered praises for the artist. He was so obsessed with the painting that he had preserved it till his death. Once he showed me the painting and asked me why it was so dear to him. Without understanding the humble mind I replied that this could be his first love being his maiden work. I was wrong. He commented that it is a masterpiece, the work of a great artist created out of love and affection. He continued with his usual forceful way that the sculptors and artists are much superior to the poets and writers. His argument was as simple as his writings & thoughts. He carried on stating that to understand the idea of a poet or writer a common man has to read the whole poem, essay, story or novel etc. With his usual smile he stated that after all that the man may or may not understand the theme or the message of the poet or writer wants to communicate. There could be different versions depending on the celebraty status of the poet or writer or understanding of the person. However, a common man may not have difficulty in recognizing a statue or understanding a painting. Such thoughts could only come to the mind of a person of the stature of Nanda Sir. It not only reflected his greatness and humbleness but also his concern for fellow human beings.

He was never his own admirer. Rather he was his biggest critic. The above virtue has probably made him different from others and taken him to great heights. For others good deeds he was never in short of words of praise. Even though he was one of the most popular and respected teachers teaching in higher classes he had tremendous regards

for teachers of lower classes, specially the lower primary classes. Those days there were no K.G. classes. Such of his thinking once became a topic of our debate. The matter was put to rest, after he narrated his experience while undergoing training to become a trained teacher. During training, in one occasion, he was allotted to teach Geography in CI-V and one of his friends was to take class in standard-II. When his friend requested him to swap the classes he gladly agreed little knowing that it was much more difficult to teach students of lower classes. He realised the same as soon as he entered the class. Students were not disciplined and busy doing their own work. His shouts did not yield any result. He had to teach the students an essay on the cow. To attract their attention he showed them a painting of a cow. Very soon he realized his mistake as all the students came running towards him, some of them climbing on the table to snatch the painting and others pulling him from all directions. He was helpless and there was utter chaos. In the mean time, the inspector had entered the class. The whole incident was narrated by him with his usual humorous ways and language. To our query how much mark was given to him towards assessment for that class, he said with pride that he got 8 out of 10 and concluded, that is why he always pays respect and praises the teachers teaching in lower classes especially in the lower primary classes. This shows his humbleness and humanitarian qualities.

It will be foolish to comment on the depth of his knowledge in the Oriya literature. It was as vast and as deep as the Pacific Ocean. But his life was not all about Oriya literature. His personal experience and respect for the fellow human beings is something which may not be known to many. Let his ideals and thoughts guide the proud and selfish like a Pole Star of the Northern Sky guiding those who lose their directions in the darkness.

Let us salute the great soul. □□□

Deputy Conservator, Paradip Port Trust

Paradip, Orissa - 75 41 42.

# ଅପାଶୋରା ମୁହୂର୍ତ୍ତ

ଏକାଦଶୀ ସେଠା

ଆମ ଅଞ୍ଚଳର ସମସ୍ତ ସାରସ୍ବତ ଉତ୍ସବମାନଙ୍କରେ ଧୋତି କାମିଜ ପିନ୍ଧା ଅତ୍ୟନ୍ତ ସାଧାସିଧା ଅନାକର୍ଷଣୀୟ ଚେହେରା – କିନ୍ତୁ ସଦା ହସ ହସ ମୁହଁର ସେହି ସ୍ନେହୀ ମଣିଷତ୍ବ ଆଉ ଆମ ଗହଣରେ ନାହାଁନ୍ତି । କଥା କଥାରେ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଆପଣେଇ ନେବାର ଅଲୌକିକ ଶକ୍ତି ତାଙ୍କ ନିକଟରେ ଥିଲା । ଅସଂଖ୍ୟ କବିତା, ନାଟକ, ଗୀତିକବିତା ଓ ରୂପକ ଲେଖି ସେ ଓଡ଼ିଆ ସାରସ୍ବତ ଉତ୍ସବକୁ ସମୃଦ୍ଧ କରିଛନ୍ତି । ଆମ ଅଞ୍ଚଳର ଆବାଳ ବୃଦ୍ଧବନିତା ସମସ୍ତଙ୍କର ସେ ଥିଲେ ନନ୍ଦ ସାର୍ । ମୁଁ ତାଙ୍କର ଛାତ୍ର ଭାବରେ ନୁହେଁ, ତାଙ୍କର ସାହିତ୍ୟିକ ମୂଲ୍ୟବୋଧକୁ ଗ୍ରହଣ କରି ତାଙ୍କୁ ସମ୍ମାନ ଜଣାଏ । ତାଙ୍କ ସହ ବିତିଥିବା ଅନେକ ଅପାଶୋରା ମୁହୂର୍ତ୍ତ ମଧ୍ୟରୁ ଗୋଟିଏ ମୁହୂର୍ତ୍ତର କଥା ମୁଁ କହୁଛି ।

ତାଙ୍କ ରଚିତ ‘ମୋତେ ସେତେବେଳେ ଦଶ ବରଷ’ ପୁସ୍ତକ ପାଇଁ ସେ ୧୯୯୨ ମସିହାରେ ଓଡ଼ିଶା ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡେମୀ ପୁରସ୍କାର ଲାଭ କରିଥିଲେ । ତାଙ୍କର ଏହି ସଫଳତା ପାଇଁ ସେ ଓଡ଼ିଶାର ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରାନ୍ତରୁ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ଲାଭ କରିଥିଲେ । ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ସାମଲଙ୍କୁ ‘ମାହାଜୀ-ବଡ଼ବଣା ସାହିତ୍ୟ ଓ ସଂସ୍କୃତି ପରିଷଦ’ ଦ୍ବାରା ଏକ ସ୍ବତନ୍ତ୍ର ଉତ୍ସବରେ ଭବ୍ୟ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଥିଲା । ଅନୁଷ୍ଠାନର କାର୍ଯ୍ୟକାରୀ ସମ୍ପାଦକ ଭାବରେ ମୋ ଉପରେ ଦାୟିତ୍ବ ଥିଲା – କବିଙ୍କୁ ତାଙ୍କ ବାସଗୃହ ବର୍ଷା ନିକୟମରୁ ସାଦରେ ପାଛୋଟି ନେବା ପାଇଁ । ସଭାକାର୍ଯ୍ୟର ଆୟୋଜନ କରାଯାଇଥାଏ ମାହାଜୀଙ୍କ ପଞ୍ଚାୟତ ହାଇସ୍କୁଲ, ମଣିଜୋରୀ ଠାରେ । ସଭାମଞ୍ଚରେ ଆଧାନ୍ତି ଡ଼କାଳୀନ ମନ୍ତ୍ରୀ ସେବ୍ ମତକୁଡ଼ ଅଲ୍ଲି, ଶିଶୁ ସାହିତ୍ୟିକ ଡକ୍ଟର ମହେଶ୍ବର ମହାନ୍ତି, ଗୀତିକାର କ୍ଷୀରୋଦ ଚନ୍ଦ୍ର ପୋଥାଳ, ରସରାଜ ଡକ୍ଟର କୁଳମଣି ମହାପାତ୍ର, ଶିକ୍ଷାବିତ୍ ରବୀନ୍ଦ୍ର କୁମାର ସାହୁ ଏବଂ ସମାଜସେବୀ ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବଳରାମ ସାହୁ । ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ସଭାର ଅୟମାରମ୍ଭରେ ମୁଁ ମାନପତ୍ର ପାଠକଲା ପରେ – ଶହ ଶହ ଫୁଲମାଳ ଲମ୍ବି ଯାଇଥିଲା କବିଙ୍କ ଗଳାରେ । ଦୂରରେ ଥାଇ ଦର୍ଶକ କହୁଥିଲେ ‘ନନ୍ଦବଳା ନନ୍ଦକିଶୋରଙ୍କର ଏହା କଣ ଫୁଲ ବେଶ ।’

ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନାର ପ୍ରତ୍ୟୁତ୍ତର ଦେଇ କବିଙ୍କ ଆଖିରୁ ସେଦିନ ଆନନ୍ଦର ଅଶ୍ରୁ ବହି ଯାଇଥିଲା । ସଭା ପରେ ମୁଁ ସସମ୍ମାନେ ତାଙ୍କୁ ପୁଣି ଘର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଛାଡ଼ିବାକୁ ଆସିଥିଲି । ବିଦାୟ ନେଲାବେଳେ ସେ ମୋ ମୁଣ୍ଡରେ ହାତମାରି ଆଶୀର୍ବାଦ ଦେଇଥିଲେ । ସେ ସେତେବେଳେ ଗାଇଥିଲେ – ‘ଫୁଲଟିଏ ମତେ କରିଦିଅ ପ୍ରଭୁ, ତୁମରି ଚରଣ ପାଇଁ ।’ ସେ କଥା ଆଜି ମୋର ମନେ ପଡ଼ିଲେ ଦୁଃଖର ଅଶ୍ରୁ ବହି ଯାଉଛି । □□□

ନବପ୍ରତିଭା ସାହିତ୍ୟ ସଂଗଠନ, ବାଲିଚନ୍ଦ୍ରପୁର

# **A PERSON WHO WOULD TOUCH ONCE HEART**

**Sanghamitra Jena**

My association with Shri Nanda Kishore Samal dates back to 1975 when I was a performing child artists of Doordarshan Kendra. It was for his poem "Ama Ghara" that our performance was selected as the best childrens' programme of the year at New Delhi. In fact his writings are so prolific, lucid and heart touching that we did not have to do much other than narrate these lines. Such is the impact of his writings. He is rightly a man of the soil, whose literature gives the smell of wet earth of a rainy evening, the swaying of coconut trees, of a hot, boozy afternoon and sometimes tries of hunger of a small child in the wet hours of the morning.....

Strange are the ways of destiny. I had the chance to meet the great poet in person in December-89 just after my marriage to Dr. Basant Kishore Jena who introduced him as his teacher. I was exuberant because I relived my child hood memory and was delighted to see the poet right in front of me. I was shown other aspect of his personality that of a sincere teacher and a very very simple hearted man.

Indeed, Sir was a person who would touch once heart by going a smile and showing how much he cared. In these modern stressssful times it is difficult to get a genuine, heartwarming, dedicated and sincere person like him. The thoughts were much ahead of his times. He was very progressive and realistic. I considir myself extremely lucky to have been associated with him. Such great man do not die. They live in us, amongst us and within us through their thoughts, ideas and influence the generation to flow.



Lecture in Sociology,

R.D. Women's College, BBSR

# THE PIED PIER OF ORISSA

Jachindra Rout

Aei ti Amara Fula Bagicha  
Tale Padichhi Ki Ghasa Galicha  
Udi Udi Ase parajapati  
Taraka ati, Aet ti bule

Fulare Jhule, Kalasi Ani/Fula Gachha mule diea mun pani

Standing at the door jam of this years old creation, one can look deep in to the entire literary activities of Nanda Kishore Samal.

Mr. Samal is like a diamond in darkness and with a ray of light, it dazzles and picks the eyes. It is how we see and understand his knowledge of flash of flash of light in our mind of darkness. It is very different indeed. After all, a diamond is a diamond forever. Writing poetry is a way of life to some or a pleasant occasional past time to others. But the habit of poetry has something, in common with the habit of prayer to Mr. samal.

Mr. Samal's poems may be seen in a contemporary light as poems that use language and rhythm freshly and with inspiration. He plays with his readers with words, ideas, thoughts and emotions. In one of his poems he tells

Neje, Sutura Rakhibi Nijaku/Nija Bichhana, Soiba Sejaku  
Khara, Padu Padunu Uthibi/Teke, Badibagichare Khatibi (Ghara)

All the collections are characterized by a powerful tension between placement and dislocation presence and humanity. The sharp line of his poems have a richness of economy making each word tell, and the exactness with which the measures both the instant and its echo is enhanced by a fine structural sense with excessive poems taking up the themes from the one before. His vision encompasses the traditional and the contemporary with equal precision.

Many of the poems allude to Child's thought, the future luck, education and thought, and are clearly the work of a writer who is highly adept at listening and looking. We can sense the keen observations of the poet in one of his poems :

Aei Ghara Tire Janama mora  
Ghara Nuhen Eia Saraga Pura

Aei Ghare Amme Akathi Thaua

Akathi Khauu/Akathi Hasu

Budhi Ma Pase/Gapa Sunu sunu nida Ti ase

Here is poet who philosophizes about life, love, culture and society, the theme which occupy his world are the natures of truth, love the instances of experience and their possible relation to some their more, such as in the poem :

Aei Ghare Ma Pariba Kate/Besara Bate, Jaie Ragade

Saga Kharade/Gadhai pitha

Arisha Kakara Ah! Kimitha

Nanda Kishore Samal commonly calls up a picture of the grand old man who had the Magnificent presence of a heroic band the uniquely famous poet laureate who had become a National Institution, the uncrowned king of Orissa and children's literature.

The mixture of high sprit and philosophizing all his literary creations might suggest only a serious and bookish adolescence.

Mr. Samal's preoccupation with niceties of art and accuracy of description was perhaps one way of escape from the inward and outward conflicts and frustrations that tormented him, in a world of dissolving belief and values, universe of overwhelming vastness art and nature were at least solid sure.

Mr. Samal was much more than a polished mirror of his age and time he was in the main a great artist, very often a great poet. It is not easy to catalogue his deficiencies, but it wiser to enjoy to the many things he did superbly. Beneath the beautiful surface there are revelations of the dark abyss in which the poet's deepest self lived.

Totare mun sukhila patara/Sukhi sukhi salita heleni

Mote tume gotei nia re/Mun Hebi Badhia Jaleni

He looks at the world from an impressive variety of angles, making the most of his alert intelligence, his instinct for the quirky and his detection of the phony. There is restlessness about his works, refusal to take things down which sometimes comes to the surface. His poems show their humanity as the sub lime ethical and spiritual act that is manifested through the qualities such as love, loyalty, peace, honesty, goodness, truth, beauty, innocence, purity, respect, compassion, universal brotherhoodness and friendship among people.

Mr. Samal is a poet of reforms and self-cultivation. In all his

poems, that he has composed for children, he wants to cultivate the nobleness of heart, pure reason, power and self readiness to upliftment of mankind, mastery over mind and passions, selfishness and purposeful living, certain negative forces within 'the self' which leads to its gradual disintegration are to be guarded against, he is cursing others, acting sinfully, blaming others for one's problems created by the inflated ego and betting malice, craze for blurring and giving opinions without caring to listen to others with patience, tension or depression, remorse or ingratitude, immunity to erring suspicion, hatred worst enemy of human being which lead to complete disintegration of the individual and hence to be warded off deliberately.

Optimistic and humane vision of life is the key theme obsession of Nanda Samal's poetry. He sings highly and magnificently about men, life and nature, which are god's creations. He finds the essence of life and the world in the natural phenomenon, which possesses hearts given by god. Those hearts emit magnificently positive energy towards the human process. Also through the poetic organism the vibrations of the hearts are dominating, as the gift of god.

I find it difficult to write a short note, I find it more difficult not to write about the person who was a friend, philosopher and guide to my poetic sensibility. An uncommon visual, a strange meeting, a sparse conversation, a queer study room provoke me emotionally and I can't resist till release it through a brief note, whatever its worth.



Sahaspur College, Balichandrapur, Jajpur

With Best Compliments From :

*Srikanta Majhi*

At/Po - Kusupur, Cuttack-754285

**OFFICE ADDRESS :**

**C/o - Late Bijay Patnaik**

Infront of Nodal School, Tulasipur, Cuttack.

*With Best Compliments from :*

# **M/S. S. KUMAR HANDLING AGENCY**

**STATION ROAD, BARBIL  
KEONJHAR - 758 035**

*With Best Compliments from :*



**Mr. Sanjaya Kumar Nayak**  
Agent

**The Oriental Insurance Co. Ltd.**

**Chandikhol Chhaka,  
Sunguda, Jajpur**

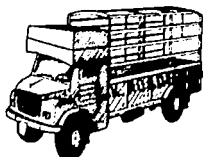
Ph : (06725)221192(Shop), 220166(R)  
Mob : 9437030166



*With Best Compliments from :*

☎ : 9437092854

95-6853-225522



## **S. K. ROADLINES**

**SEMILIGUDA, KORAPUT**

**Prop : *Sri Susanta Kumar Sahoo***

**(TRANSPORT CONTRACTOR  
AND  
GOVT. STORAGE AGENCY)**

*With Best Compliments from :*

## **M/s. Santosh General Store**

**Prop : *Mr. Santosh Kumar Mallick***

**Municipality Market Building  
Bus-stand, Dhenkanal**

**Mob : 9861086410**

ଖୁବ୍ ଶୀଘ୍ର ପ୍ରକାଶ ପାଉଛି  
ସମ୍ବାରଧର୍ମୀ ସାପ୍ତାହିକ ପତ୍ରିକା

## ସୁଜାତା

ଏଥିରେ ସ୍ଥାନ ପାଇବ

ଦେଶ, ବିଦେଶ, ସ୍ବାସ୍ଥ୍ୟ, ଧର୍ମ, ସଂସ୍କୃତି, ପର୍ଯ୍ୟଟନ, ସାହିତ,  
କ୍ରୀଡ଼ା, ଶିଶୁ ଓ ମହିଳା, ସାମ୍ପ୍ରତିକ ଘଟଣାବଳୀ, ଅପରାଧ,  
ଆଇନ ଅଦାଲତ, ଯାତ୍ରା, ସିନେମା ଓ ମନୋରଞ୍ଜନ  
ସମ୍ପର୍କରେ ଉନ୍ନତ ମାନର ଲେଖା

ଲେଖକ/ଲେଖିକା ଓ ସାମ୍ବାଦିକ ତଥା ଏଜେଣ୍ଡମାନେ ନିମ୍ନ  
ଠିକଣାରେ ଯୋଗାଯୋଗ କରିବାକୁ ଅନୁରୋଧ

### ସୁଜାତା ପତ୍ରିକାଲେଖନ

୨-ସି/୨୦୭ ସେକ୍ଟର-୯, ମାର୍କେଟ ନଗର

ସି.ଡି.ଏ., କଟକ-୧୪

ଫୋନ୍-୦୬୭୧-୨୭୦୭୭୭୪

ମୋବାଇଲ୍ - ୯୩୩୭୫୧୦୫୩୯

*With Best Compliments from :*

**M/s. Arvind Collections**  
**Prop.- Mr. Nilaya Kumar Parida**

**Buxi Bazar, Cuttack-751 001**



*Deals with :*

**Jeans, Shirts, T-shirts & Trousers.**



*With Best Compliments from :*

**Mr. Narayan Bar**

**Advocate**

**C/o Mr. Khageswar Baliarsingh**

**GOUDHI MARKET, BARIPADA**  
**MAYURBHANJ-757 001**

**Ph: 06792-258105(R)**

*With Best Compliments from :*



**Mr. M. S. Baig**, Branch Manager

**The Oriental Insurance Co. Ltd.**

Branch Office

**Jublee Library Road, Lal Bazar, Baripada**

Ph: (06792) 252546(O), 262558(R)

Mob: 9437264412

---

*With Best Compliments from :*



**Girish Chandra Das**,

Development Officer

**The Oriental Insurance Co. Ltd.**

Branch Office

Jublee Library Road, Lal Bazar, Baripada

Ph: (06792) 253265(R), Mob: 9437218621

---

*With Best Compliments from :*



**Mr. Soumya Kar Mohapatra**

Development Officer

**The Oriental Insurance Co. Ltd.**

Branch Office

**Jublee Library Road, Lal Bazar, Baripada**

Ph: (06792) 254184(R), Mob: 9437145739

---

*With Best Compliments from :*



**Mr. Mathuram Hansdah**

Development Officer

**The Oriental Insurance Co. Ltd.**

Branch Office

**Jublee Library Road, Lal Bazar, Baripada**

Ph: (06792) 260445(R), Mob: 9437145595

*With Best Compliments from :*

## **Dipak Kumar Das**

(Surreyor/Loss Assessor & Valuer)

Licence No- SLA-49556/2004-09

Ph: (06792)262272(R)

Mob-9437084842

**Off. Address:**

Sashtri Market

K.M.B.M. Road

Baripada-757 001

**Res. Add :**

Prafulla Nagar, Ward No-12

Convent Area, Baripada,

Mayurbhanj-767 001

*With Best Compliments from :*

## **Mr. Naresh Chandra Sahoo**

(Surveyor & Loss Assessor)

Ph : (06792) 252718

Mob : 9437084782

**CHAPAL POKHARIADI, BARIPADA**

Mayurbhanj-757 001

*With Best Compliments from :*

## **M/S. GUINEA HOUSE JEWELLERS**



Lal Bazar, Baripada  
Mayurbhanj-757 001  
Ph: (06792)252514



*With Best Compliments from :*

## **M/S. ALANKAR JEWELLERS**



Jublee Library Road  
Lal Bazar, Baripada  
Mayurbhanj -757 001

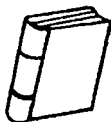


*With Best Compliments from :*

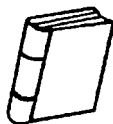
## **M/S STUDY COMPLEX**

**Prop- Mr. Binod Kumar Das**

**Opposite M.K.C. High School  
Baripada, Mayurbhanj-757 001**



**Deals in**

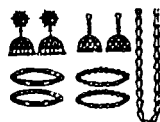


**Every Old & New Books of School, College,  
CBSE, HSC, Medical, ITI and Law Books**

*With Best Compliments from :*

## **M/S K. C. DAS JEWELLERS**

Near M.K.C. High School Chhaka  
**Lal Bazar, Baripada, Mayurbhanj-757 001**  
Mob : 9437035075



*Deals in :*

22 ct. Gold, KDM, Gold & Pure Chandi  
Ornaments and order supplier.

*With Best Compliments from :*



## **M/S. CHANDI HOUE**

**Prop- Nepal Chandra Das**

**Lal Bazar, Baripada, Mayurbhanj - 757 001**  
Ph: (06792)254253, M-9338811418

*Deals in:*

Pure Chandi & Gold Ornaments.

*With Best Compliments from :*

**Er. Suvendu Sekhar Jena**

(Surveyor & Loss Assessor)

Akatpur, Chandipur Road,

Sunhat, Balasore

Ph : (06782)250076

*With Best Compliments from :*

**Er. Manas Ranjan Rout**

(Surveor & Loss Assessor)

**Angargadia**

**Kalyani Nagar, Balasore**

Ph : (06782) 268027

Mob: 9437174221



**G. N. Bar**

Branch Manager

**The Oriental Insurance Co. Ltd.**

Branch Office

**Kashipur, Jagannathpur**

**Keonjargarh, Keonjhar-758001**



**Mr. Gouranga Charan Sahoo**

Development Officer

**The Oriental Insurance Co. Ltd.**

Branch Office

**Kashipur, Jagannathpur**

**Keonjargarh, Keonjhar-758001**



Ph:(06766)251261(O), 255546(O), Mob: 9437105940

*With Best Compliments from :*

**Er. Debadutta Mohapatra**

(Surveyor & Loss Assessor)

Nuasahi(In front of Kali Mandir)

**Naya Bazar, Cuttack-753 004**

Ph: (0671) 2344102

Mob:9437014102

*With Best Compliments from :*

## **Er. Swayambhu Mohanty**

(Surveyor & Loss Assessor)

**Cuttack Address :**

C/o Late K. C. Mohanty  
Kanhu Mohanty Lane  
Rajabagacha  
Cuttack  
Ph: (0671) 2612856  
Mob: 9437012856

**BBSR Address :**

Plot No.-105  
Madhusudan Nagar  
Unit-4  
Bhubaneswar  
Ph: (0674)2401161

*With Best Compliments from :*

## **Paresh Chandra Kar**

**Advocate**

**Sashtri Nagar, Nayabazar**

**Cuttack-753 004**

Ph: (0671) 2303609

Mob: 9437003609

*With Best Compliments from :*

**M/S LIFE LINE CLINIC & NURSING HOME**

Prop: Dr. Basanta Kishore Jena, Gynic  
Plot No- N-5/121  
Jayadev Vihar, Bhubaneswar

Ph : 2551997(R)  
2552997(Clinic)

Mob: 9437023997

*With Best Compliments from :*

***Er. Arun Udayeswar Das***

(Surveyor & Loss Assessor)

**Behind SangamTalkies  
Mahatab Road  
Cuttack - 753 001**

Ph: (0671)2311566(R)  
Mob : 9437095662

*With Best Compliments from :*

**M/S JAGANNATH CARGO CARRIER  
&  
M/S JAGANNATH STONE CRUSHER**

Prop: Mr. Umesh Chandra Sahoo

**PATARAJPUR, BALICHANDRAPUR,  
JAJPUR-754 205**

Ph : (0671)2370518

Mob : 9937310817, 9437179004

*With Best Compliments from :*

***Er. D. K. Bhanja Deo***

(Surveyor & Loss Assessor)

**M-131, Barmunda Housing Board Colony  
Bhubaneswar**

Ph: (0674)2555620

Mob : 9437189670

*With Best Compliments from :*

**Mr. AJIT NANDA**

(Surveyor & Loss Assessor)

**Dash Bhawan, Nandi Sahi,  
Choudhury Bazar, Cuttack-753 001**

Ph : (0671)2628396

Mob : 943729060

email : ajit\_nanda@yahoo.co.in

*With Best Compliments from :*



**Mr. Shyam Sundar Mohapatra**

Branch Manager

**The Oriental Insurance Co. Ltd.**

**Main Road, Jajpur Road, Jajpur-755 019**

Ph: (06726)220586(O)

**Mr. B. C. Behera, A.A.O.(D)**

**Mr. S.N. Jena, A.A.O.**

Mob : 9437229004

*With Best Compliments from :*

**M/s AISWARYA CONSTRUCTIONS**

*Prop : Santanu Kumar Sahoo*

**N-3/121, IRC Village,  
Bhubaneswar**



Ph: (0674) 2552650

Mob : 9437093691

*With Best Compliments from :*

**ER. SANTOSH KUMAR DASH**

(Surveyor & Loss Assessor)

Plot No. - 1124C, Section-6

**C.D.A. Markat Nagar  
Bidanasi, Cuttack-14**

Ph : (0671)2365030

Mob : 9437068248

*With Best Compliments from :*

**Er. Alok Kumar Mallick**

(Surveyor & Loss Assessor)

Licence No.- 69565

Expiry Date : 28.6.2009

**Nirayan Nivas**

**Behind N.I.A. Co. Ltd., D.O.I. Building**

**Badambadi, Cuttack-12**

Ph : (0671) 2324460

Mob : 9437040658

*With Best Compliments from :*

**Er. Saroj Kumar Panda**

(Surveyor & Loss Assessor)

**PABANI, U.P. School Road,**

**Badambadi, Cuttack-12**

Ph : (0671) 2323553

Mob : 9437023553

*With Best Compliments from :*

**Er. Sangram Keshari Mishra**

(Surveyor & Loss Assessor)

**C/o Muktikanta Mishra  
Malha Sahi, Jobra, Cuttack**

Ph : (0671) 2649683

Mob : 9437049683

*With Best Compliments from :*

**Er. Bikram Keshari Patnaik**

(Surveyor & Loss Assessor)

**Madhusudan Nagar  
Tulasipur, Cuttack-753 008**

Ph : (0671) 2300604(R)

2300662(O)

Mob : 9437000604



*With Best Compliments from :*

**Er.Satyajit Ranjan Das**

(Surveyor & Loss Assessor)

C/o Sujit Ranjan Das

**Rajabagicha, Cuttack-753 009**

Ph : (0671) 2631815

Mob : 9437025209

*With Best Compliments from :*

**Mr. Manoranjan Das**

Life Insurance Corporation of India

C.B.O. III, Gandarpur, Cuttack-753 003



Res. Address :

**Plot No- E/293**

**Sector-7, C.D.A., Bidanasi, Cuttack-14**

Vill Address :

**Mulubasanta, Kuanpal, Cuttack**

Ph : (0671)2441323(O), 2440897(O) 2605388(R)

Mob : 9437025388

*With Best Compliments from :*



**Mr. Subrat Kumar Mishra**

Development Officer

Life Insurance Corporation of India  
C.B.O. III, Gandarpur, Cuttack-753 003

Ph : (0671) 2441323(O),  
2440897(O)

*With Best Compliments from :*



**M/S SINGH CONSULTANCY**

(Tax, Insurance & Finance Consultancy)

Prop : Amarendra Singh

Opposite State Bank of India  
Balichandrapur, Jajpur - 754 205

Ph: (0671) 2768842

Mob: 9437068842

*With Best Compliments from :*

**Dr. G. N. Samal, Sr. D.M.**



**The Oriental Insurance Co. Ltd**  
**Divisional Office, Bajrakabati Road**

**Infront of Popular Nursing Home.**

**Cuttack - 753001**

**Ph -0671-2415159 (O), 2425417 (O), 2415287**

**Fax : 2423471, Mob - 9437170988**

*With Best Compliments from :*

**Ph - (0671) 2301009 (O)**

**2304053 (O), 2301557 (R)**

**Mobile : 9437177121**



**Mr. Chaitan Rout**

**Sr. Branch Manager**

**The Oriental Insurance Co. Ltd.**

**City Branch Office - I**

**Mission Road - Cuttack - 753001**

*With Best Compliments from :*

**Ph - (0671) 2311676 (O),**

**2327969 (O), 2603592 (R)**

**Mobile : 9437322917**



**Mr. Sahadeu Sahoo**

**Branch Manager**

**The Oriental Insurance Co. Ltd.**

**City Branch Office - II**

**Subham Building**

**Link Raod - Cuttack - 753 012**

*With Best Compliments from :*

## **M/S BABA TRANSPORTING CONTRACTOR**

**WEIGH BRIDGE ROAD, BARBIL  
KEONJHAR - 758 035**

**Phone : (06767) 276785/272563 (R)  
Mobile : 9437130864/9437130816**

*With Best Compliments from :*

## **M/S. GITARANI MOHANTY**

**Prop. : *Mr. Srinivas Sahoo***

**SRIMANDIR SQUARE,  
BARBIL, KEONJHAR - 758 035**

**Phone : (06767) 275896 & 275795 (O)**

## Hello Parents !

A Professional Course for  
your child ?

You care for the admission...

**Urban Vidyarthi Vikash**  
takes care of the money

## One More Step...

in Pursuit of Seva & Vikash.

**Urban Sikshayatan**

**Nivesh** Promises  
wholesome growth of  
Educational Institutions.



Let us smile together

Courtesy :

**THE URBAN COOPERATIVE BANK LTD.  
CUTTACK**

For more details dial Mr. A. Swain, Manager (Loans & Adv.)  
94373-17514

## Sri S. N. Mohanty କ

ଆର୍ଥିକ ସହାୟତାରେ

ନନ୍ଦକିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର, କୁସୁପୁର ପରିସରରେ

ନିର୍ମିତ ହୋଇଥିବା ନୂତନ ଗୃହର

ଶୁଭ ଉଦ୍ଘାଟନ ଖୁବ୍ ଶୀଘ୍ର ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେବ ।

ଏହି ଉତ୍ସବରେ ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିରର

ସମସ୍ତ ପୁରାତନ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀ ଯୋଗଦେବା ପାଇଁ ଅନୁରୋଧ

ପୁରାତନ ଛାତ୍ର ସଂସଦ

ସୁବର୍ଣ୍ଣ ଜୟନ୍ତୀ ଉତ୍ସବ କମିଟି

ନନ୍ଦକିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର, କୁସୁପୁର

# ପୁରାତନ ଛାତ୍ର ସଂସଦ

ନନ୍ଦକିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର, କୁସୁପୁର

ସୁବର୍ଣ୍ଣ ଜୟନ୍ତୀ ଉତ୍ସବ

**Silver Jubilee Celebration**

ଯେଉଁ ଅନୁଷ୍ଠାନରେ ଶିକ୍ଷାଲାଭ କରି ଆଜି ଅନେକ ଆଦର୍ଶ ମଣିଷ, ସୁନାଗରିକ ତଥା ସମାଜରେ ଜଣେ ବୋଲି ପରିଚିତ ହୋଇଛନ୍ତି-ସେହି ଅନୁଷ୍ଠାନ ପ୍ରତି ଆମର ନିଶ୍ଚୟ କିଛି ନାହିଁ କିଛି ଉତ୍ତର ଦାୟିତ୍ବ ଓ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ରହିଛି । ଏ କଥା କହିବାର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ହେଲା - ନନ୍ଦକିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିର ଅନେକ ଦିନରୁ ୫୦ ବର୍ଷ ପୂରଣ କରି ସାରିଥିଲେ ହେଁ, ତା'ର ସୁବର୍ଣ୍ଣ ଜୟନ୍ତୀ ଉତ୍ସବ ଏ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ପାଳିତ ହୋଇନାହିଁ ।

କାରଣ ପରିବର୍ତ୍ତିତ ପରିସ୍ଥିତିରେ ସମସ୍ତେ ଜୀବନ ଓ ଜୀବିକାକୁ ନେଇବ୍ୟସ୍ତ ରହି ସେ କଥା ଭୁଲି ଯାଇଛନ୍ତି । ଏବେ ଆଉ ସେ କଥା ଚିନ୍ତା ନକରି ଆସନ୍ତା ୨୦୦୫ ମସିହା ଡିସେମ୍ବର ମାସରେ ନନ୍ଦକିଶୋର ବିଦ୍ୟାମନ୍ଦିରର ସୁବର୍ଣ୍ଣ ଜୟନ୍ତୀ ଉତ୍ସବ **Silver Jubilee** ପାଳନ କରିବା ପାଇଁ କେତେଜଣ ଆଗ୍ରହୀ ଓ ଉତ୍ସାହୀ ବ୍ୟୁତ୍ପ୍ରସ୍ତାବ ପ୍ରଦାନ କରିଛନ୍ତି । ଏଥିପାଇଁ ୧୦ ବର୍ଷର (୧୯୭୮ରୁ ୧୯୭୭) ବ୍ୟାଚର ପ୍ରତିନିଧି ମନୋନୀତ କରାଯାଇ ଆସନ୍ତା ମଇ ୧୯ ତାରିଖରେ ଏଥିପାଇଁ ସ୍କୁଲ ପରିସରରେ ଏକ ବୈଠକ ଡକାଯାଇଛି । ଅନ୍ୟ ବ୍ୟାଚର ପ୍ରତିନିଧିମାନେ ମଧ୍ୟ ଏଥିରେ ଯୋଗ ଦେବାକୁ ଅନୁରୋଧ । ଏହି ଉତ୍ସବକୁ ସବୁ ଦିଗରୁ ସଫଳ କରିବା ପାଇଁ ସମସ୍ତଙ୍କର ସହଯୋଗ ଆମର ଏକାନ୍ତ କାମ୍ୟ ।

ଏହି ଉତ୍ସବ ପରିପ୍ରେକ୍ଷୀରେ ଏକ ସ୍ମରଣିକା ପ୍ରକାଶ କରିବାର ଯୋଜନା କରାଯାଇଛି । ଏଥିପାଇଁ ଆଗ୍ରହୀ ବ୍ୟୁତ୍ପ୍ରମାନେ ସେମାନଙ୍କର ସୁମଧୁର ସ୍ମୃତି ଲେଖି ପଠାଇବାକୁ ଅନୁରୋଧ ।

**ଆବାହକ : ପୁରାତନ ଛାତ୍ର ସଂସଦ**

**ଯୋଗାଯୋଗ : ଶ୍ରୀଯୁକ୍ତ ବଳରାମ ସାହୁ**

ଗୁଣ୍ଡପୁର, କଟକ, ଫୋନ୍ - (୦୬୭୧)୨୭୭୮୮୦୯

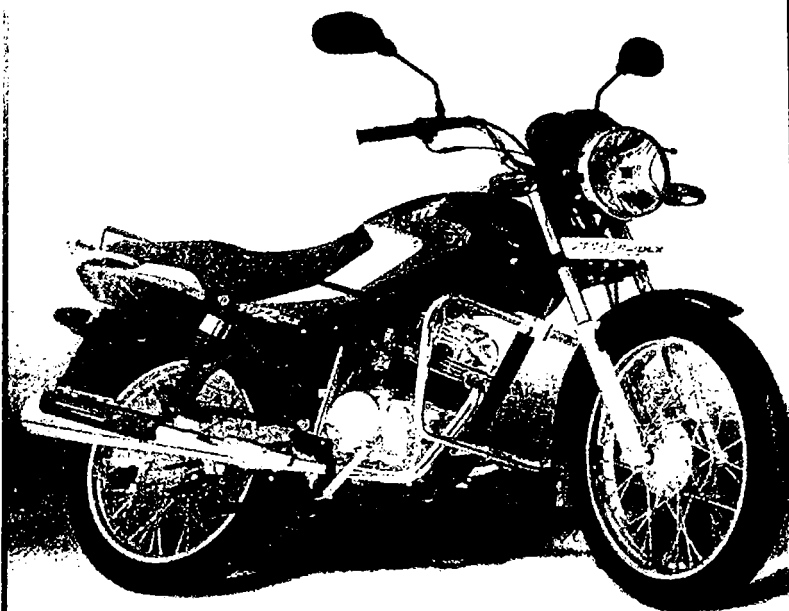
*With Best Compliments From*



# SUSIL TVS

Link Road, Cuttack

Ph (0671) 2324025, 2324027



**THE NEW TVS STAR. THE TOUGH ONE.**

*With Best Compliments From :*



**M/s S. N. MOHANTY**

**STATION ROAD, BARBIL,  
KEONJHAR - 758 035**

**Ph : (0671) 275362 (O)  
275254, 275196 (R)**

*Printed at Purnima Offset Printers, Semiiguda, Koraput, Ph - (06853) 225860*  
**On behalf of Nandakishore Samal Smruti Nyasa, Kusupur, Cuttack**